उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छ.ग.)

दृष्टि

अंकः 54 वाँ

सत्र - 2019-20

सम्पादक मंडल

- संरक्षक
  डॉ. निशी भाम्बरी
  प्राचार्य
- सम्पादक
  श्रीमती नलिनी पाण्डेय
- सह सम्पादक
  डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी
  डॉ. बी. व्ही. रमणाराव
  डॉ. ए. के. पोद्दार
- सहयोग
  अर्चना जाधव (M.Ed. चतुर्थ सेमेस्टर)
  मोहिन्दर सिंह वर्मा (M.Ed. चतुर्थ सेमेस्टर)

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
01	शुभकामना संदेश		6-11
02	सर्टिफिकेट	नैक	12
03	बी. एड. प्रतिवेदन	श्रीमती नलिनी पाण्डेय	13-15
04	एम. एड. प्रतिवेदन	डॉ. क्षमा त्रिपाठी	16-25
05	केन्द्र प्रवर्तित योजनांतर्गत संबंधित शोध कार्य		26
06	कोषालय की क्रियाविधि की कार्यशाला का आयोजन	एम. एड. तृतीय सेमेस्टर एम. एड. तृतीय सेमेस्टर वित्तीय प्रबंधन	27-28
07	शिक्षण अधिगम सामग्री	एस. उषामणी	28
08	प्रतिवेदन ग्रंथालय	प्रमोद दत्त शुक्ला, आशा बनाफर	29-30
09	प्रतिवेदन आर्ट एंड क्राफ्ट	आशा बनाफर, प्रमोद दत्त शुक्ला	30-31
10	खेलकूद प्रतिवेदन	सैय्यद किफायत उल्लाह	31
11	सामुदायिक कार्य	श्रीमती नलिनी पाण्डेय	32-33
12	Rain Water Harvesting	डॉ. उषामणी	33
13	सांस्कृतिक विभाग प्रतिवेदन 2019-20	डॉ. अरुण कुमार पोद्दार	34
14	प्लेसमेंट कार्यक्रम	डॉ. रजनी यादव	34
15	छात्रवृत्ति विभाग प्रतिवेदन	डॉ. रजनी यादव	35
16	प्रतिवेदन	डॉ. अजिता मिश्रा	35
17	क्षमता विकास कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का विवरण	श्रीमती नीला चौधरी	36
18	विज्ञान विभाग प्रतिवेदन	श्रीमती प्रीति तिवारी	37-39
19	13 quotes to Inspire you to be Successful	C.L. Barman,B.Ed. II year	39
20	46वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान,गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2019 प्रतिवेदन	श्रीकांत साहू, अंशु प्रवीण सोनी, श्रीमती धरमी इमालिया बी. एड.	40-41

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
21	बधाई		41
22	कितने जुड़े कितने बिखरे	आकांक्षा जायसवाल	42
23	शैक्षणिक भ्रमण	कृष्णानंद चौबे, अनुभा साहू, बी. एड. द्वितीय वर्ष	43–45
24	कल को भूल आज की सोचें	छोटेलाल बर्मन बी. एड. द्वितीय वर्ष	45
25	प्रेरक कहानी	मोहिन्दर सिंह वर्मा	46
26	जीवन विद्या	डॉ. उल्हास व्ही वारे	47
27	संदेश	श्रीमती रेशमा बेक, बी. एड. द्वितीय वर्ष श्रीमती आभा कुमारी, बी. एड. द्वितीय वर्ष	48
28	कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध रचना गीतांजलि की कविताएँ (1) चीन्हे–अनचीन्हें (2) शेष	 क्रूस छाया टोप्पो बी. एड. द्वितीय वर्ष	49
29	गिरता मानव मूल्य	अनारकली भास्कर, एम.एड. प्रथम वर्ष	50–51
30	शिवाजी	कु. पायल विस्वास, एम.एड. द्वितीय वर्ष	52
31	संग्राम जिंदगी है	राजेश कुमार राजगीर बी.एड. द्वितीय वर्ष	53
32	परोपकार (चिंतन)	कल्पना श्रीवास बी. एड. प्रथम वर्ष	54
33	आप कैसे याद किया जाना पसंद करेंगे (संदेश)	श्रीमती मनीषा गौतम यादव बी. एड. द्वितीय वर्ष	54
34	हम शिक्षक हैं, ऐसा हमें करना होगा	श्रीमती ममता साहू, बी. एड. प्रथम वर्ष	55
35	माँ की उपमा	श्रीमती ममता साहू	55
36	प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका	श्रीमती रमाकांति साहू	56–57
37	मैं छत्तीसगढ़ के माटी अव	राजेश कुमार राजगीर बी. एड. प्रथम वर्ष	57

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
38	कोई ठिकाना नहीं	रेशम पटेल बी. एड. द्वितीय वर्ष	58
39	बेटियाँ	रुपाली सिदार, बी. एड. द्वितीय वर्ष	58
40	भारतीय संगीत के सात स्वर	प्रदीप कुमार कश्यप, बी.एड. द्वितीय वर्ष	58
41	A Father	आकांक्षा जायसवाल, बी.एड. प्रथम वर्ष	59
42	Maa	..........,,................	60
43	बारिश	प्रणव कुमार तिवारी	61
44	इंसानियत नाम मजहब होगा	दीपक सिंह	61
45	फिर आएंगे वो अच्छे दिन	प्रदीप कुमार उपाध्याय	61
46	तनाव व अवसाद से ग्रसित आज का युवा	डॉ. अजीता मिश्रा	62-63
47	हम भारत के स्वाभिमान ऋषि मुनि की संतान	शरद जायसवाल	63
48	जीवन में कभी हारना नहीं	डॉ. गीता जायसवाल	64
49	पहचान	श्रीमती प्रीति तिवारी	64
50	हमारी वास्तविक पहचान	नरेश कुमार कमलेश	65
51	कोरोना एक वैश्विक महामारी	निधि शर्मा	66
52	तनाव	निधि शर्मा	66
53	जीवन मूल्य- विवेक का आनंद	श्रीमती नीला चौधरी	67-68
54	शिक्षा की पाँचवी क्रांति?	डॉ. उल्हास व्ही वारे	69-70
55	सोशल मीडिया एजुकेशन	श्रीमती रमाकांति साहू	71-72
56	नारी को नारी ही रहने दो	श्रुति अग्रवाल	72
57	महिला सशक्तिकरण के अवरोध के रूप में परिवार एवं लिंगवाद	श्रीमती संध्या अग्रवाल	73-74
58	स्कूल आ पढ़े बर जिनगी ला गढ़े बर	अनारकली भास्कर	74
59	Covid-19 & Online classes	श्रीमती तरनजीत कौर	75-76
60	स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा का विकास, क्रियान्वयन एवं चुनौतियां	आकांक्षा अग्रहरि	77-78

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ्य वस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
61	सनातन धर्म भारतीय मूल्य व कोरोना महामारी	श्रीमती प्रीति तिवारी	79-81
62	बेटियाँ	श्रीमती रमाकांति साहू	81
63	नन्ही कली	श्वेता झा	82
64	डिजिटल साक्षरता	सूर्य प्रकाश	83-84
65	मन के हारे हार है मन के जीते जीत (मनोभाव)	श्रीमती विभा पैकरा	85
66	Moocs and Global Teacher	सूर्य प्रकाश सोनी	86-88
67	प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका	रमाकांति साहू	89-90
68	तू भी तो सशक्त है	शैलेन्द्री सिंह गौड़	90
69	मूर्ख बालक से महान् विद्वान कालिदास बनने तक का सफर	नरेश कुमार कमलेश	91-92
70	संविधान समीक्षा	डॉ. उल्हास व्ही. वारे	93-94
71	प्रधानमंत्री	विजय कौशिक	95-97
72	Achieving Goals	अर्चना जाधव	97
73	श्रद्धांजलि		98

अरुण साव
संसद सदस्य (लोक सभा)
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
सदस्य: कोयला एवं इस्पात संबंधी स्थायी समिति

सत्यमेव जयते

निवास – डुप्लेक्स नं. 38
आनंदजी पार्क, रिंग रोड नं. 2
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
मोबाइल: 9826484504
ई मेल: arunsaobjp@gmail.com

पत्रांक: 52 / सं. नि. / छ.ग. / 2020 दिनांक: 09.06.2020

:: संदेश ::

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर द्वारा परंपरानुसार इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका "दृष्टि" के 6वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

शास्त्रों में अशिक्षित मनुष्य को पशुतुल्य कहा गया है, क्योंकि उसमें सही निर्णय लेने का सामर्थ्य नहीं होता। शिक्षा व्यक्ति को मनुष्यता का बोध कराती है। शिक्षा का मूल अर्थ यही है कि वह व्यक्ति का उचित मार्गदर्शन करे। शिक्षा दान के इस पुनीत कार्य में जुटी उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर की पूरी टीम को कोटिशः बधाई।

मुझे बताया गया कि यह पत्रिका बी.एड. एवं एम.एड. के प्रशिक्षार्थियों की लेखन क्षमता को संवारने के लिए प्रकाशित की जाती है। महाविद्यालयीन पत्रिका "दृष्टि" छात्र-छात्राओं के लिए सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक अभिरुचि को व्यक्त करने का माध्यम बनेगी, ऐसी आशा है। पत्रिका प्रकाशन के लिए मेरी ओर से अग्रिम शुभकामनाएं.

(अरुण साव)

प्रति,

प्राचार्य
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

दिल्ली निवास: 178, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली-110001

शैलेष पाण्डेय
विधायक - बिलासपुर

कार्यालय -
H.N.-L 2/4, विधायक कालोनी, बिलासपुर (छ.ग.)
दूरभाष क्र.- 07752-250001
मो.: 07898184986
ई-मेल: bilaspurmla@gmail.com

क्रमांक 485/20 दिनांक 02/06/2020

::::शुभकामना संदेश::::

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आपके महाविद्यालय में दृष्टि पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका निश्चित बी.एड. व एम.एड. प्रशिक्षार्थियों के लेखन क्षमता को सवारने का कार्य करेगी। पत्रिका दृष्टि के 54वाँ संस्करण के प्रकाशन और सफलता के लिये महाविद्यालय परिवार और समस्त शिक्षार्थियों को मेरी ओर से ढेर सारी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(शैलेष पाण्डेय)

गढ़बो नवा छत्तीसगढ़

रामशरण यादव
महापौर
नगर पालिक निगम
बिलासपुर (छ.ग.)

अ.शा.पत्र क्रमांक/निगम सचिव/...07
बिलासपुर, दिनांक ...12/06/2020
कार्यालय नगर पालिक निगम, बिलासपुर
फोन : 07752-224214 (कार्या.)
07752-224414 (निवास)
मोबा. : 94252-19126

संदेश

यह अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर (छ.ग.) के द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका " दृष्टि " के 54 वें संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है ,जो सराहनीय है । यह पत्रिका शिक्षा के उत्थान, संवर्धन व विकास में मील का पत्थर साबित होगा ।

बी.एड. व एम.एड. के प्रशिक्षणार्थियों के लेखन क्षमता को संवारने, संवर्धन हेतु यह प्रयास अतुलनीय है व विद्यालयों में अपेक्षाकृत शिक्षा की गुणवत्ता हेतु बहुउपयोगी होगा ।

पत्रिका प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित ।

RS Yadav

(रामशरण यादव)

प्रति,

प्राचार्य,
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान,
बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. सारांश मित्तर
(आई.ए.एस.)

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाष : (07752) 223344 (कार्या.)
223222 (निवास)
फेक्स : (07752) 227060, 223532 (कार्या.)
वेब साईट : www.bilaspur.gov.in
ई मेल : bilaspur.cg.@nic.in

कार्यालय कलेक्टर, बिलासपुर (छ.ग.)

अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक ....

दिनांक 09.06.2020

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर अपनी महाविद्यालयीन पत्रिका "दृष्टि" के 54 वें संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। मैं इस महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों तथा अध्यापकों द्वारा किये जा रहे इस प्रयास की सराहना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि पत्रिका में चारित्रिक एवं नैतिक विकास के लिए उच्च स्तर की उत्साहवर्धक साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित होंगी और प्रशिक्षणार्थियों में लेखन की प्रतिभा उभर कर सामने आयेगी।

पत्रिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. सारांश मित्तर)

प्रति,

प्राचार्य,
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान,
बिलासपुर।

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ

प्रभाकर पाण्डेय
आयुक्त (रा.प्र.से.)

अ.शा. पत्र क्रमांक /सा.प्र./15
बिलासपुर, दिनांक 12/06/2020
कार्यालय, नगर पालिक निगम बिलासपुर
नेहरू चौक, विकास भवन, बिलासपुर (छ.ग.)
दूरभाष क्र. - 07752-222642 (कार्या.)
निवास : 07752-413888
E-mail : commissionermcbilaspur@gmail.com

—: संदेश :—

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर (छ.ग.) द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "दृष्टि" का 54वें संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि "दृष्टि" पत्रिका के प्रकाशन से आपका संस्थान नई ऊंचाईयों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करेगा।

पत्रिका के 54 वें संस्करण का प्रकाशन के लिए मेरी ओर से बहुत–बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रभाकर पाण्डेय)

प्रति,
प्राचार्य,
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान,
बिलासपुर (छ.ग.)

State Council of Educational
Research & Training, Chhattisgarh
Shankar Nagar, Raipur

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़,
शंकर नगर, रायपुर

Telephone-0771-2443596 Fax-0771-2443496 Website: www.scert.cg.gov.in Email: scertcg@gmail.com

// शुभकामना संदेश //

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर छत्तीसगढ़, महाविद्यालयीन पत्रिका **'दृष्टि'** के 54वें संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका बी.एड. व एम.एड. के प्रशिक्षार्थियों के प्रतिभा को निखारने व उनकी साहित्य सृजन की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने तथा शैक्षिक गतिविधियों में उन्नतम मानकों को बनाए रखने के लिए नवाचार प्रयासों की उपादेयता सिद्ध होगी।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रशिक्षार्थियों के विभिन्न उपलब्धियों को व्यक्त करने के लिए एक प्रभावी मंच प्रदान करेगी। इसका प्रभाव उन विद्यालयों के शिक्षकों और विद्यार्थियों पर पड़ेगा, जहाँ ये प्रशिक्षार्थी भविष्य में अध्यापन कार्य करेंगे। साथ ही पत्रिका का सतत् प्रकाशन शैक्षिक नवाचारों को संवर्धित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पत्रिका के सफल और सार्थक प्रकाशन हेतु मेरी असीम शुभकामनाएँ..

(डी. राहुल वेंकट)
भा.प्र.से.
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.,छ.ग.,रायपुर

प्रति,

प्राचार्य
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान (आई.ए.एस.ई.)
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Institute of Advanced Studies in Education (IASE)
Bilaspur, affiliated to Bilaspur Vishwavidyalaya, Chhattisgarh as
Accredited
with CGPA of 3.04 on seven point scale
at A grade
valid up to December 15, 2021

Date : December 16, 2016

Director

बी. एड. प्रतिवेदन

हमारे महाविद्यालय में बी. एड. प्रशिक्षण का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित होता है। पाठ्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार संचालित होता है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रशिक्षार्थी को एक अच्छे शिक्षक के रूप में विकसित करने के लिए सैद्धांतिक पाठ्यक्रम, इंटर्नशिप एवं अनेक गतिविधियां निर्धारित की गई हैं। सत्र 2019–21 के लिए प्रवेश प्रक्रिया जुलाई से प्रारम्भ की गई थी। उसके पूर्व जून में बी. एड. द्वितीय वर्ष का सत्र प्रारम्भ किया गया। वे जून के द्वितीय सप्ताह से जुलाई के अंतिम दिवस तक महाविद्यालय में अपने आचार्यों के मार्गदर्शन में विभिन्न कार्यक्रमों को पूर्ण करते हैं एवं 16 सप्ताह के इंटर्नशिप हेतु उन्मुख होते हैं।

प्रशिक्षार्थियों को पर्यावरण के प्रति चैतन्य रखने एवं महाविद्यालय में हरियाली बनाए रखने के लिए 27 जुलाई को वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया एवं ट्री गार्ड की भी व्यवस्था की गई। 30 जुलाई को महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका दृष्टि का विमोचन किया गया। यह पत्रिका महाविद्यालय की गतिविधियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है, प्रशिक्षार्थियों की बौद्धिक क्षमता एवं लेखन क्षमता का विकास करती है। महाविद्यालय में जल स्तर को सही बनाए रखने एवं वर्षा के जल के संरक्षण के लिए दिनांक 18 से 25 सितम्बर तक रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की सात दिवसीय कार्यशाला बी. एड., एम. एड. प्रशिक्षार्थियों को करवाया गया।

स्वतंत्रता दिवस– संस्था में स्वतन्त्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रशिक्षार्थी एवं आचार्यगण तथा कार्यालयीन कर्मचारियों ने देश के स्वतंत्रता की अक्षुण्णता की शपथ ली एवं स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण किया।

शिक्षक दिवस– महाविद्यालय में प्रशिक्षार्थी ने संस्था के आचार्यों के सम्मान में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस का आयोजन किया। प्रशिक्षार्थियों ने एक व्यवस्थित आयोजन किया, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं वक्तव्यों का समावेश था।

भारत को जानो (सात सितम्बर)– भारत विकास परषिद् के मार्गदर्शन में बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों ने एक प्रश्न मंच का आयोजन किया इस प्रतियागिता में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने इसमें हिस्सा लिया। सभा में उपस्थित सभी लोग भारत के अनछुए तथ्यों से अवगत हुए।

अधिगम संसाधन– बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थी अध्यापन करने के पूर्व अनेक प्रक्रियाओं से गुजरते हैं उनमें से एक हैं अधिगम संसाधनों का निर्माण। पाठ्यवस्तु को सहज ग्राह्य एवं रोचक बनाने के लिए प्रस्तुतिकरण में किन वस्तुओं का किस प्रकार सहयोग लिया जाए। यह जानने, समझने के लिए अधिगम

संसाधनों के निर्माण की कार्यशाला आयोजित की गई। प्रशिक्षार्थियों ने अपने अध्यापन विषय का अधिगम संसाधन समूह में तैयार किया। डॉ. उषामणि ने कार्यशाला का आयोजन किया।

जीवन विधा शिविर (13 से 19 नवम्बर)– प्रशिक्षार्थियों के चेतना विकास के लिए शिविर का आयोजन– राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के निर्देशानुसार किया गया। प्रशिक्षार्थियों को उद्‌बोधन दिया एवं संस्था के डॉ. यू. व्ही. वारे ने आयोजन की भूमिका का निर्वहन किया।

आर्ट एण्ड क्राफ्ट (25 से 30 नवम्बर)– जीवन में अवकाश के क्षणों का सही उपयोग एवं रचनात्मकता के द्वारा सौंदर्यबोध की अनुभुति के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति के पास कौशल हो, हस्तशिल्प हो। इसलिए शिक्षकों के हस्तशिल्प में रुचि होना अत्यावश्यक है इसके लिए बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए आर्ट एण्ड क्राफ्ट की कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला उन्हें स्वयं की रुचि एवं समूह के साथ कार्य करना सिखाती है। इसका आयोजन संस्था के सुश्री आशा बनाफर एवं श्री प्रमोद दत्त शुक्ल ने किया।

ड्रामा इन एजुकेशन– नाटक का शिक्षण में अहम स्थान है। यह स्पष्ट हो गया है, इस हेतु अग्रज नाट्य दल के सहयोग से प्रतिवर्षानुसार पाठ्यवस्तु को नाट्य रूप में परिवर्तित कर अध्यापन की प्रक्रिया से अवगत होने के लिए बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए कार्यशाला आयोजित हुआ। इस कार्यशाला से प्रशिक्षार्थियों में आत्म विश्वास, संवाद आयगी, समय प्रबंधन, अभिनय आदि कौशलों का विकास हुआ एवं अंतिम दिवस प्रशिक्षार्थियों ने गांधी जी के स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित पांच नाटकों का मंचन किया।

कार्यशाला– बी. एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए 30–30 के समूह में कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थी की मेरा बचपन, बचपन की घटना, माइंडफुलनेस आदि विषयों पर कार्यशाला होती है। प्रशिक्षार्थी स्वयं को पहचानने लगते हैं, द्वितीय वर्ष में वे एक शिक्षक के रूप में अपने को विकसित करते हैं। कार्यशाला मेरा भय, हारमोनियस क्लास रूम, एक शिक्षक के रूप में मेरी शक्ति एवं कमजोरी उन्हें एक अच्छे शिक्षक बनने में सहायक होती है। कार्यशाला प्रशिक्षार्थियों को अभिव्यक्ति का अवसर देती है।

फिल्म की समीक्षा– प्रशिक्षार्थियों में समीक्षात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए उन्हें फिल्म दिखाई जाती है एवं निर्धारित बिन्दुओं पर समीक्षा करवाई जाती है। यह कार्य डॉ. ए. के. पोद्दार सम्पन्न करवाते हैं। श्री डी. के.जैन उन्हें सहयोग देते हैं। इस वर्ष "सुपुर 30" फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

भाषा प्रवीणता– एक शिक्षक के लिए भाषा के उपयोग में प्रवीण होना अत्यंत आवश्यक है। बी. एड. प्रथम वर्ष में यह कार्यशाला अत्यंत आवश्यक है। बी. एड. प्रथम वर्ष में यह कार्यशाला डॉ. क्षमा त्रिपाठी, श्री राजेश गौरहा एवं श्रीमती रश्मि पाण्डेय ने आयोजित किया। श्रीमती रीमा शर्मा ने सहयोग दिया।

समूह खेलकूद एवं क्रीड़ा प्रतियोगिता– प्रशिक्षार्थियों को चार निकेतनों में बाँटकर यह प्रतियोगिता सम्पन्न करवाई जाती है। बालकों के चहुंमुखी विकास के लिए शिक्षकों को यह आयोजन करना आना ही चाहिए यही कार्यक्रम का उद्देश्य है। इसी क्रम में सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ भी सम्पन्न करवाई जाती हैं तथा वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन होता है।

सेमिनार– बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थी एम. एड. प्रथम सेमेस्टर के नेतृत्व में एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थी तृतीय सेमेस्टर के नेतृत्व में सेमिनार एवं संगोष्ठी में सम्मिलित हुए। सेमिनार का कथानक विभिन्न बचपनों की झलक एवं संगोष्ठी का विषय पर्यावरण था। समस्त आचार्यों ने डॉ. रमणाराव के नेतृत्व में कार्य को सम्पन्न किया। इस कार्यक्रम से प्रशिक्षार्थी अपनी सोच को परिष्कृत करने की ओर बढ़े। उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर मिला।

शैक्षणिक भ्रमण– बी. एड. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थी 11 फरवरी रात्रि से 15 फरवरी प्रातः तक के लिए शैक्षणिक भ्रमण के कार्यक्रम में संलग्न रहे। इन दिनों वे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल, उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान भोपाल एवं डाइट भोपाल की गतिविधियों से अवगत हुए एवं ऐतिहासिक महत्व के स्थान सांची का स्तूप का अवलोकन किए। साथ ही प्राकृतिक दृश्यों की मनोरम छटा देखने वन विहार किए एवं ज्ञानवर्धन हेतु मानव संग्रहालय तथा ऊर्जा पार्क गए एवं मनोरंजन हेतु पिपुल्स माल एवं न्यू मार्केट गए। इस तरह से भ्रमण आयोजन का प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशिक्षार्थी वापस आए।

सत्रीय जाँच एवं प्रायोगिक परीक्षा– फरवरी 20 से 2 मार्च तक प्रशिक्षार्थी सत्रीय जाँच परीक्षा में सम्मिलित हुए एवं 3 मार्च से 17 मार्च तक प्रायोगिक परीक्षा देकर विश्वविद्यालयीन परीक्षा हेतु तैयारी प्रारम्भ कर दिए।

इस तरह से यह सत्र भी दूसरे सत्रों की तरह समाप्त हो रहा था किंतु कोविड 19 के कारण विश्वविद्यालयीन परीक्षा स्थगित है।

नलिनी पाण्डेय
बी. एड. प्रभारी
आई. ए. एस. ई., बिलासपुर

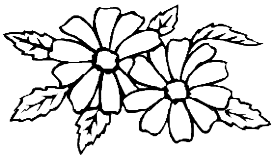

प्रतिवेदन

एम.एड. वर्ष 2019–20

डॉ. क्षमा त्रिपाठी
एम. एड. खंड प्रभारी
उ.शि.अ.सं., बिलासपुर

समाज के बदलते स्वरुप, बदलते वक्त के साथ स्वयं को विकसित करने का महत्वपूर्ण और एक अहम जरिया है प्रशिक्षण।

प्रशिक्षण द्वारा व्यवसायिक योग्यता हासिल करना और उसका व्यवहारिक धरातल पर प्रयोग करना दोनों ही बातें शिक्षक शिक्षा और समाज की दृष्टि से न्यायोचित कदम है। सत्र 2019–20 में एमएड प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षणरत हैं। जुलाई 2019 में एमएड प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षणरत के जुलाई 2017 में 2019 बैच के प्रशिक्षार्थियों ने अपनी उपलब्धि की मिसाल कायम करते हुए पदस्थ विद्यालयों के लिए प्रशिक्षण से कार्य मुक्त किए गए।

वर्ष 2019–20 एम एड प्रशिक्षार्थियों का राष्ट्रीय सेमीनार एवं वर्कशाप में सहभागिता का भी वर्ष रहा।

राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में प्रशिक्षार्थियों ने सराहनीय प्रदर्शन करते हुए महत्वपूर्ण स्थान बनाया।

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भांति बी. एड. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित सेमीनार में दोनों सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थियों ने व्यवस्था प्रबंधन की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए आबंटित विषयों के आधार पर विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

प्रबंधन, निर्देशन, व्यवस्थापन एवं अनुशासन की बारीकियों पर ध्यान देते हुए कार्य को परिणाम तक पहुंचाने एवं लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता प्रशिक्षार्थियों में देखी गई।

कोविड 19 महामारी में विश्व भर के लोगों की संपूर्ण जीवनशैली को प्रभावित किया वहीं कुछ समय के लिए महाविद्यालय शिक्षक–प्रशिक्षण संबंधी गतिविधियों को विराम लेना पड़ा। फलतः महाविद्यालय के प्रबुद्ध आचार्यगणों द्वारा घर एवं महाविद्यालय से विभिन्न विषयों में ऑनलाइन कक्षाएं मार्च 2020 से जून 2020 तक संचालित की गई। इसी बीच 28 मई 2020 से 19 जून 2020 तक प्रत्येक विषय के 02 टेस्ट परीक्षा एवं मूल्यांकन ऑनलाइन संपन्न किया गया। प्रशिक्षार्थियों एवं आचार्यों द्वारा टेलीग्राम ग्रुप्स बनाया गया। शैक्षिक सामग्रियों को इसके माध्यम से प्रशिक्षार्थियों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। शिक्षा में तकनीक का प्रयोग कर पठन–पाठन का क्रम अभी भी संचालित है।

एम एड चतुर्थ सेमे. के प्रशिक्षार्थियों ने स्वप्रेरणा से सरकारी कोष में कोविड 19 हेतु सहायता राशि जमा करायी गई। इस राष्ट्रीय आपदा में सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वहन उनके द्वारा किया गया। यह सराहनीय कदम है।

शैक्षिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में शत–प्रतिशत भागीदारी के साथ प्रथम सेमेस्टर के

प्रशिक्षार्थी द्वितीय सेमेस्टर में एवं तृतीय सेमेस्टर के प्रशिक्षार्थी चतुर्थ सेमेस्टर में विश्वविद्यालयीन परीक्षा में अच्छे अंकों से उपलब्धि हासिल की।

एम एड द्विवर्षीय प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षार्थियों (विभागीय) का चयन संचालक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् रायपुर द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा के माध्यम से होता है। सीधी भर्ती हेतु प्रशिक्षार्थियों का चयन मेरिट के आधार पर संपन्न होता है। सत्र 2019–20 में निम्नानुसार प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षणरत हैं–

	आबंटित	**वर्तमान में प्रशिक्षणरत**
एमएड II सेमेस्टर	50	48
एमएड IV सेमेस्टर	50	48

एमएड प्रशिक्षाथियों द्वारा सत्रानुसार विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता रही– यथा–

Seminar ditail	**सहभागिता**	**पत्रक वाचन/रिपोर्ट प्रस्तुति**
(1) महात्मा गांधी– पं. सुंदरलाल शर्मा वि. वि. बिलासपुर 15.10.2019 से 16.10.2019 तक	प्रतिभागी आचार्य श्री डी. के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी M.Ed.1st सेमे. आकांक्षा अग्रहरि, अनारकली भास्कर आरती अवस्थी, अरविंद गुप्ता, भानु महंत, भूखन लाल कर्ष श्वेता झा, ललिता ठाकुर, हेमलता साहू	आकांक्षा अग्रहरि आरती अवस्थी राजेन्द्र चतुर्वेदी जितेन्द्र गुप्ता संध्या अग्रवाल

Seminar ditail	**सहभागिता**	**पत्रक वाचन**
	शिवकुमार नोनिया, विनोद साहू चिंताराम कश्यप, संध्या अग्रवाल, धनेश्वरी राही, जीवनलाल यादव, ललित कुमार राजपूत, ललित राजपूत, मनोज कुमार झा, रोशन कुमार मनहर विनय कुमार मानिकपुरी, मुकेश मौर्य कमल भैना, देवम् पटेल, रघुबरप्रसाद पटेल, तरनजीत कौर, सर्वनाथराम, सुमन प्रकाश कंवर, लता यादव, आशुतोष यादव, राजेन्द्र चतुर्वेदी, जितेन्द्र गुप्ता	

31.01.2020 से 01.02.2020 तक पं. सुंदरलाल शर्मा वि. वि.		
(2) महिलाओं की वर्तमान दशा तथा महिला सशक्तिकरण के समक्ष चुनैतियां, बिलासपुर	प्रतिभागी आचार्य श्री डी. के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी M.Ed 1st सेमे. आकांक्षा अग्रहरि, श्रुति अग्रवाल संध्या अग्रवाल	पत्रक वाचन– मुख्य कथानक पर आकांक्षा अग्रहरि एवं संध्या अग्रवाल
(3) "भारत के विभिन्न बचपनों की झलक" IASE बिलासपुर 02.01.2020 से 04.01.2020 तक	प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी M.Ed 1st सेमे. सभी प्रशिक्षार्थी	रिपोर्ट प्रस्तुति M.Ed 1st Semester
(4) स्वामी विवेकानंद Educational thought M.Ed IInd Year	प्रतिभागी आचार्य श्री यू. व्ही. वारे जीवनलाल यादव	आकांक्षा अग्रहरि प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी
Seminar ditail	**सहभागिता**	**पत्रक वाचन**
out of the Box Thinking अमरकंटक	आकांक्षा अग्रहरि, अनारकली भास्कर आरती अवस्थी, अरविंद गुप्ता भानू महंत, भूखनलाल कर्ष, रोशन कुमार मनहर, सोनम तम्बोली श्वेता झा, सुरेन्द्र कुमार राय, विनोद साहू, चिंताराम कश्यप, जीवन लाल यादव, मनोज कुमार झा, मुकेश मौर्य देवम् पटेल, चन्द्रकांत केशकर, रघुबर प्रसाद पटेल, सुमन प्रकाश कंवर, लता यादव	मनोज कुमार झा जीवनलाल ध्रुव मनोज कुमार झा
(5) "शिक्षा का अधिकार की चुनौतियाँ एवं भावी सुधार के उपाय" जांजगीर	प्रतिभागी आचार्या श्रीमती रमाकांति साहू प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी M.Ed. IInd Sem. आरती अवस्थी, आकांक्षा अग्रहरि, अनारकली भास्कर, भानू महंत, भूखनलाल कर्ष, चंद्रकांत केशकर, सोनम तम्बोली, श्रुति अग्रवाल, विनोद साहू, चिंताराम कश्यप, रीना मिश्रा,	पत्रक वाचन आरती अवस्थी आकांक्षा अग्रहरि जीवन लाल यादव

जीवनलाल यादव, सुरेन्द्र कुमार राय,
मनोज कुमार झा, विजय कुमार मानिकपुरी,
मुकेश मौर्य, कमल भैना, नारायण प्रसाद
देवांगन, रोशन कुमार मनहर, प्रतिमा डहरिया।

Workshop Detail

(1)	16 व 17 Oct. 2019 GGU बिलासपुर उच्च प्राथमिक स्तर के लिए हिन्दी भाषा व्याकरण एवं अधिगम सामग्री निर्माण	प्रतिभागी आचार्या– डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– M. Ed. 1st सेमे. आरती अवस्थी, अरविंद गुप्ता, राजेन्द्र चतुर्वेदी धनेश्वरी राही, आशुतोष यादव
(2)	07 व 08 Nov.2019 Shri Rawatpura University रायपुर Research Mathodology	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी. के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– M. Ed. 1st सेमेस्टर आकांक्षा अग्रहरि, अरविंद गुप्ता, भानु महंत, सोनम तम्बोली, ललिता ठाकुर, राजेन्द्र चतुर्वेदी शिव कुमार नोनिया, संध्या अग्रवाल, जयंती श्रीवास मनोज झा, मुकेश मौर्य।
(3)	13 Nov.2019 GGU Bilaspur Assessment and Evalumation (Acadami Enrichment Activity)	अनारकली भास्कर, आकांक्षा अग्रहरि, भानु महंत श्रुति अग्रवाल, शैलिन्द्री सिंह गोड़, जयंती श्रीवास पायल विश्वास, जीवनलाल यादव, मनोज झा मुकेश मौर्य, श्वेता सिंग।
(4)	26 व 27 Nov.2019 GGU Bilaspur Audio- Vishul Aids	सहभागिता, प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी, सेमेस्टर आकांक्षा अग्रहरि, जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता, अरविंद सिंह, राजेन्द्र चतुर्वेदी, विनोद साहू, जितेन्द्र गुप्ता,संध्या अग्रवाल, मनोज कुमार झा श्रुति अग्रवाल, मुकेश मौर्य, सुमन प्रकाश कंवर, ललित कुमार राजपूत
(5)	7 व 8 जनवरी 2020 उच्च प्राथमिक स्तर के लिए हिन्दी भाषा व्याकरण पर स्व अधिगम सामाग्री निर्माण GGU बिलासपुर	प्रतिभागी आचार्या डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– अरविंद गुप्ता, राजेन्द्र चतुर्वेदी, ललित राजपूत

(6) Rehabilitaion Council of India Continuing Rehabilitation Education (CRE)
17 से 19.09.2019
9 से 11.12.2019
20 से 22.11.2019
26 से 27.11.2019

जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता
अरविन्द कुमार सिंग

डॉ. एन. भाम्बरी ने मुख्य वक्ता के रूप में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 पर पं. सुन्दर लाल शर्मा मुक्त वि.वि. में अपना विचार व्यक्त किया

कल्पना चावला विज्ञान क्लब

एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा सत्र 2019-2020 में राष्ट्रीय/ अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार/ कार्यशाला/ वेबीनार में सहभागिता व प्रस्तुतिकरण

चतुर्थ सेमेस्टर

क्र.	दिनांक एवं विषय	संस्थान/ विश्वविद्यालय का नाम	प्रतिभागियों के नाम	पत्रक वाचन/ प्रस्तुतिकरण करने वालों के नाम
1.	18.03.19 से 19.03.19 Drug Abuse: and Risk to Youth	राष्ट्रीय कार्यशाला–गुरू घासीदास केन्द्रीय वि.वि. बिलासपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य–श्री डी.के.जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, सुरेश साहू, संतोष तिवारी, सीमा त्रिवेदी, प्रशांत कुमार कुलदीप, नीता वर्मा, राम प्रसाद साहू, शारदा रानी शुक्ला, राजेश कुमार तंबोली, सुम्मी पाण्डेय, तृप्ति देवांगन, अंबिका साहू, मोहिन्दर सिंह वर्मा, आशा राठौर, राकेश कुमार सोनी, नयन केसरी, अर्चना जाधव प्रमोद श्रीवास, निधि कोसले	
2.	09.04.19 से 10.04.19 Interdisciplinary Research on Advancement of Life, Resear-ch, Modern Education and Medicinal Life IC- Iralrmem 2019	अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी अपोलो कालेज दुर्ग, छत्तीसगढ़	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी.के.जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, प्रशांत कुमार कुलदीप, संतोष तिवारी, प्रियंका शुक्ला, फूलेश्वर रात्रे, रामप्रसाद साहू, सुम्मी पाण्डेय	सूर्य प्रकाश सोनी "The Role of Women in Hig gher Education" छबिलाल राठौर– "Gender Equality and Education
3.	24 जून 2019 New Education Policy (Draft)	राष्ट्रीय कार्यशाला –अटल बिहारी वाजपेयी वि.वि. बिलासपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी.के.जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, आशा राठौर, गणेश प्रसाद शुक्ला, प्रशांत कुमार कुलदीप, अमित कुमार कैवर्त्य, चित्रसेन सिंह भारद्वाज, नीता वर्मा, नयन केसरी	

			राजेश कुमार तंबोली, सुम्मी पाण्डेय, राजेश कुमार बरेठ, अंबिका साहू मोहिन्दर सिंह वर्मा, टीकमचंद पटेल, मधुकर सिंह, अर्चना जाधव
4.	20 अगस्त 2019 Mobile Learning	राष्ट्रीय कार्यशाला –गुरूघासीदास केंद्रीय वि.वि. बिलासपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी. के.जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, संतोष तिवारी, प्रियंका शुक्ला, सीमा त्रिवेदी, गणेश प्रसाद शुक्ला उमेश कुमार कश्यप, प्रशांत कुमार कुलदीप, अमित कुमार कैवर्त्य, देवेन्द्र प्रताप सिंह गौतम, चित्रसेन सिंह भारद्वाज, नंदलाल चौहान, रमन शर्मा, राजेश कुमार बरेठ, नीता वर्मा, अंबिका साहू, मोहिन्दर वर्मा, आशा राठौर, चंद्रकांत राठिया, टीकमचंद पटेल, राजेश नाथ योगी, नारायण पटेल, राकेश कुमार सोनी, प्रणव तिवारी, मधुकर सिंह, प्रमोद श्रीवास, निधि भोसले
5.	17.1019 से 18.10.19 M H R D	राष्ट्रीय कार्यशाला– गुरूघासीदास केंद्रीय वि.वि.बिलासपुर छग	प्रतिभागी आचार्य– प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सीमा त्रिवेदी, टीकमचंद पटेल
6.	07.11.19 से 08.11.19 National Wrok-shop on Resear-ch Methodology	राष्ट्रीय कार्यशाला– श्री रावतपुरा सरकार विवि रायपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी.के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, संतोष तिवारी, प्रियंका शुक्ला, प्रशांत कुमार कुलदीप, राजेश कुमार तंबोली, सुरेश साहू, फुलेश्वर रात्रे, राकेश कुमार सोनी, गणेश शुक्ला
7.	13 नवम्बर 2019 Assessment and Evalutation	राष्ट्रीय कार्यशाला –गुरूघासीदास केन्द्रीय वि.वि. बिलासपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी. के.जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, संतोष तिवारी, सीमा त्रिवेदी, सुरेश साहू,

			गणेश प्रसाद शुक्ला, प्रशांत कुमार कुलदीप, ओही कृष्णा साहू, राजेश कुमार बरेठ, अंबिका साहू, मोहिन्दर सिंह वर्मा, आशा राठौर संतोष कुमार यादव, फुलेश्वर रात्रे, टीकमचंद पटेल, प्रमोद श्रीवास	
8.	07.012020 से 08.01.2020 उच्च प्राथमिक स्तर के हिन्दी भाषा व्याकरण पर स्व–अधिगम सामग्री	राष्ट्रीय कार्यशाला –गुरूघासीदास केन्द्रीय वि.वि. बिलासपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी. के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– छबिलाल राठौर, आशा राठौर, सीमा त्रिवेदी राजेश कुमार तंबोली, फुलेश्वर रात्रे, टीकमचंद पटेल, संतोष कुमार यादव, प्रमोद श्रीवास	
9.	30.01.2020 से 31.01.2020 Development of Baile Learning Materials for Elementary classess of C.G. Board	राष्ट्रीय कार्यशाला –गुरूघासीदास केन्द्रीय वि.वि. बिलासपुर छ.ग.	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी. के. प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– संतोष तिवारी, सीमा त्रिवेदी, सुरेश साहू, नंदलाल चौहान, राम प्रसाद साहू, छबिलाल राठौर, आशा राठौर, शारदा रानी शुक्ला, तृप्ति देवांगन, राजेश कुमार बरेठ, नीता वर्मा, संतोष कुमार यादव, फुलेश्वर रात्रे, चंद्रकांत राठिया, राकेश कुमार सोनी, नारायण पटेल, प्रमोद श्रीवास	
10.	31.01.2020 से 01.02.2020 महिलाओं की वर्तमान दशा तथा महिला सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियां	राष्ट्रीय संगोष्ठी– पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त वि.वि. बिलासपुर छग	प्रतिभागी आचार्य– श्री डी.के. जैन प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, गणेश प्रसाद शुक्ला, प्रशांत कुमार कुलदीप, अमित कुमार कैवर्त्य, रमन शर्मा, राजेश कुमार तंबोली, सुम्मी पाण्डेय, टीकमचंद पटेल, मधुकर सिंह, नयन केसरी	सूर्यप्रकाश सोनी– "प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका"
11.	17.02.2020 से 18.02.2020 Swami Viveka-nanda's : Educa-tional Thoughts: out of Box Thinking	राष्ट्रीय सेमिनार कम कार्यशाला– इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विवि अमरकंटक मप्र	प्रतिभागी आचार्य– डॉ. यू. व्ही. वारे, प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, आशा राठौर सीमा त्रिवेदी, योगेश कुमार धीवर गणेश प्रसाद शुक्ला, प्रशांत कुमार कुलदीप, नंदलाल चौहान, मोहिन्दर सिंह वर्मा, संतोष कुमार यादव, नारायण पटेल, फुलेश्वर रात्रे, चंद्रकांत राठिया, निधि भोसले	सूर्य प्रकाश सोनी– Principal of Swami Vivekananda for Youth छबिलाल राठौर स्वामी विवेकानंद के बौद्धिक विचार

12.	02 मार्च 2020 Right to Education Chalanges of Implimentation and Remedial Measures for Future Improvement (with Special reference to chhattisgarh)	अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी– शास. टी.सी.एल. स्नात–कोत्तर महाविद्यालय जांजगीर (छ.ग.)	प्रतिभागी आचार्य– रमाकांति साहू प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, सुरेश साहू	सूर्य प्रकाश सोनी– "बाल अधिकार के रूप में शिक्षा का अधिकार" सुरेश साहू– "बाल अधिकार के रूप में शिक्षा का अधिकार"
13.	22 मई 2020 Challenges and Strategies for Exam in the wake of COVID- 19	Webinar-Govt. Jajwalyadev Naveen Girls College Janjgir (C.G.)	प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– छबिलाल राठौर, सुरेश साहू	
14.	05.06.2020 से Post COVID-19 World Enviroinment	International Webinar- Govt. VVT PG Autonoms College Durg	प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी,:छबिलाल राठौर, सुरेश साहू, सीमा त्रिवेदी, राजेश कुमार तंबोली, मोहिन्दर सिंह वर्मा, आशा राठौर, प्रशांत कुमार कुलदीप	
15.	09.06.2020 से 10.06.2020 शैक्षिक विमर्श के के नवीन आयाम	National Webinar- L.A.S.E. Bhopal (M.P.)	प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, नंदलाल चौहान, संतोष तिवारी, सुरेश साहू, सीमा त्रिवेदी, राजेश कुमार तंबोली, अंबिका साहू, मोहिन्दर सिंह वर्मा, आशा राठौर, नीता वर्मा, चंद्रकांत राठिया, प्रशांत कुमार कुलदीप	
16.	13 जून 2020 Challenges and Future Perspect in Higher Edu cation with Special reference to N COVID19	International Webinar- L.A.S.E. Sardarshahr, Rajasthan	प्रतिभागी आचार्य– डॉ. सुदेशना वर्मा, प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी,छबिलाल राठौर, नंदलाल चौहान, संतोष तिवारी, सुरेश साहू, अमित कुमार कैवर्त्य, प्रशांत कुमार, कुलदीप, राम प्रसाद साहू, योगेश कुमार धीवर, राजेश कुमार तंबोली, नीता वर्मा, अंबिका साहू, मोहिन्दर वर्मा, आशा राठौर, फुलेश्वर रात्रे,	

			चंद्रकांत राठिया, नारायण पटेल सीमा त्रिवेदी, गणेश शुक्ला, निधि भोसले
17.	16.06.2020 से 17.6.2020 तक Psychology of Crisis & Resili ence to Change	Internationanl Webinar-st. Anne's Degree College for Women, Ha-lasuru Bangaluru	प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– सूर्य प्रकाश सोनी, छबिलाल राठौर, संतोष तिवारी, सुरेश साहू, सीमा त्रिवेदी, राजेश कुमार तंबोली नीता वर्मा, नारायण पटेल, चंद्रकांत राठिया, प्रशांत कुमार कुलदीप, गणेश शुक्ला
18.	17 जून 2020 Cyber Security: Issues and Challenges	National Webinar-Govt. P. G. College Damoh (M.P.)	प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी– अमित कैवर्त्य

शोध प्रकोष्ठ

अटल बिहारी बाजपेयी वि. वि. में शिक्षा विषय में पंजीकृत 13 शोधार्थी महाविद्यालय में नामांकित होकर 6 माह का कोर्स वर्क पूर्ण कर प्रीपीएचडी कोर्स वर्क की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए हैं। महाविद्यालय के पंजीकृत आचार्यों के मार्गदर्शन में शोध कार्य को संपन्न करेंगे।

शोधखण्ड प्रभारी
डॉ. क्षमा त्रिपाठी
उ. शि. अ. सं. बिलासपुर
शोध प्रकोष्ठ

केन्द्र प्रवर्तित योजना के तहत् किए गए कार्यों का विवरण

संचालक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर छ. ग. के निर्देशानुसार महाविद्यालय में दक्षता विकास, शोध कार्य, रिसर्च सेंटर, सपोर्ट टू डाइट, शिक्षक–शिक्षा में तकनीकी, नवाचार, सामग्री निर्माण इत्यादि कार्य किए गए। जो शिक्षक–प्रशिक्षकों, शिक्षक आचार्यों एवं प्रशिक्षार्थियों के व्यवसायिक कौशल विकास तथा ज्ञान संवर्धन में सहायक होते हैं।

कार्यों का विवरण इस प्रकार है :–

शोध कार्य

स.क्र.	आचार्य / प्रभारी का नाम	शोध का विषय
1.	डॉ. बी. व्ही. रमणाराव व डॉ. ए. के. पोद्दार	Functioning of Teacher Education Instititions with reference to the Stakeholders Responce: A Study
2.	डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी व श्री डी. के. जैन	माध्यमिक स्तर पर आई.सी.टी. के उपयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन
3.	डॉ. महालक्ष्मी सिंग व श्रीमती मनीषा वर्मा	उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षकों की समझ का अध्ययनः अधिगम संप्राप्ति के संदर्भ में
4.	डॉ. सुदेशना वर्मा व डॉ. अजिता मिश्रा	उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान विषय के शिक्षकों की समझ का अध्ययनः अधिगम संप्राप्ति के संदर्भ में
5.	डॉ. उषामणी	Study on effectiveness of Physics Virtual Lab
6.	डॉ. संजय आयदे	Attitude of Teacher Students towards new Technology (M Learning)
7.	श्रीमती रीमा शर्मा व श्रीमती प्रीति तिवारी	Study of Classroom Behaviour of Student Teacher
8.	श्री राजेश गौराहा	Study the Effect of 10 Days English Language Training for Teachers at Higher Secondary Level
9.	श्रीमती नीला चौधरी व डॉ. रजनी यादव	प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण विषय के शिक्षकों की समझ का अध्ययन : अधिगम संप्राप्ति के संदर्भ में।
10.	श्रीमती रश्मि पाण्डेय	हाईस्कूल स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन।

– डॉ. क्षमा त्रिपाठी

"एम. एड. तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों हेतु कोषालय की क्रियाविधि पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन पर प्रतिवेदन"

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर में एम. एड. तृतीय सेमेस्टर के वैकल्पिक विषय वित्तीय प्रबंधन के विद्यार्थियों हेतु "कोषालय के क्रियाकलाप" उप विषय पर महाविद्यालय के कक्ष क्रमांक 04 में तीन दिवसीय कार्यशाला दिनांक 14.11.2019, 15.11.2019 एवं 18.11.2019 को आयोजित किया गया। एम. एड. प्रभारी श्रीमती डॉ. क्षमा त्रिपाठी एवं विषय प्रभारी श्रीमती नलिनी पांडेय मैडम के द्वारा स्त्रोत व्यक्ति के रूप में श्री गणेश कुमार निर्मलकर सहायक कोषालय अधिकारी, जिला कोषालय बिलासपुर को आमंत्रित किया गया।

प्रथम दिवस दिनांक 14.11.2019 को उन्होंने हमें कोषालय से संबंधित प्रमुख शीर्षों के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि कोषालय में तीन प्रकार की निधियाँ होती हैं- (1) समेकित निधि (2) आकस्मिकता निधि (3) लोक निधि। जिनमें आय एवं व्यय का सम्पूर्ण रिकार्ड रखा जाता है। समेकित निधि में राज्य सरकार का कोष रखा जाता है। आकस्मिकता निधि में रिजर्व फंड एवं लोक निधि में जनता के लिए जारी फंड का हिसाब रखा जाता है। उन्होंने बताया कि शिक्षा विभाग हेतु शीर्ष 2202 होता है जिसमें वेतन आहरण DDO के द्वारा होने के बाद GPF का head 8009, GIS का हेड 8011 Income Tax का हेड 8658 एवं Recovery head 2202 होता है। उन्होंने कोषालय के बैंकिंग Non banking शाखा की जानकारी दी।

द्वितीय दिवस दिनांक 15.11.2019 को उन्होंने कोषालय द्वारा पेंशन भुगतान की प्रक्रिया को बैंकों के द्वारा जारी करने संबंधी क्रियाविधि को उदाहरण सहित समझाया। उन्होंने कोषालय की समस्त प्राप्तियों का लेखा एवं भुगतान का लेखा किन-किन शीर्षों में होता है उसकी सम्पूर्ण जानकारियाँ हमें प्रदान किया। स्त्रोत व्यक्ति श्री निर्मलकरजी ने महालेखाकार एवं कोषालय के आपसी संबंधों के बारे में भी बताया। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि फर्जी बिलों की पहचान कैसे करेंगे एवं अधिक राशि चालान द्वारा जमा हो जाने पर Refund कैसे प्राप्त करेंगे। कार्यशाला के द्वितीय दिवस में महाविद्यालय के I. C. T. प्रभारी श्री डी. के. जैन एवं सहा. ग्रेड II श्री अश्वनी कुमार भास्कर भी पूरे समय तक उपस्थित रहे।

दिनांक 18.11.2019 को कार्यशाला के तीसरे दिन सहा. कोषालय अधिकारी श्री गणेश कुमार निर्मलकर जी ने कोषालयीन कार्यप्रणाली, महालेखाकार एवं स्थायी निधि संपरीक्षण के मूलभूत क्रियाकलापों पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान किया। उन्होंने बताया कि राज्य में स्थापित सभी अर्द्धशासकीय संस्थानों, निगमों, वि.वि. पंचायतों का अंकेक्षण स्थानीय निधि संपरीक्षा के द्वारा किया जाता है। महालेखाकार केन्द्र सरकार द्वारा नियंत्रित इकाई है। कोष. संहिता में स.नि. 290, 291, 292, 293 के बारे में जानकारियाँ दी गईं। नियंत्रणकर्ता अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यालयों की निगरानी एवं अंकेक्षण भी कराते हैं। कोषालय संहिता के स. नि. 53

में प्रत्येक कार्यालय को Cash book का संधारण करना जरूरी है जिसमें Receipt एवं Voucher रखना जरूरी है। उन्होंने Cash book कैसे भरते हैं इसको श्यामपट में कालम बनाकर एवं आय–व्यय के अनुमानित उदाहरण देकर भरना सिखाया। उन्होंने Cash book भरते समय आवश्यक सावधानी रखने के बारे में बताया।

उन्होंने वैकल्पिक विषय वित्तीय प्रबंधन पढ़ने वाले छात्रों को कोषालय कार्यप्रणाली से संबंधित समस्याओं का संभावित समाधान देकर संतुष्ट किया। इस वर्कशाप से हमें कोषालय के साथ–साथ महालेखाकार एवं स्थानीय निधि संपरीक्षा के क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त हुई। कार्यशाला के अंत में एम. एड. छात्र संतोष तिवारी के द्वारा श्री निर्मलकर जी के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

– प्रस्तुतकर्ता –
एम एड तृतीय सेमेस्टर वित्तीय प्रबंधन

शिक्षण अधिगम सामग्री

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर प्रतिवर्ष विषयवस्तु को रोचक ढंग से अध्यापन हेतु बी. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किया जाता है। शिक्षण अधिगम का निर्माण किया जाता है। सिक्षण अधिगम सामग्रियों के लिये इस वर्ष सितम्बर माह के 26, 27 एवं 30 तारीख को तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका प्रस्तुतिकरण 1 अक्टूबर को किया गया। कार्यशाला में भौतिकी के 4, रसायन के 3, जीव विज्ञान के 4, हिन्दी के 4, गणित के 4, इस प्रकार कुल 27 सहायक शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया गया। जिसमें पेण्डुलम तरंगें, नेत्र दोष निवारण, जियो बोर्ड, एक कोशीय जीवों का प्रदर्शन ईवीएम मशीन, भारत में मृदा के प्रकार, रिफ्लेक्शन एक्शन विशेष आकर्षण के केन्द्र थे।

कार्यशाला में डा. एस. उषामणी, डा. यू. वी. वारे, डॉ. बी. वी. रमना, श्री मनोज सिंह, डॉ. सुदेषना वर्मा, डॉ. अजिता मिश्रा, सुश्री छाया शर्मा, श्री राजेश गौरहा, श्रीमती प्रीति तिवारी, श्रीमती नीला चौधरी, डॉ. क्षमा त्रिपाठी, डॉ. ए. के. पोद्दार, सुश्री आशा बनाफर का विशेष योगदान रहा। संस्था की प्राचार्य डॉ. निशी भाम्बरी, प्राध्यापक श्रीमती नलिनी पाण्डेय एवं श्रीमती रमाकान्ति साहू द्वारा कार्यशाला का निरीक्षण किया गया। बी. एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी एवं एम. ए. के विद्यार्थियों द्वारा कार्यशाला का अवलोकन किया गया एवं भूरि–भूरि प्रशंसा की गयी।

शिक्षण अधिगम सामग्री कार्यशाला में निर्मित सहायक शिक्षण सामग्रियों में से चयनित सहायक शिक्षण सामग्री की राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में प्रतिस्पर्धा के लिये भेजा जाता है। इस वर्ष 2019–2020 विज्ञान मेले में तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यशाला में निर्मित शिक्षण अधिगम सामग्रियों को बी. एड. के विद्यार्थी शालाओं में अध्यापन के लिये उपयोग करते हैं।

डॉ. एस. उषामणी
शिक्षण अधिगम प्रभारी
सहायक प्राध्यापक

" प्रतिवेदन ग्रंथालय"

ग्रंथालय प्रभारी– प्रमोद दत्त शुक्ला
ग्रंथालय सहायक– सुश्री आशा बनाफर

महाविद्यालय में सत्र 2019–20 में बी. एड. प्रथम वर्ष 150 प्रशिक्षार्थी एवं द्वितीय वर्ष में प्रशिक्षणरत 147 प्रशिक्षार्थी इसी तरह एम.एड. प्रथम वर्ष में 48 एवं द्वितीय वर्ष में 48 प्रशिक्षार्थी अध्ययनरत हैं। 12 शोधार्थी का कोर्स वर्क का अध्ययन केन्द्र है। इस तरह से कुल 406 प्रशिक्षार्थी एवं 50 महाविद्यालयीन आचार्यगण ग्रंथालय का उपयोग करते हैं।

प्रतिदिन ग्रंथालय 10.30 से 5.30 तक संचालित होता है। इस अवधि में आचार्यगण एवं प्रशिक्षार्थी समय सारिणी अनुसार ग्रंथालय का उपयोग करते हैं। बी.एड. एम.एड. प्रशिक्षार्थियों के लिए कालखण्ड का निर्धारण किया गया है। बी. एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों को 30–30 प्रशिक्षार्थियों के ग्रुप में विभक्त कर सोमवार से शुक्रवार तक एक घंटे का कालखण्ड दिया जाता है। जिसमें प्रशिक्षार्थी अपने ग्रुप के साथ ग्रंथालय में बैठकर अध्ययन एवं अपने विषयानुसार पुस्तकें प्राप्त करते हैं।

पुस्तक प्राप्त करने के लिए इनको ग्रंथालय क्रमांक दिया जाता है जिसे पुस्तक मांग पंजी पर पुस्तक का नाम एवं अपना ग्रंथालय क्रमांक दर्ज कर दूसरे दिन पुस्तक प्राप्त करना होता है एक प्रशिक्षार्थी को एक बार में दो पुस्तकें 10 दिवस के लिये दिया जाता है। पुस्तक जमा करने के बाद दूसरी पुस्तक प्रदाय की जाती है।

प्रशिक्षार्थियों का कालखण्ड का समय अलग–अलग रहता है। एम.एड. प्रशिक्षार्थी भी अपने कालखण्ड में आकर जर्नल एवं लघु शोध का अध्ययन करते हैं तथा अपने विषयानुसार पुस्तकें लेते हैं।

एम एड एवं बी एड प्रशिक्षार्थियों के अध्ययनार्थ शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद एवं अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा से माह नवम्बर, दिसम्बर 2019 में 28000/ की पुस्तकें विषयानुसार क्रय की गई है एवं वर्तमान में ई लाइब्रेरी हेतु ग्रंथालय को सुविकसित करने का प्रयास जारी है जिससे प्रशिक्षार्थी अधिक से अधिक ग्रंथालय का उपयोग कर सकेंगे।

बी. एड. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए ग्रंथालय विज्ञान विषय पर दो चरणों में 2 और 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्था के आचार्य डॉ. ए. के. पोद्दार सहायक प्राध्यापक के द्वारा ग्रंथालय के विभिन्न बिन्दुओं पर व्याख्यान दिया गया। 5 दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षार्थी महाविद्यालय के ग्रंथालय का भ्रमण एवं संचालन विधि से पूर्णतः अवगत हुये। यह कार्यक्रम प्रशिक्षार्थियों के क्षमता विकास विकास हेतु आयोजित था। जिससे प्रशिक्षार्थी ग्रंथालय के संचालन के तरीके से परिचित हुये।

प्रशिक्षार्थियों के अध्ययनार्थ समाचार पत्र एवं रोजगार नियोजन तथा पत्रिकाएं प्रतियोगिता दर्पण, इण्डिया टुडे समाचार स्टैण्ड पर लगा रहता है। एम एड प्रशिक्षार्थियों हेतु जर्नल बाक्स में जर्नल सुव्यवस्थित रखा है। साहित्यिक पुस्तकों को रेक पर रखा गया है प्रशिक्षार्थी इन्हें स्वयं प्राप्त करते हैं और लाभान्वित होते हैं तत्पश्चात् पूर्ववत्

व्यवस्थित कर रेक पर रखते हैं। अतः इस तरह हमारा ग्रंथालय ओपन एवं पुस्तक मांग पंजी दोनों प्रकार से संचालित होता है।

संस्था के आचार्यगण एवं समय-समय पर होने वाले कार्यशाला में विभिन्न संस्थाओं से आये हुये आचार्य भी अपने-अपने विषयानुसार ग्रंथालय से लाभान्वित होते हैं।

इस प्रकार से हमारा ग्रंथालय सुव्यवस्थित है।

"प्रतिवेदन"

"आर्ट एण्ड क्राफ्ट"

ऐसे कलात्मक कार्य जो हाथ अथवा सरल औजारों से बनाये जायें उपयोगी होने के साथ-साथ सजाने के काम आयें, जिनका धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व निर्धारित हो। आर्ट एण्ड क्राफ्ट के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाते हैं।

भारत का प्रत्येक वर्ग क्षेत्र अपने विशिष्ट हस्तशिल्प पर गर्व करता है। यह हजारों हस्तशिल्पकारों को रोजगार प्रदान करती है। शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में सहजता, सजगता और विशेषज्ञता के साथ कार्य करता है। समाज में नित नये परिवर्तन का दायित्व, ज्ञान को हस्तांतरित करने नये ज्ञान का सृजन और बालक की आंतरिक विशिष्टताओं को उचित अवसर उपलब्ध कराकर सामने लाने का दायित्व शिक्षक का ही होता है।

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान (IASE) बिलासपुर, समाज के इन्हीं कर्णधार शिक्षकों को गढ़ने और परिमार्जित करने का कार्य करता है। बी. एड. पाठ्यक्रम में सम्मिलित अन्य विषयों के साथ सम्मिलित आर्ट एण्ड क्राफ्ट इसी उद्देश्य की पूर्ति में एक कड़ी है। शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ इस प्रकार की अन्य गतिविधियाँ वर्ष पर्यन्त इन्हीं सोद्देश्य कारणों से संचालित होती हैं।

इसी क्रम में बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिये 20.11.10 से 23.11.19 तक आर्ट एण्ड क्राफ्ट की कार्यशाला सह प्रदर्शनी का आयोजन संस्था की प्राचार्य एवम् बी. एड. प्रभारी के कुशल मार्गदर्शन में प्रभारी आचार्यों द्वारा किया गया।

निर्धारित दिवस के पूर्व विद्यार्थियों की रुचि जानने हेतु ध्यान में रखकर कक्षाएं संचालित की गईं जिसमें समस्त 150 प्रशिक्षार्थियों को 10 समूहों में विभक्त किया गया। उनके द्वारा बनाई जाने वाली वस्तु और अनुमानित व्यय राशि की जानकारी ली गई। तत्पश्चात् महाविद्यालय से उक्त राशि आहरित कर उक्त समूहों में वितरित की गई।

आवश्यक सामग्री क्रय करने के साथ ही मूल सामग्री निर्माण की समस्त जिम्मेदारी प्रशिक्षार्थियों पर ही थी।

दिनांक 20.11.19 से 23.11.19 तक आयोजित इस कार्यशाला में समूह के प्रत्येक सदस्य ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए कलात्मक वस्तु निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन किया।

अंतिम दिवस निर्मित वस्तुओं की प्रार्थना

सभा कक्ष में प्रदर्शनी लगायी गई। विद्वान आचार्यगणों ने देखा, सराहा और आवश्यक सुधार हेतु अपने बहुमूल्य सुझाव भी दिये।

उक्त कार्यशाला प्रशिक्षार्थियों के मध्य यह संदेश दे पाने में सफल रही कि शालाओं में जाकर विद्यार्थियों के लिये किस प्रकार अवसर उपलब्ध कराना है, समूह में किस प्रकार कार्य करना है और भारतीय सांस्कृतिक विरासत में किस प्रकार वृद्धि करना है।

प्रभारी
आशा बनाफर
श्री प्रमोद शुक्ला, शिक्षक
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

खेलकूद प्रतिवेदन

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर में प्रशिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक गतिविधियाँ संचालित होती हैं। इन्हीं में से प्रमुख व्यायाम एवं खेलकूद। महाविद्यालय में प्रातः 6.30 से 7.30 तक पी. टी. की कक्षाएं प्रतिदिन लगती हैं जिसमें प्रशिक्षार्थियों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है कि वे अपने विद्यालयों मे छात्रों को शारीरिक व्यायाम के माध्यम से न केवल शारीरिक स्वास्थ्य का विकास कर सकें, अपितु उनमें शारीरिक क्षमता, मानसिक सजगता तथा चुस्ती, परिश्रम, दल योजना, नेतृत्व का विकास, विजय एवं पराजय में समभाव जैसे उत्तम गुणों का विकास कर सकें। इस वर्ष यह कार्यक्रम 09 सितम्बर 2019 से प्रारंभ होकर 10 फरवरी 2020 तक वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता के समापन तक संचालित किया गया।

प्रशिक्षार्थियों को चार निकेतन में विभाजित कर इनके मध्य दो चरणों में वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस वर्ष प्रथम चरण की प्रतियोगिता दिनांक 09-12-19 से 17-12-19 तक सम्पन्न हुई जिसमें खो-खो, व्हालीबाल, बैडमिंटन, टेबल, टेनिस, जम्प रोप आदि खेल सम्मिलित किये गये। द्वितीय चरण में 05 फरवरी 2020 से 10 फरवरी 2020 तक ट्रैक एवं फील्ड स्पर्धा का आयोजन भव्य रूप से किया गया। इस स्पर्धा में प्रशिक्षार्थियों ने 100, 200, 400, 800 मीटर दौड़ 100 गुणा 4 रिलेरेस, गोला, तवा तथा भाला फेंक, ऊंची कूद, लम्बी कूद, त्रिकूद स्पर्धा में अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया। पुरुष वर्ग में कपिलेश्वर प्रधान व महिला वर्ग में रेशमा मिंज ने उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन कर कालेज कलर प्राप्त किया।

– सैयद किफायत उल्लाह
क्रीड़ा अधिकारी

सामुदायिक कार्य

शाला एवं समुदाय एक–दूसरे के पूरक हैं। समुदाय और शाला यदि एक–दूसरे से संबंध नहीं रखेंगे तो शिक्षा का परिणाम वांछित नहीं मिल पाएगा। विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे समाज के विषय में जान नहीं पाएंगे उसकी संरचना, समस्याओं से अवगत नहीं होंगे एवं समाधान की सोच नहीं रखेंगे। अतः दूरगामी सकारात्मक परिणाम के लिए आवश्यक है कि विद्यालय और समुदाय निरन्तर एक–दूसरे के संपर्क में रहें। समुदाय विद्यालय के संसाधनों की पूर्ति करे एवं विद्यालय समुदाय के हित में समुदाय को अग्रसर करने वाले नागरिकों का निर्माण करे।

बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थी 4 सप्ताह के इंटर्नशिप में एक सप्ताह समुदाय में जाकर व्यतीत करते हैं एवं कार्य करते हैं। समुदाय में किया जाने वाला कार्य संबंधित विद्यालय के शाला विकास समिति एवं प्राचार्य के निर्देशानुसार तथा बी. एड. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के सहयोग से सम्पन्न करते हैं। प्रशिक्षार्थियों द्वारा किया जाने वाला कार्य निम्नानुसार है–

(1) अनियमित उपस्थिति एवं लम्बी अनुपस्थिति वाले छात्र– इन दिनों शाला में नियमित रूप से उपस्थित नहीं होना था। लम्बे समय तक विद्यालय में नहीं आना एक समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहा है। प्रायः प्रति वर्ष विद्यालय प्रशिक्षार्थियों को ऐसे अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के घर संपर्क कर समस्या जानने एवं समझाइश देकर विद्यालय आने प्रेरित करने हेतु भेजती है। इस वर्ष भी (5) पांच विद्यालयों ने इस कार्य में प्रशिक्षार्थियों को लगाया। प्रशिक्षार्थियों ने जाना कि स्कूल नहीं आने का कारण माता–पिता का जागरूक न रहना, छोटे भाई–बहनों की देखभाल, आर्थिक स्थिति ठीक न होने से काम पर जाना, स्वयं विद्यार्थी की अनिच्छा है एवं पलायन प्रशिक्षार्थियों ने उन्हें समझाइश देकर विद्यालय आने हेतु प्रेरित किया एवं 80 तक सफलता प्राप्त किया कि विद्यार्थी विद्यालय में उपस्थित होने लगे।

(2) मतदाता जागरुकता– कुछ स्कूलों में प्रशिक्षार्थियों को मतदाताओं को जागरुक करने एवं सरकार की योजनाओं के विषय में जानकारी देने के लिए निर्देश दिया गया। प्रशिक्षार्थियों ने रिपोर्ट प्रस्तुत किया कि अपने मत के प्रति एवं सरकारी योजनाओं से लाभान्वित होने के प्रति 90 से भी ज्यादा लोग जागरुक हैं।

(3) स्वास्थ्य एवं स्वच्छता– 6 से 7 विद्यालयों में प्रशिक्षार्थियों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से संबंधित सर्वेक्षण किया एवं पाया कि गर्भवती महिलाओं को टीकाकरण नियमित हो रहा है, साथ ही स्वच्छता जागरुकता के लिए प्रशिक्षार्थियों ने गाँव के तालाब, सामुदायिक भवन, विद्यालय परिसर की सफाई आदि का कार्य किया एवं समुदाय को जागरुक किया।

(4) प्लास्टिक उपयोग के प्रति जागरुकता– तीन से चार स्कूलों ने समाज में प्लास्टिक उपयोग के प्रति जागरुकता जगाने का कार्य दिया। प्रशिक्षार्थियों ने प्लास्टिक थैले के स्थान पर कपड़े के थैले के उपयोग की समझाइश दिया। लोग सहमत हुए।

(5) समय का संतुलन– एक विद्यालय ने पढ़ाई के साथ कार्य करने वाले विद्यार्थी क्यों काम करते हैं एवं काम तथा पढ़ाई के साथ संतुलन कैसे बिठाते हैं, पर सर्वेक्षण किया। प्रशिक्षार्थियों ने पाया कि काम

करने वाले 66 छात्र घरेलू खर्च की पूर्ति हेतु काम करते हैं जबकि 33 छात्र स्वयं एवं पढ़ाई के खर्च हेतु काम करते हैं। काम करने वाले छात्रों ने बताया कि वे पढ़ाई के साथ काम करने के समय का सामंजस्य बिठा लेते हैं।

(6) वृद्धाश्रम एवं तेजस्विनी छात्रावास– दो विद्यालय ने प्रशिक्षार्थियों को उपरोक्त स्थानों पर भेजा। वृद्धाश्रम वर्तमान समाज के स्वरूप का चित्रण प्रस्तुत करता है। प्रशिक्षार्थियों ने वृद्धाश्रम जाकर ये जाना कि वृद्ध अपना घर छोड़कर आश्रम क्यों आये हैं। प्रशिक्षार्थी वहां एक हफ्ते में सफाई, भोजन बनाना एवं वृद्धों के मनोरंजन हेतु गायन एवं नृत्य का कार्यक्रम किया। प्रशिक्षार्थियों ने अपने विद्यार्थियों को यह संदेश देने का संकल्प लिया कि वृद्धाश्रम की आवश्यकता समाज में पड़नी ही नहीं चाहिए।

तेजस्विनी छात्रावास में ऐसी कन्याएँ रहती हैं जिनके माता–पिता कुष्ठ रोगी हैं। समाज से बहिष्कृत हैं। बच्चियों को वहाँ प्रातः काल योगा, स्कूल भेजना, ट्यूशन की व्यवस्था, संध्या प्रार्थना एवं अन्य गतिविधियों में निरन्तर संलग्न रखा जाता है। अनेक बच्चियाँ वहाँ से निकलकर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में नौकरी कर अर्थ उपार्जन करने लगी हैं औरसमाज के योग्य नागरिक के रूप में भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। इस तरह छात्राएं वहां स्वच्छता, स्वास्थ्य के संबंध में जागरुक होते हुए जीवन मूल्यों के साथ जीना सीख रही हैं। इस छात्रावास के संचालिका से अपने के साथ दूसरों को भी अपनों की तरह प्रेम करना सीखा, ऐसा प्रशिक्षार्थियों ने अनुभव किया सीखा।

(7) निखार कार्यक्रम के प्रति भी प्रशिक्षार्थियों ने समुदाय में पालकों को जागरुक किया।

इस तरह बी. एड. प्रशिक्षार्थियों ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण सोपान सामुदायिक कार्य को सम्पन्न किया।

नलिनी पाण्डेय
बी. एड. प्रभारी

Rain Water Harvesting

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर में जल संरक्षण करने हेतु दो वाटर हार्वेस्टिंग का निर्माण किया गया है। जिसमें एम. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थी एवं बी. एड. के विद्यार्थियों द्वारा संस्था के प्रांगण में दो अलग–अलग स्थानों पर पांच फुट लम्बा, पांच फुट चौड़ा व 7 फुट गहरा गड्ढों की खुदाई की गयी, जिसका आयतन 175 घन फुट है। प्रत्येक गड्ढों के बीच में एक प्लास्टिक का ड्रम (जिसके चारों ओर एक छिद्र किया गया है) रखा गया। ड्रम के निचले हिस्से सतह को काटकर गड्ढे के बीच में रखा गया। ड्रम के चारों ओर आधा–पौना आकार के ईंट के टुकड़ों से भरा गया तथा ड्रम के अन्दर भी एक ईंट छः से आठ टुकड़े कर भरा गया। इस ड्रम के ऊपर एक और ड्रम, जिसके चारों ओर भी छिद्र कर रखा गया। ऊपर के ड्रम में आधे भाग को एक ईंट के चार टुकड़े कर एवं गोटा बजरी से भरा गया एवं पाइप द्वारा ड्रम में ऊपर छिद्र कर जोड़ दिया गया।

डॉ. उषामणि
स. प्राध्यापक

सांस्कृतिक विभाग– प्रतिवेदन, सत्र 2019–2020

1. 46 वीं जवाहर लाल नेहरू गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शिनी 2019 के आयोजन में महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों के द्वारा दिनांक 17.10.2019 को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् शंकर नगर, रायपुर में सुआ नृत्य की शानदार प्रस्तुति की गयी।
2. महात्मा गांधी के 150 वें जन्म दिवस के अवसर पर 02 अक्टूबर 2019 को महाविद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन एवं रामधुन गायन किया गया।
3. महाविद्यालय में कौमी एकता समारोह जो 16 नवम्बर 2019 से 19 नवम्बर 2019 तक चला। समारोह में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।
4. महाविद्यालय 26 नवम्बर 2019 को संविधान दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया।
5. दिनांक 14 जनवरी से 17 जनवरी 2020 तक महाविद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगिता निकेतन वार प्रशिक्षार्थियों के द्वारा प्रस्तुत किया गया।
6. महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव अन्तर्गत ट्रेक एंड फील्ड के उद्घाटन समारोह दिनांक 06 फरवरी 2020 को मुख्य अतिथि माननीय शैलेष पाण्डेय, विधायक, बिलासपुर के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।
7. महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव अन्तर्गत ट्रेक एंड फील्ड के समापन समारोह दिनांक 10 फरवरी 2020 को प्रोफेसर आर. एस. दुबे, महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

Dr. Arun Kumar Poddar
(Cultural Department)

प्लेसमेंट कार्यक्रम

कैरियर प्लेसमेंट सेल के अन्तर्गत बी. एड. द्वितीय वर्ष को सीधी भर्ती के प्रशिक्षार्थियों के लिए 3 मार्च 2020 को प्लेसमेंट कार्यक्रम ब्रीलियंट पब्लिक स्कूल के द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें प्रशिक्षार्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार लिया गया एवं डेमो क्लास प्रशिक्षार्थियों के द्वारा दी गयी। इस प्लेसमेंट कार्यक्रम में 14 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया।

(डॉ. श्रीमती रजनी यादव)
प्लेसमेंट प्रभारी

छात्रवृत्ति विभाग– प्रतिवेदन

छ. ग. शासन द्वारा पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति महाविद्यालय की सीधी भर्ती के बी. ए. एवं एम. एड. के प्रशिक्षार्थियों को प्रदान की जाती है। संस्था में अध्ययनरत सभी वर्गों के लाभान्वित होने वाले वर्ष 2019–20 को बी. एड. प्रथम एवं द्वितीय एवं एम. एड. को सीधी भर्ती के प्रशिक्षार्थियों को निम्नानुसार छात्रवृत्ति प्रदान की गयी।

कक्षाएं	अनुसूचित जनजाति ST	अनुसूचित जाति SC	अन्य पिछड़ा वर्ग OBC
बी. एड. प्रथम एवं एम. एड. I, II Sem.	17	13	19
बी. एड. द्वितीय एवं एम. एड. III, IV Sem.	17	11	27
	34	24	46

डॉ. श्रीमती रजनी यादव
छात्रवृत्ति प्रभारी

प्रतिवेदन

एनसीईआरटी, नई दिल्ली, छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग, एस सी. ई. आर. टी. छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित 46वीं जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2019 में डॉ. अजीता मिश्रा, सहायक प्राध्यापक द्वारा नवाचार के अन्तर्गत लर्निंग थ्रू पेंटिंग का प्रदर्शन किया गया जिसमें बैगा जनजातियों की जीवन शैली के विभिन्न पहलुओं पर आधारित 07 तैल चित्र का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शित प्रत्येक तैल चित्र के विशेषताओं को कविता के माध्यम से दर्शाया गया। साथ ही संदर्शिका भी प्रस्तुत किया गया।

उक्त प्रदर्शनी में उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान की प्राचार्य डॉ. निशी भाम्बरी, प्राध्यापक, श्रीमती नलिनी पाण्डेय, स. प्राध्यापक डॉ. अजीता मिश्रा, श्रीमती प्रीति तिवारी सहित अन्य आचार्यगण तथा बी. एड. के प्रशिक्षार्थीगण उपस्थित रहे।

डॉ. अजीता मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छ. ग.)

क्षमता विकास कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का विवरण

1. जीवन कौशल शिक्षक प्रशिक्षण– दिनांक 17 दिसम्बर से 20 दिसम्बर 2019 तक।
   हितग्राही समूह– बिलासपुर जिले के 07 विकासखण्डों के 54 उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षक। कार्यक्रम प्रभारी– श्रीमती प्रीति तिवारी एवं श्रीमती नीला चौधरी।
   उपलब्धि– प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों को जीवन मूल्यों से शालेय पाठ्यक्रम से संबंधित करना एवं गतिविधियों को आयोजित करना जान पाए।
2. भाषा प्रवीणता शार्ट टर्म कोर्स– 16 दिसंबर से 20 दिसंबर 2019 तक।
   कार्यक्रम प्रभारी– डॉ. श्रीमती क्षमा त्रिपाठी, श्रीमती रीमा शर्मा एवं श्री राजेश गौराहा।
   हितग्राही समूह– निजी शिक्षा महाविद्यालय के 25 शिक्षक– प्रशिक्षक।
   उपलब्धि– आचार्य भाषा प्रवीणता के विभिन्न आयामों से अवगत हो पाएं।
3. भौतिक प्रायोगिक कार्यशाला– दिनांक 26 नवंबर से 30 नवंबर 2019 तक। कार्यक्रम प्रभारी– डॉ. श्रीमती उषामणी। हितग्राही समूह– शा. उ. मा. शाला के 30 विद्यार्थी एवं 10 शिक्षक।
   उपलब्धि– डिजिटल माध्यम से भौतिक अध्यापन व प्रायोगिक कार्य करने में सक्षम हुए।
4. कैरियर गाइडेंस शिक्षण प्रशिक्षण– 19 फरवरी व 20 फरवरी 2020 तक।
   कार्यक्रम प्रभारी– डॉ. रजनी यादव। हितग्राही समूह– शा. उ. मा. शाला के 30 शिक्षक।
   उपलब्धि– कैरियर मार्गदर्शन के विभिन्न आयामों से शिक्षक अवगत हो पाए।
5. कैरियर गाइडेंस कैम्प का आयोजन– 23 नवंबर 2019 शा.उ.मा. शाला, सिरगिट्टी तथा 27 नवंबर 2019 को शा.उ.मा. कन्या शाला, मस्तूरी में डॉ. रजनी यादव द्वारा आयोजित किया गया। क्रमशः 400 विद्यार्थी व 36 शिक्षक तथा 600 विद्यार्थी व 40 शिक्षक लाभान्वित हुए।
6. प्लेसमेंट कार्यक्रम– 03 मार्च 2020 को ब्रिलिएण्ट पब्लिक स्कूल द्वारा बी. एड. द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षार्थी के लिए आयोजित किया गया।

सामग्री निर्माण कार्य–

1. कक्षा प्रबंधन शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका– डॉ. श्रीमती निशी भाम्बरी, श्रीमती प्रीति तिवारी एवं श्रीमती नीला चौधरी।
2. जेण्डर सेन्सेडाइजेशन प्रशिक्षण संदर्शिका– डॉ. ए. के. पोद्दार, डॉ. सुदेशना वर्मा एवं श्रीमती प्रीति तिवारी।
3. हेप्पीनेस शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका– डॉ. निशी भाम्बरी एवं श्रीमती रीमा शर्मा।
4. शोध उपकरण निर्देशिका निर्माण।
5. डिजिटल ई– प्रायोगिक संदर्शिका– डॉ. रमणा राव एवं डॉ. उषामणि।
6. रिसर्च जनरल एवं न्यूज लेटर का प्रकाशन किया गया।

प्रतिवेदक
श्रीमती नीला चौधरी

विज्ञान विभाग–प्रतिवेदन

कल्पना चावला विज्ञान क्लब, उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

– श्रीमती प्रीति तिवारी

सत्र पर्यन्त विज्ञान क्लब में संचालित गतिविधियों हेतु शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) विज्ञान क्लब के विज्ञान क्लब के पदाधिकारियों का गुणानुक्रम के आधार पर मनोनयन किया गया है।

विज्ञान क्लब के पदाधिकारी–

अध्यक्ष– श्री छबि लाल राठौर **सचिव–** मोहिन्दर सिंह वर्मा

बी. एड. तथा एम. एड. के 300 तथा 99 कुल 399 प्रशिक्षार्थी विज्ञान क्लब के सदस्य हैं। महाविद्यालय में सत्र पर्यन्त विभिन्न शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सृजनात्मक गतिविधियां संचालित की जाती हैं।

शिक्षण अधिगम सामग्री कार्यशाला–

महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों के लिए दो दिवसीय दिनांक 13.09.2018 को शिक्षण अधिगम सामग्री कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें श्रीमती उषामणी तथा श्रीमती नीला चौधरी द्वारा विभिन्न अवधारणा से संबंधित सहायक सामग्री के संबंध में बताया गया, वातावरण को रोचक बनाने तथा पाठ को ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण करने की योग्यता का विकास प्रशिक्षार्थियों द्वारा किया गया। तत्पश्चात एक सप्ताह की कार्यशाला प्रशिक्षार्थियों के लिए रखी गई जिसमें प्रशिक्षार्थियों ने शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण किया।

विज्ञान दीप पत्रिका (हस्तलिखित संस्करण)–

महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों द्वारा विज्ञान विज्ञानदीप पत्रिका का हस्तलिखित संस्करण प्रस्तुत किया। जिसके अंतर्गत वैज्ञानिक जानकारियों, नवाचारों एवं खोजों से संबंधित विभिन्न आलेख संग्रहित किए गए।

विज्ञान बुलेटिन बोर्ड–

सत्र आरंभ से महाविद्यालय के बुलेटिन बोर्ड में विज्ञान से संबंधित समसामयिक घटनाओं पर आधारित बुलेटिन प्रतिदिन बोर्ड में निरीक्षण हेतु चस्पा किया जाता है।

विज्ञान संग्रहालय–

प्रशिक्षार्थियों द्वारा हरबेरियम फाइल का निर्माण एवं अन्य आवश्यक वैज्ञानिक उपकरणों का संग्रह प्रयोगशाला में है।

विज्ञान क्लब द्वारा आयोजित प्रतियोगिताएँ

(अ) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता–

महाविद्यालय में दिनांक 20.08.2019 को तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

एम. एड. प्रथम– श्री छबि लाल राठौर

द्वितीय– श्री जीवन लाल यादव

बी. एड. प्रथम– श्री आशुतोष यादव

द्वितीय– श्री प्रदीप उपाध्याय

(ब) प्रश्न मंच प्रतियोगिता– दिनांक 13.09.2019

बी. एड.

प्रथम– श्री कमल किशोर

द्वितीय– श्री वीनू जांगड़े

एम. एड.

प्रथम– श्री छबि लाल राठौर

द्वितीय– श्री जीवन लाल यादव

(स) सहायक शिक्षण सामग्री प्रतियोगिता–

बी. एड. एवं एम. एड. प्रशिक्षार्थियों के लिए आवश्यक शिक्षण अधिगम सामग्री प्रतियोगिता की गई जिसमें प्रशिक्षार्थियों ने सुंदर पोस्टर का निर्माण किया।

प्रथम– श्री सूर्य प्रकाश सोनी, एम. एड.

द्वितीय– श्री रवि शंकर, बी. एड.

(द) प्रोजेक्ट कार्य–

बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों द्वारा बिलासपुर के विभिन्न विद्यालयों में समुदाय के साथ प्रोजेक्ट कार्य किया गया। जिसमें से मुख्य इस प्रकार हैं–

1. शासकीय बहुद्देशीय उ.मा.वि. बिलासपुर– वाटर हार्वेस्टिंग
2. महारानी लक्ष्मीबाई उ.मा.वि. बिलासपुर– ड्राई एण्ड वेट वेस्ट
3. शास. कन्या उ.मा.वि. सरकण्डा, बिलासपुर– पिरयडिक टेबल
4. शास. बालक उ.मा.वि. सरकण्डा, बिलासपुर– वन टाइम यूस प्लास्टिक

राज्य स्तरीय विज्ञान मेला–

इस वर्ष राज्य स्तरीय विज्ञान मेला जो दिनांक 25.09.2019 से 28.09.2019 तक जिला सूरजपुर में सम्पन्न हुआ।

अतः उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छ.ग.) की कल्पना चावला विज्ञान क्लब के द्वारा सत्र पर्यन्त विभिन्न वैज्ञानिक क्रियाकलापों का क्रियान्वयन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. निशी भाम्बरी तथा विज्ञान प्रभारी श्रीमती प्रीति तिवारी, श्रीमती नीला चौधरी के समन्वय मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक किया गया। विज्ञान क्लब के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षार्थियों की रचनात्मक प्रवृत्तियों को विकसित करने की वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को मूर्तरूप देने का प्रयास किया गया।

राज्य स्तरीय मेला 2019–20 में महाविद्यालय के कल्पना चावला क्लब के बी. एड. एवं एम.

एड. के प्रशिक्षार्थियों ने सभी प्रतिस्पर्धा में डॉ. व्ही वी रमणा राव के मार्गदर्शन में सहभागिता की तथा उन सभी प्रतिस्पर्धा में पुरस्कार प्राप्त किया जो क्रमशः है–

प्रश्न मंच एम एड	सूर्यप्रकाश सोनी	प्रथम
	आशुतोष यादव	प्रथम
तात्कालिक भाषण	प्रदीप उपाध्याय	प्रथम
	छबिलाल राठौर	प्रथम
विज्ञान क्लब	छबिलाल राठौर	प्रथम
	जीवन लाल यादव	प्रथम
प्रश्न मंच बी. एड.	वीनू जांगड़े	द्वितीय
	कमल किशोर	द्वितीय
तात्कालिक भाषण	जीवन लाल यादव	तृतीय
प्रश्न मंच	जीवन लाल यादव	तृतीय
	छबिलाल राठौर	तृतीय
शिक्षण अधिगम सामग्री	रविशंकर	तृतीय

सभी पुरस्कृत प्रतिभागियों को महाविद्यालय की प्राचार्य तथा आचार्यों ने बहुत बधाईयाँ तथा आशीर्वाद दिया।

महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष बिलासपुर संभाग के चार जिले, बिलासपुर, मुंगेली, कोरबा, जांजगीर के विद्यालयों के किशोर वैज्ञानिकों हेतु जोन स्तरीय विज्ञान सेमीनार तथा विज्ञान मेला आयोजित किया जाता है। यहां से चयनित प्रतिभागी राज्य स्तर के मेले में सहभागिता देते हैं।

13 Quotes to Inspire you to be Successful

Presented by
***C.L. BARMAN,** B.Ed. II year*

1. Your limitaions- It's only your imagination
2. Push your self, because no one else is going to do it for you.
3. Sometimes later becomes never. Do it now.
4. Great things never come from comfort zones.
5. Dream it, Wish it. Do it.
6. Success doesn't just find you. You have to go out and get it.
7. The harder you work for something, the greater you'll feel when you achieve it.
8. Dream bigger. Do bigger.
9. Don't stop when you're tired. Stop when you have done.
10. Don't wait for opportunity. Creat it.
11. The key to success is to focus on goals, not obstacles.
12. It's going to be hard, but hard does not mean impossible.
13. Dream it. Believe it. Build it.

46 वीं जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2019

प्रतिवेदन

18.10.2019

46 वीं जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी 2019 का आयोजन छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा छ.ग. की राजधानी रायपुर में दिनांक 17 से 2019 तक किया गया।

उक्त प्रदर्शनी का शैक्षिक अवलोकन हेतु IASE बिलासपुर से प्राचार्य व बी. डी. प्रभारी के निर्देशन में महाविद्यालय के आचार्य गणों के साथ दो बस में शैक्षिक भ्रमण के लिए रायपुर 18 अक्टूबर को प्रात– 10 बजे रवाना हुए।

प्रदर्शनी में राष्ट्र के विभिन्न भागों से, राष्ट्रीय स्तर में चयनित बाल वैज्ञानिकों ने अपने विचारों, अपनी कल्पनाओं को एक माडल के रूप में शंकरनगर में प्रस्तुत किये।

मॉडल की प्रस्तुति को चार में प्रदर्शित किया जा रहा था।

Section A कृषि पर आधारित था। जिसमें कृषि की पद्धति को वैज्ञानिक कृषि पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया गया। बाल वैज्ञानिकों की कल्पना से स्पष्ट हो रहा था कि परम्परागत कृषि कार्य को छोड़कर प्रदूषण रहित कृषि किस तरह किया जा सकता है। जिसमें मशीनों का व जैविक खाद का अधिक से अधिक प्रयोग करके कृषि उत्पादन में वृद्धि हो सके व उत्पादन पौष्टिक हो आदि माडल द्वारा दिखाया जा रहा था।

Section B में पर्यावरण संतुलन किस तरह नियंत्रित किया जा सकता, माडल के द्वारा दर्शाया गया था। माडल अवलोकन व साक्षात्कार में माडल के द्वारा लाभों को विस्तारपूर्वक बतलाया जा रहा था।

Section C में गणित के विभिन्न गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट किया गया था, जिसे शिक्षण सहायक सामाग्री के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। जैसे त्रिभुज, चतुर्भुज, घन आदि आकृतियों को विभिन्न रंगों में दिखाया गया था तथा क्षेत्रफल की गणना व ऊंचाई की माप का आसान तरीका माडल के रूप में प्रदर्शित किया जा रहा था।

Section D में शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने व शिक्षा की पद्धति को सरलतया रूप में देने के लिए के SCERT के द्वारा विभिन्न मॉडल, पुस्तक DVD को प्रस्तुत किया गया। कक्षा 1ली से 12वीं तक की प्रत्येक विषय का DVD उपलब्ध रहा।

हमने इस एजुकेशनल ट्रिप पर बहुत सी बातें सीखीं जैसे सिस्टमेटिक ढंग से किसी भी मेले का आर्गेनाइजेशन करना, हमने मॉडल को क्रिएटिव रूप से देखा व एक शिक्षक के रूप में ये समझा कि हम कैसे अपने स्कूलों में बच्चों को मॉडल बनाने के लिए प्रेरित करेंगे व इनोवेटिव ब्रेन (मीटेलिटी) डेवलप करा सकेंगे।

किस प्रकार ग्रुप डिवाइड कर बच्चों में से ही हेड बनाकर रिस्पोन्सिबिलिटी देकर ट्रिप पर सिस्टेमेटिकली ले जा सकते हैं। एजुकेशनल ट्रिप के साथ–साथ सुचारू रूप से मेनेजमेंट करने की ट्रेनिंग मिली। हमेशा कुछ बड़ा आर्गेनाइज करते वक्त त्रुटि हो जाती है, जैसे Toilet Piobley जो Basic reauirement है, हम इस पर अवश्य ध्यान देंगे, पानी के लिए क्लियरट्रिप के लिए भी व्यवस्था रखेंगे।

ओवरॉल ये एजुकेशनल ट्रिप हमारे लिए फ्रुटफुल रहा व हम फुल एजुकेशन एंड मनाली बुस्ट Enthusiasm & Manally boost होकर घर को वापस हुए।

कॉलेज के संस्था प्रमुख प्राचार्य डॉ. निशि भाम्बरी बी. एड. प्रभारी प्रो. नलिनी पाण्डेय डॉ. श्रीमती अजिता मिश्रा, प्राध्यापक श्रीमती प्रीति तिवारी एवं श्री किफायत सर साथ में थे।

राष्ट्रीय स्तर के प्रदर्शनी से ही वैज्ञानिकों का जन्म होता है। ऐसा प्रदर्शनी को देखकर एहसास हुआ।

अंत में अपने ग्रुप से प्राचार्य व सभी आचार्यों को बहुत–बहुत धन्यवाद। जिनके छात्र छाया में ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ।

प्रस्तुतकर्ता
श्रीकान्त साहू
अंशु प्रवीन सोनी
श्रीमती धरमी इमालिया
बी. एड.

:: बधाई ::

मतदाता जागरुकता अभियान के तहत सम्पन्न प्रतियोगिता में सफलता हेतु 25 जनवरी 2020 को महाविद्यालय के आचार्य– डॉ. उल्हास व्ही. वारे, सहायक प्राध्यापक कैम्पस ऐम्बेसडर– (1) श्री दुष्यंत कुमार गौतम, बी. एड. प्रथम वर्ष
(2) श्री लीलाराम खूँटे, बी. एड. प्रथम वर्ष
को कलेक्टर, बिलासपुर द्वारा सम्मानित किया गया। महाविद्यालय उत्कृष्ट कार्य हेतु बधाई एवं शुभकामनाएं देता है।

कितने जुड़े–कितने बिखरे

मोबाईल पर झूठ बोलते लोगों को आपने देखा होगा। खड़े सड़क पर होंगे और कहेंगे घर पर हूँ। इसी तरह मोबाईल संदेश सेवाओं ने लोगों को बेअदब बना दिया है संवाद के समूह बनाए जाते हैं। इसमें कौन बड़ा है, कितना अनुभवी है यह जाने बगैर हर तरह के संदेश महज राय का नाम लेकर डाल दिये जाते हैं। बड़ों की शोहबत में जैसी बातें करना या हास–परिहास किस्से सुनना वर्जित था, वो अब बड़े मजे से समूह में डाल दिये जाते हैं। आपत्ति करने वाला कौन है? कुतर्क और तर्क के बीच अब कोई फर्क नहीं है। जिसे भला न लगे, वो समूह छोड़ने को स्वतंत्र है।

सामने मिलकर बातें केवल वे लोग कर पाते हैं, जो मोबाईल पर नहीं बतियाते। लेकिन हम जब भी जिससे भी मिलते चर्चा में कम से कम फीसदी हिस्सा मोबाईल पर साझा किये वीडियो और संदेशों से जुड़ा होता है। कुछ लोग तो बात करते हैं, मोबाईल की ही चीजें दिखाते–पढ़ाते सुनाते रहते हैं। वैसे भी बार–बार फोन पर बातें करते रहना मुलाकात की अहमियत कम कर ही चुका है। जहां तक मोबाईल की बात है, तो यह आपके लिये हर वक्त हरेक के लिए हाजिर रहने का फरमान है जिसका फोन आपने नहीं उठाया वो तो ताने सुनायेगा जरुर। ऐसे रवैये के चलते कई लोगों का फोन न उठाना ही बेहतर लगने लगता है।

इसे जुड़ना कैसे कहा जाए? चलते–फिरते फोन का फायदा यह था कि समय–समय पर खैर–खबर देते रहते। सब मुश्किल के वक्त पुकार सकते। संदेशों में शुभकामना और हितकारी सूचनाएं साझा होतीं। लेकिन ढेर सारी बातें खत्म हैं और स्वीकार्य भी। बात कर लेने को ही सब कुछ मान लेना भी आम है। मिलने–मिलाने इंतजार करने छुट्टियों में योजनाएं बनाने के मैसेज जाते रहे। तकनीक में इतना करीब होना कि एक–दूसरे की अहमियत ही खत्म हो जाए, तकनीक नुकसान है तकनीक ने साबित कर दिया है कि कद्र खो देता है बार–बार का मिलना।

फोन ने हमसे अपनों का स्पर्श छीन लिया तकनीक के तारों ने अपनेपन के धागों को बेरंग कर दिया है। साल में एक बार घर आए भाई–बहनों के साथ रात–रात भर जागकर बातें करने का जो मजा था, फोन पर कहां? सिर पर बड़ों के हाथ की गर्माहट किस मोबाइल स्क्रीन से सम्प्रेषित हो सकती है... दादी के चेहरे की झुर्रियों में छुपी मुस्कानों को खुद न देखा तो क्या खाक जिन्दगी के मायने समझे।

परिवार के बच्चों को मोबाइलों की तस्वीरों में नहीं, मिलकर बड़े होते देखें। वक्त ने अपनों पर क्या रंग लगाया, क्या बेरंग किया है, इसका अंदाजा मोबाइल से नहीं हो सकता। बातों में मुलाकात न करें। मिलकर बिताएं।

प्रत्येक कार्य समय से होता है इसलिए उतावलापन नहीं करना चाहिए जिस प्रकार वृक्ष में चाहे कितना पानी डाला जाए परन्तु वह समय पर ही फल देता है।

– आकांक्षा जायसवाल, बीएड प्रथम

शैक्षणिक भ्रमण

दिनांक 11.02.2020 से 14.02.2020

"अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक बेकन का कहना है कि युवा वर्ग के लिए भ्रमण शिक्षा का अंग है, जबकि बड़े लोगों को इससे अनुभव मिलता है। भ्रमण दृश्य सामाग्री का ही एक रूप है। इसलिए भ्रमण शिक्षण का उपयोगी साधन हो जाता है। परन्तु भ्रमण की उपादेयता उसके समुचित क्रियान्वयन पर निर्भर है।"

शिक्षा शब्द कोष में शैक्षिक भ्रमण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है– विद्यालय/ महाविद्यालय भ्रमण शैक्षिक उद्देश्य के लिए विद्यालय/ महाविद्यालय द्वारा व्यवस्थित भ्रमण है, जिसमें छात्राध्यापक उन स्थानों को जाते हैं जहाँ शिक्षण सामाग्री अवलोकित हो सके और उनका क्रियात्मक परिस्थितियों में प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन किया जा सके।

उपरोक्त अर्थों के आधार पर निश्चित किया जा सकता है कि निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति अनिवार्य होना चाहिए–

उद्देश्य– भ्रमण के द्वारा छात्राध्यापकों का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना।

– छात्राध्यापकों की स्वयं की तर्कशक्ति तथा चिंतनशक्ति का विकास करना।

– छात्राध्यापकों के विविध प्रकार के भाषा, रीति–रिवाज, रहन–सहन तथा संस्कृति का ज्ञानात्मक एवं क्रियान्वयन विकास करना।

– छात्राध्यापकों में सामूहिकता एवं सामाजिकता के विकास के साथ–साथ अनुशासन, संगठन, नेतृत्व, सह सम्बन्ध, सर्व धर्म समभाव आदि गुणों का सहज विकास करना है।

उपरोक्त निहित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु हमारे महाविद्यालय उन्नत शिक्षण अध्ययन संस्थान बिलासपुर में प्राचार्य श्रीमती निशी भाम्बरी एवं बी. एड. प्रभारी श्रीमती नलिनी पाण्डेय मैडम के दिशा–निर्देश एवं कुशल नेतृत्व में सत्र 2019–20 में दिनांक 11.02.2020 से 14.02.2020 तक शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

किसी भी कार्य की सफलता की निश्चितता उस कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व बनाई गई कार्य–योजना टोली प्रभारी– श्रीमती पाण्डेय मैडम के निर्देशानुसार शैक्षिक भ्रमण को दो हिस्सों में बाँटकर तैयारी करायी गई–

(1) कार्य योजना

(2) क्रियान्वयन

कार्ययोजना– यह यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु होता है। प्रभारी एवं सहयोगियों के द्वारा आभासी (वर्चुवल) यात्रा का प्रारूप तैयार किया जाता है ताकि वास्तविक यात्रा के समय कोई त्रुटि, आवश्यकता या कमी महसूस न हो। जिसके लिए निम्न कार्य किया गया–

* शैक्षणिक भ्रमण के लिए विमर्श के बाद स्थान चयन।
* उच्चाधिकारियों से अनुमति/ सहमति प्राप्त करना।

* इच्छुक छात्राध्यापकों की सूची तैयार करना।
* छात्राध्यापकों/ पालकों से सहमति/ अनुमति पत्र भरवाना
* अंतिम सूची तैयार करना
* अंतिम सूची की संख्या के आधार पर यातायात के साधन (बस/रेल) की व्यवस्था करना। यदि यात्रा का साधन रेल हो तो रेल वाणिज्य प्रबंधक से ब्लाक बुकिंग/ यात्रा/ फ्रेस छात्रों हेतु छूट प्रपत्र की मांग करना। तत्पश्चात् टिकट काऊंटर में आने एवं जाने का टिकट प्राप्त करना।
* यात्रा गंतव्य स्थान में ठहरने, खाने एवं स्थानीय स्तर के भ्रमण हेतु साधन की व्यवस्था करना।
* रास्ते के भोजन/ नाश्ता की व्यवस्था करना/ प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था करना। मनोरंजन/ खेल के साधन की व्यवस्था करना। फोटोग्राफर की व्यवस्था करना।
* सभी छात्राध्यापकों को ग्रुप में बाँटकर ग्रुप लीकर का चयन, जिसमें सम्पूर्ण जवाबदारी ग्रुप लीडर को देना। सभी की लगेज में एक ही कलर का रीबन एवं एक ही कलर का कैप प्रदाय करना। सम्पूर्ण व्यवस्था के बाद यात्रा प्रारम्भ।

क्रियान्वयन– दिनांक 11.01.2020 को सभी छात्राध्यापक एवं आचार्यगण रात 8.30 बजे रेलवे स्टेशन पहुंचना एवं व्यवस्थित होकर यात्रा प्रारम्भ करना।

प्रथम दिवस– 12.02.2020– IASE भोपाल

– DIET भोपाल

चूंकि यह संस्था हमारी संस्था जैसी हो अकादमिक संस्था है इसलिए यहाँ के भवन, बैठक व्यवस्था, सभाकक्ष प्रार्थना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

मानव संग्रहालय

हमारे पूर्वजों (आदिवासी संस्कृति) के रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, खेल के साधन के बारे में विस्तृत जानकारी से लाभान्वित हुए।

द्वितीय दिवस– 13.02.2020– वन्य प्राणी पार्क यात्रा– विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तु के रहन–सहन के बारे में जानकारी प्राप्त हुए।

बौद्ध स्तूप साँची

बौद्ध स्तूप साँची के भ्रमण से बौद्ध संस्कृति, स्तूप, रहन–सहन, खान–पान की जानकारी प्राप्त हुआ।

उदय गिरि पर्वत

पहाड़ी के ऊपर स्थित उदय गिरि पर्वत में देवि के विभिन्न रूपों का दर्शन, खोह, कन्दराओं का दर्शन हुआ साथ ही ऊपर निर्मित प्राचीन भग्नावशेष के बारे में जानकारी प्राप्त किये।

Peeple मॉल

पहाड़ एवं विश्व के सभी अजूबों के अपने में समेटे हुए मॉल में घूमने एवं देश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर को एक ही स्थान में देखने का अवसर प्राप्त हुआ जो रोमांचित कर रहा था।

तृतीय दिवस– 14.02.2020– NCERT (क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् का अवलोकन एवं उसके कार्यविधि को करीब से जानने का मौका मिला। प्रोफेसर के द्वारा कक्षा में प्रोजेक्टर के माध्यम से समझाया गया। यह पहला अनुभव था, जो आगे चलकर लाभदायी होगा।

साइंस संग्रहालय भोपाल

यह संग्रहालय अपने आप में अद्‌भुत है यहाँ विभिन्न प्रकार के विज्ञान, गणित, सा. विज्ञान, भूगोल आदि विषयों पर विषय विशेषज्ञों के द्वारा प्रयोगात्मक क्रियाविधिको समझाया गया।

थ्री–डी फिल्म भी दिखाई जो अत्यन्त ही रोमांचकारी एवं ज्ञानवर्धक था।

वर्तमान समय में भ्रमण का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व है। अतीत काल में रुसो तथा पेस्टालॉजी जैसे महान दार्शनिक एवं शिक्षा शास्त्रियों ने भी भ्रमण को शिक्षा में प्रमुख स्थान दिया था। भ्रमण दृश्य सामाग्री का ही एक रूप है, इसलिए भ्रमण को शिक्षण का उपयोगी साधन माना जाता है।

शैक्षणिक भ्रमण अपने उद्देश्य एवं महत्व को रेखांकित करते हुए सम्पन्न होना चाहिए तभी इसकी उपादेयता है। हमारे महाविद्यालय द्वारा आयोजित शैक्षणिक भ्रमण पूर्णतः अपने महत्व एवं उद्देश्य में सफल रहा।

कृष्णानंद चौबे
श्रीमती अनुभा साहू
बी. एड. द्वितीय वर्ष
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

" कल को भूल आज की सोचें " (चिंतन)

प्रस्तुतकर्ता– छोटेलाल बर्मन
बी. एड. द्वितीय वर्ष

हर दिन नया है यही मानने वाले इस जीवन का आनंद उठाते हैं। पहले की न केवल बुरी बल्कि अच्छी घटनाओं को भी भुला दें। कल जो बीत गया वह लौट कर नहीं आयेगा। अपनी असफलता को ही नहीं वरन् सफलता को भी भूल जाएं। यही जीवन के आनंद को उठाने का नियम है यदि कल हुए अपमान का स्मरण किया तो आज भी तकलीफ देगा अगर कल हुए सम्मान को दिमाग में संजोया तो आज कर्म करने के लिए मन प्रवृत्त नहीं होगा कल अपने दैहिक कर्म से जो सांसारिक उपलब्धि पाई उस पर गर्व किया तो फिर आज कोई अच्छा कर्म नहीं कर सकते अगर कल कहीं कोई नाकामी मिली तो उसका स्मरण किसी नये कार्य में मन नहीं लगने देगा। कहने का मतलब यह है कि अपनी स्मृतियों से जितना दूर रहे उतना ही अच्छा है। वह आनंद दे या कष्ट पर अगले कार्य के लिए व्यवधान पैदा करती है। मनुष्य जीवन में स्वच्छंद ढंग से कार्य करने का जो अवसर मिलता है वह परमात्मा की कृपा समझना चाहिए। सुख–दुःख, मान–अपमान और सफलता–असफलता केवल दृश्य मात्र हैं और उसे दृष्टा की तरह ही देखें तो उनका अच्छा प्रभाव अहंकार आने नहीं देता और बुरा विचलित नहीं करता।

"प्रेरक कहानी"

राजा भद्रसिंह प्रजापालक एवं न्यायप्रिय थे। नैतिक और जीवन मूल्यों के प्रति बहुत जागरूक थे किंतु उनका पुत्र महाउत्पाति, विद्रोही, उद्दंड एवं निर्दयी था। वह प्रतिदिन नए–नए उपद्रवों से लोगों को पीड़ित किए रखता था।

राजपुत्र होने के कारण उसकी शिकायत करने की हिम्मत कोई नहीं कर पाता था। इसका फायदा उठाकर वह निरंकुश होता गया, लेकिन राजा तक यह बात पहुंच ही गई।

राजा ने उसे सुधारने के अनेक उपाय किए।

शिक्षाशास्त्री, तर्कशास्त्री एवं मनोचिकित्सक कोई भी उसे सुधार न सका। उसके उत्पीड़न से लोग त्राहि–त्राहि करने लगे। राजा बहुत चिंतित हो चुके थे। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

सौभाग्य से कुछ दिन बाद औषधाचार्य नामक एक ऋषि वहां आ गए। राजा की समस्या को सुनकर राजपुत्र को रास्ते पर लाने का उन्होंने भरसक प्रयास किया किंतु परिणाम कुछ नहीं निकला।

एक दिन औषधाचार्य ऋषि उस उद्दंड राजपुत्र के साथ उद्यान में भ्रमण कर रहे थे, तभी उस बालक ने एक नन्हें पौधे से पत्तियां तोड़कर मुंह में डालकर चबानी शुरू कर दी। पत्तियां बहुत कड़वी थीं। क्रोध में आकर उसने पौधे को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। इस हरकत से ऋषि बहुत नाराज हुए और उसे डांटने लगे।

उद्दंड बालक बोला कि इसकी पत्तियों ने मेरा सारा मुख कड़वा कर दिया है। इसीलिए मैंने इसे जड़ से उखाड़कर फेंक दिया।

गंभीर भाव से ऋषि बोले– बेटा ध्यान रखो, यह तो औषधि का एक वृक्ष है। इसके पत्तों के अर्क से बनने वाली औषधि अनेक असाध्य रोगों को दूर करती है, इसीलिए राजोद्यान में इसे लगाया गया है। अजीर्ण आदि पेट के रोगों के लिए इसका सेवन बहुत लाभप्रद होता है, जो छोटे–छोटे बालकों के स्वास्थ्य को बचाने का माध्यम बनती है।

ऐसी अमूल्य औषधि का तुम अपनी नासमझ बुद्धि से नाश करने में लगे हो, तुम्हें लज्जा आनी चाहिए। इसकी कड़वाहट तुम्हें पसंद नहीं आई लेकिन तुमने अपने कड़वे स्वभाव के बारे में कभी सोचा? तुम्हारे अनैतिक एवं उद्दंड स्वभाव की कड़वाहट से लोगों का कितना अहित हो रहा है, इसका तुम्हें पता है? तुम्हारे पिता का प्रजा में अपयश हो रहा है।

ऋषि के वचन उस उद्दंड बालक के हृदय को छू गए। उसी क्षण उसके जीवन की दिशा बदल गई। अब वह अपने नीतिवान पिता का वास्तविक उत्तराधिकारी बनने लायक हो गया।

संकलनकर्ता– मोहिंदर सिंह वर्मा
एम. एड. चतुर्थ सेमेस्टर

"जीवन विद्या"

"जीवन विद्या शिविर" दिनांक 13.11.19 से 19.11.19 तक शासकीय उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर

महाविद्यालय में बी. एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षार्थियों के लिए दिनांक 13.11.19 से 19.11.19 तक पाँच दिवसीय जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के प्रबोधक श्री पवित्र चौधरी, श्री संजय पाण्डेय, श्री संदीप शर्मा एवं महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. यू. व्ही. वारे रहे। जीवन विद्या के बारे में प्रकाश डाला गया। शिविर का उद्देश्य संवेदना और संचेतना के बारे में बताना था। श्री चौधरी जी ने कहा कि– हमें समझना होगा कि शरीर नश्वर है। मैं शरीर मात्र नहीं हूं जो एक दिन नष्ट जायेगा। शिक्षा शरीर पर ही कार्य करने वाली वस्तु नहीं है, यह मन पर भी काम करने की प्रक्रिया है. बिना विचार के मनुष्य काम नहीं कर सकता। मनुष्य की सम्पूर्णता शरीर और विचार दोनों के होने पर है। हम सुख, शांति, संतोष और आनंद को शरीर में देखते हैं इसलिए कहते हैं कि शांति के लिए युद्ध जरूरी है। यदि हम मन (विचार) में देखें तो शांति के लिए युद्ध नहीं, समझ जरूरी है। इस शिविर का उद्देश्य अपने आप को समझना है। देहात्म वाली बुद्धि से स्वयं को नहीं समझ सकते। अपनी संचेतना ही हमें वास्तविक बनाती है। अपने आप को समझना ही आत्मज्ञान है। शिक्षा में हम मनोगत बात को ध्यान नहीं देते। अव्यक्त (मन) और व्यक्त (शरीर) दोनों है तब सह–अस्तित्व है। चेतना को वस्तुगत नहीं बताया जा सकता परन्तु जब व्यक्ति बोलता है कि मैं चैतन्य हूं, इसका मतलब है कि चेतना है। अतः संवेदना शरीरगत है जो परिवर्तनशील है और संचेतना विचार है। प्रणाम करने पर शारीरिक क्रिया के अन्दर सम्मान छिपा रहता है, वह सम्मान ही मूल्य है। मूल्य को समझने के लिए चैतन्य इकाई को समझना जरूरी है। कथात्मक जगत परिवर्तनशील है, जो इन्द्रियों को संवेदित करता है। विचार गठन पूर्ण परमाणु है। गठनशील परमाणु में परिवर्तन नहीं होता, निरन्तरता बनी रहती है और वही शून्य है जो हमें दिखाई नहीं देता। इसे अनुभव करने के बाद ही सुख, शांति, संतोष और आनंद है। अतः परिवर्तित वस्तु का अध्ययन मूल्य नहीं, नित्य वस्तु का अध्ययन ही मूल्य का अध्ययन है।

प्रकृति में चार अवस्थाएं हैं– (1) पदार्थ (2) प्राण (3) जीव और (4) ज्ञान। पदार्थ, प्राण अर्थात् पेड़, पौधे, जीव अर्थात् पशु, पक्षी इन तीनों में सामंजस्य है क्योंकि ये जो कुछ दूसरे से प्राप्त करते हैं उन्हें किसी न किसी रूप में वापस कर देते हैं किन्तु चौथी अवस्था ज्ञान अर्थात् मानव उपरोक्त तीनों अवस्थाओं से अपनी आवश्यकता से अधिक प्राप्त कर एकत्रित करता है, यहीं पर समस्या है अतः मनुष्य प्रकृति को नुकसान कर रहा है। इसे समझना बहुत जरूरी है।

डॉ. उल्हास व्ही. वारे
सहायक प्राध्यापक
"जीवन–विद्या प्रभारी"

" संदेश "

संकलनकर्ता– श्रीमती रेशमा बेक
बी. एड. द्वितीय वर्ष

मिट्टी का मटका और परिवार की कीमत
सिर्फ बनाने वाले को पता होता है।
तोड़ने वाले को नहीं।
संघर्ष पिता से सीखिए
बाकी सब दुनिया सिखा देगी।
जिंदगी बदलने के लिए लड़ना पड़ता है
और आसान करने के लिए समझना पड़ता है
वक्त आपका है, चाहे तो सोना लो,
चाहे तो सोने में गुजार दो

अगर कुछ अलग करना है तो
भीड़ से हटकर चलो
भीड़ साहस तो देती है मगर
पहचान छीन लेती है।
मंजिल न मिले तब तक हिम्मत मत हारो
और न ही ठहरो, क्योंकि
पहाड़ से निकलने वाली नदियों ने
आज तक के रास्ते में किसी से नहीं पूछा कि
' समन्दर कितना दूर है '

" संदेश "

श्रीमती आभा कुमारी
बी. एड. द्वितीय वर्ष

किसी नगर में एक राजा रहा करता था। राजा का एक राजकुमार था जो गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण कर रहा था। उसकी शिक्षा पूरी होने पर गुरू उसे राजमहल ले गए। उन्होंने राजा को प्रणाम किया और बोले आपका पुत्र अब सब प्रकार की शिक्षा को ग्रहण कर राजा बनने के काबिल हो चुका है। महाराज अपने पुत्र को इतनी कम उम्र में राजा बनने के काबिल होते देख काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने गुरु को बहुत सारे उपहार भेंट किये और स्वर्ण रथ से उन्हें विदा किया।

दूसरे दिन गुरू फिर दरबार में हाजिर हुए। राजा के पूछने पर उन्होंने कहा– हे राजन्! राजकुमार को एक बहुत ही जरूरी शिक्षा देनी शेष है। उन्होंने गुरू की बात का बुरा न मानकर राजकुमार को साथ भेज दिया।

आश्रम में पहुंचकर गुरूजी ने छड़ी उठाई और उसे पीटना शुरू कर दिया फिर क्या था? मारे दर्द के वह जमीन पर गिर गया और तड़पने लगा। रोते–रोते उसने गुरू से रहम की भीख माँगी। इस पर गुरूजी ने छड़ी चलाना छोड़ दिया।

राजकुमार के शांत होने पर गुरूजी ने कहा– बेटे अभी तुम्हारी यह शिक्षा बाकी थी तुम पढ़ने में इतने तेज और समझदार थे कि तुम्हें कभी पीटने का मौका ही नहीं मिला। कल जब तुम महाराज बनोगे, लोगों की छोटी–मोटी गलतियों की वजह से कोड़े लगवाओगे तो उसका दर्द तुम्हें भी महसूस हो, इसलिए मैंने तुम्हें पीटा। नहीं पीटता तो दर्द का अनुभव तुम्हें कैसे होता? गुरूजी की इस तालीम को भेंट समझकर राजकुमार गुरू के पाँव पर गिर पड़ा और कभी भी लापरवाही से न्याय न करने की कसम खाई।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध रचना गीतांजलि की कविताएं

" चीन्हे–अनचीन्हे "

कितने चीन्हे,
अचीन्हे किये।
घर कितने ही,
घर से अंजान किये

बंधु! दूर को निकट किया।
पराये को माना अपना भाई सा।
पुराना निवास छोड़कर, जब जाता मैं,
यही सोच घबराता,
जाने क्या हो तब?
किन्तु तुम पुरातन हो, नित नूतन में,
यही सत्य में जाता बार–बार भूल।

बंधु! दूर को निकट किया.
पराये को माना अपना भाई सा।
जीवन और मरण में,
सम्पूर्ण भुवन में,
जहां कहीं भी, जब भी अपना लोगे।
ओ, जनम–जनम के जाने–पहिचाने!
सबसे परिचित मुझे तुम्हीं कर दोगे!
तुम्हें जान लूं तो कोई न रहे पराया।
और न कहीं कोई डर।
सबके सम्मिलित रूप में तुम जागे।
सदा तुम्हारा दरस मुझे हो, प्रभुवर!
बंधु! दूर को निकट किया।
पराये को अपना भाई–सा!

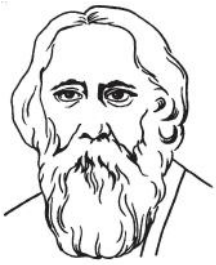

" शेष "

जी में आता है, यही शेष है।
किन्तु कहां होता है शेष।
तेरी राजसभा का फिर से
आ जाता आदेश।

नये गीत से, फिर नये राग से
नये सिरे से जागते प्राण से
फिर से जाना पड़ता है, सभा में
जाउं कहां मैं लीक घर
ज्ञात नहीं मुझे मेरा उद्देश्य।
तेरी राजसभा में फिर से
आ जाता है, आदेश।

संध्या की स्वर्णिम आभा में,
मिला तान से तान,
शेष पूर्वी में पूरे कर लेता गान।
गहन रात के गंभीर स्वर में,
जीवन जाता है, भर।
किन्तु नयनों में नींद का नहीं लेश है।
जी में आता है, यहीं शेष है।

संकलनकर्ता– क्रूस छाया टोप्पो
बी. एड. द्वितीय वर्ष

चिंतन

"गिरता मानव मूल्य"

अनारकली भास्कर
एम. एड. (प्रथम वर्ष)

इतिहास गवाह है, हमारा भारत प्राचीन काल से ही सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक मूल्यों के क्षेत्र में सबसे ऊंचा स्थान रखता है। आज भी हम उन संस्कृतियों को समेटे हुए, शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक उन्नति करते जा रहे हैं। हमारा दृष्टिकोण हर क्षेत्र में व्यापक हो रहा है।

मैं आप सबसे पूछना चाहती हूं क्या कारण है फिर मानव मूल्यों के गिरने का? हर रोज एक अनहोनी, एक अप्रिय घटना हिंसा, चोरी, मानव संहार, बलात्कार जैसी दिल को दहला देने वाली घटना सामने क्यों आती है?

इसका जिम्मेदार कौन है? कब ये घटनायें थमेंगी? कब भ्रूण हत्या रुकेगी? कब एक–एक बहु–बेटी सुरक्षित रहेगी। कब हम महात्मा बुद्ध के इस भारत में स्वतंत्र रूप से श्वांस ले सकेंगे? **आखिर कब?**

कहीं ना कहीं इन घटनाओं के जिम्मेदार हम ही हैं, हम लगातार आधुनिकता की ओर दौड़ रहे हैं, आगे बढ़ने की चाह में नैतिकता को भूलते जा रहे हैं। उन बूढ़े माँ–बाप को बेसहारा छोड़े जा रहे हैं। अपने परिवार, अपना देश, अपनी संस्कृति से मुंह मोड़ते जा रहे हैं।

"चारों तरफ लगी है आग
अब समय आ गया है जाग मानव जाग"

हम शिक्षा के क्षेत्र में वर्षो से जुड़े लोग हैं। पर मूल्यों की स्थापना में हमारा योगदान क्यों हो। यहीं से हम मानव मूल्य के बीज बो सकते हैं। इसकी शुरुआत घर से तथा प्राथमिक स्तर से ही प्रारंभ हो। छात्रों में संस्कार डालें। उन्हें अच्छे बुरी की पहचान कराने महापुरुषों की जीवनी सुनाएं। परिवार के साथ रहने की सीख दें। हर बेटी का सम्मान करना सिखायें। हर दिन कक्षा से पहले और या बाद में जीवन मूल्य पर चर्चा करें।

"रोती है आंखें देखो
बेबस है जिंदगी
हम कभी ऐसे ना थे
कहां से आयी समाज में ये गंदगी।"

चिंतन का विषय है–

आज हमारा समाज युवा वर्ग किस दिशा में जा रहा है? बच्चे हिंसात्मक प्रवृत्ति के होते जा रहे हैं, इंसानियत देखने को नहीं मिलती है। समाज में जमाखोरी, नशाखोरी, अपराध सर चढ़कर बोल रहा है, गंदी सोच पनपती जा रही है। इन सबको दूर करने के लिए दोस्तों मिलकर कदम उठाओ। ज्ञान की रौशनी में अपने आपको देखो और खुद ही सवाल करो पहले हम कहाँ थे? आज हम कहाँ हैं? हमारा कल कैसा होगा? क्या करें हम कैसे जीवन मूल्य को बढ़ायें? कैसे अपने अच्छे और सादा जीवन उच्च विचार जैसे सोच को बढ़ायें? कैसे अपने अच्छे और सादगी पूर्ण व्यवहार से लोगों को प्रभावित करें।

क्योंकि हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम अपने देश और समाज को एक नयी दिशा दिखायें। सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, जीवन मूल्यों का

विकास कर कैसे अपने देश को उन्नति के शिखर पर ले जायें क्योंकि–

मूल्यों का व्यक्ति के आचरण, व्यक्तित्व तथा कार्यों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। इसलिए जीवन मूल्य सीखे जाते हैं।

जीवन मूल्य के बारे में हम सोचते हैं तो पाते हैं कि इसके भी दो पक्ष हैं– एक सकारात्मक मूल्य जैसे– अहिंसा, शांति, धैर्य तथा हमारे मन के नकारात्मक (पक्ष) जैसे– हिंसा, अन्याय, कायरता ने सकारात्मक पक्ष को ढ़क लिया है। हमारे जीवन के सकारात्मक पक्ष मूल्य को बढ़ाने के लिए सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक भौतिक, सौंदर्यात्मक मूल्य, मनोवैज्ञानिक और मानव मूल्यों को जानना होगा।

सामाजिक मूल्य – अधिकार, कर्त्तव्य, न्याय
नैतिक मूल्य – न्याय ईमानदारी
आध्यात्मिक मूल्य – शांति, प्रेम, अहिंसा
भौतिक मूल्य – भोजन, मकान, वस्त्र
सौंदर्यात्मक मूल्य – प्रकृति कला एवं मानवीय जीवन के सौंदर्य
मनोवैज्ञानिक मूल्य – प्रेम दया
मानव मूल्य – नैतिक मूल्य आध्यात्मिक मूल्य

इसी तरह जीवन मूल्यों को अगर कार्य के आधार पर देखें तो

राजनैतिक मूल्य – ईमानदारी, सेवा भाव
न्यायिक मूल्य – सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता
व्यावसायिक मूल्य – जवाबदेही, जिम्मेदारी, सत्य निष्ठा

इन जीवन मूल्यों को जीवन में उतारें। मानव बनें।

अतः स्पष्ट है कि जीवन शैली एवं मानवीय मूल्य विश्व बंधुत्व की भावना का दर्पण है। यह दर्पण पवित्रता, पारदर्शिता और संपूर्णता का अक्स हमें दिखाता है। इस अक्स की आकृति के बिंदु छात्र, शिक्षक, अभिभावक हैं जो कि पर्यावरण संरक्षण,महिला सशक्तिकरण, लोकतंत्र तथा मानवाधिकारों की रक्षा की रूपरेखा द्वारा निर्मित है। हमारी जीवन शैली और मानवीय मूल्य देश की संस्कृति, परम्पराओं पर आधारित है। वर्तमान समाज में परिवर्तन का जब वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया तो हम कहीं ना कहीं अपनी जीवन शैली में प्राचीन मूल्यों और आदर्श परंपराओं को बचाने हेतु प्रति प्रयासरत हैं। क्योंकि जो हम प्राप्त करते हैं, उससे हमारा जीवन बनता है तथा जो हम देते हैं उससे दूसरों का जीवन बनता है, अतः अपने साथ–साथ दूसरे का जीवन बनायें। इसके लिए खुशी व ईमानदारी से काम करेंगे तो खुशी और सफलता दोनों मिलेगी। यह देखा जाता है कि आपका जुनून आपसे वह करवाता है जो आपको करना चाहिए। अतः इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जीवन शैली में मूल्यों की प्रासंगिकता का विश्लेषण आवश्यक है। हमें एक संकल्प के साथ बदलते सामाजिक परिवेश के अनुरूप मानवीय मूल्य शिक्षा आधारित कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करना चाहिए।

'मानवता का मन में दिया जला लो
भारत के वासी हो तुम अपनी संस्कृति बचा लो।'

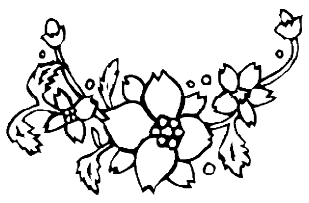

" शिवाजी... "

शिवाजी को समर्पित
जैसा नाम तथा गुण के धनी

ऋषि तुल्य मनिषी, पर्यावरण हितैषी
कला प्रेमी, प्रखर ज्ञानवान, एक नेक इंसान
कुशल शिक्षक, अभिभावक,
हो जाते सब पे मेहरबान
व्यक्तित्व के इनके कई आयाम
शब्दों में भला कैसे हो बखान
शिवाजी कुशवाहा बड़े महान
सहिष्णुता की अनुपम मूर्ति
सद्भावनायुक्त परमात्मा की दिव्य कृति
व्यवहार में इनकी समग्रता
कार्य में झलकती सुन्दरता निहित एकाग्रता
"जियो और जीने दो" को किया इन्होंने चरितार्थ
हम सब उनके प्रति सदा रहेंगे कृतार्थ
जीवनशैली थी उनकी यथार्थ
थी भावों की अनुभूति न केवल शब्दार्थ
प्रेम समग्रता वाली थी उनकी नीति
जीव मात्र से थी उन्हें प्रीति
इनसे बड़ा भला कौन जैनी।
मन, कर्म, वाचा से न किसी को पहुँचाये क्षति
शालीनता बनी रही किस्से कई अनसुनी
विपरीत परिस्थितियों में भी दिखी धैर्य सन्मति
सेवा में रमें रहे, शाश्वत से जुड़े रहे
पर पीड़ा में साथ खड़े रहे
जनदु:ख निवारण हेतु यथासम्भव डटे रहे।
उल्लास उमंग की घड़ी में भी
अपनों के संग रहे
जीवन के अंतिम पड़ाव में
खुशियों में किसी के शरीक हों
अलविदा दुनिया को कह गए।
अपने पराये सभी के तनाव में,
सिर्फ दिलासा, मशवरा ही नहीं
दल से साथ निभाते चले।
अच्छे मित्र बन व्यथित हृदय की
करुण कहानी सुनते रहे.....
भूले भटके लोगों को
मार्गदर्शन से सत्मार्ग दिखाते रहे.....
जब वे कहते सब भावुक हो सुनते
अपनी वाणी से हृदय द्रवित करते रहे
अब शिवाजी नहीं तो
उनकी बातें ही रह गयी
सद्कर्मों में उनकी इतिहास रच गयी
जिन्दगी संवर गयी उनकी
जिनको उनकी सोच जंच गयी
आज भी उनके याद में लोगों की आंख है नम
क्यों थी एक नेक इंसान की आयु इतनी कम
उनके दोस्त आज भी
उनकी कमी महसूस करते हैं
उनके अपने उनकी याद में तड़पते हैं.....
उनका जाना इतनी बड़ी क्षति
जिसकी है असंभव पूर्ति
शिवाजी, शिष्यत्व के धनी
शिवत्व अर्थात् कल्याणकारी
शिवाजी जीवन के अमृत्य से सुरभित
तुम्हारी हर स्मृति.....

कु. पायल विश्वास
एम. एड. द्वितीय सेमेस्टर

संग्राम जिन्दगी है

संग्राम जिंदगी है, लड़ना हमें पड़ेगा
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा

इतिहास कुछ नहीं है संघर्ष की कहानी
राणा शिवा भगत सिंह झांसी की वीर रानी
कोई भी कायरों कोई भी कायरों का
इतिहास क्यों पढ़ेगा
जो लड़ नहीं सकेगा आगे नहीं बढ़ेगा.....

घेरा समाज को है भीषण कुरीतियों ने
व्यसनों ने रुढ़ियों के निर्मम अतिथियों ने
इनकी चुनौतियों से, इनकी चुनौतियों से
है कौन जो भिड़ेगा
जो लड़ नहीं सकेगा आगे नहीं बढ़ेगा...

चिंतन चरित्र में अब विकृति बढ़ी हुई है
चहुं ओर कौरवों की सेना खड़ी हुई है
क्या पार्थ इन क्षणों में, क्या पार्थ इन क्षणों में
भ्रम में पड़ा रहेगा
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा...

आओ लड़ें स्वयं के दोषों से दुर्गुणों से
भोगों के वासना से रोगों के राक्षसों से
कुंदन नहीं बनेगा, कुंदन नहीं बनेगा
जो आग पे चढ़ेगा
जो लड़ नहीं सकेगा आगे नहीं बढ़ेगा

संग्राम जिंदगी है लड़ना हमें पड़ेगा
जो लड़ नहीं सकेगा आगे नहीं बढ़ेगा।

–राजेश कुमार राजगीर
बी. एड. प्रथम वर्ष

परोपकार (चिंतन)

परोपकार को मानव का सबसे बड़ा धर्म माना गया है, परोपकार को चार वेद, अट्ठारह पुराणों और उपनिषदों का निचोड़ बताया गया है, अपने बारे में तो पशु भी सोचते हैं, परन्तु वही श्रेष्ठ मनुष्य है जो दूसरों की भलाई सोचता है, दूसरों को उचित मार्गदर्शन देता है, अपने समाज व देश को खुशहाल प्रसन्न देखने वाला परोपकारी होता है, वह अपनी भलाई के साथ–साथ दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखता है,वह जन कल्याण के कार्यों में आगे आकर भाग लेता है, भले ही जनकल्याण करते–करते उसके होम करते हाथ जल जाये परन्तु वह हार नहीं मानता। परोपकार वह गुण है, जिसे अपनाकर व्यक्ति को मानसिक सुख एवं संतुष्टि प्राप्त होती है, समाज परोपकारी व्यक्ति को युगों–युगों तक याद रखता है, जैसे– महर्षि दधीचि, राजा शिवि आदि।

अगर समाज में हर व्यक्ति परोपकार का गुण धारण कर ले तो आज समाज की दिशा और दशा कुछ और होगी।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थं मिदं शरीरं।।

कल्पना श्रीवास
बी. एड. प्रथम वर्ष

आप कैसे याद किया जाना पसंद करेंगे (संदेश)

करीब सौ साल पहले एक आदमी ने सुबह के अखबार में जब अपना नाम उठावना वाले कालम में देखा तो वह हैरान रह गया। अखबार वालों ने गलतफहमी की वजह से उसका नाम छाप दिया था। उसे पढ़कर वह पहले तो हक्का–बक्का रह गया, क्या मैं जिंदा हूं या नहीं? थोड़ा संभलने पर उसके मन में विचार आया कि देखूं लोगों ने मेरे बारे में क्या कहा है? उनके बारे में लिखा गया था, "डायनामाइट का बादशाह मर गया" और "वही मौत का सौदागर था" इस व्यक्ति ने डाइनामाइट की खोज की थी। अखबार में अपने लिए इस्तेमाल किए गए "मौत का सौदागर" विशेषण को पढ़कर उसने खुद से सवाल किया, क्या मुझे इसी तरह याद किया जाएगा? उसने फैसला किया कि वह हर्गिज नहीं चाहेगा कि लोग उसे इस तरह याद करें। उस दिन से उसने शांति के लिए काम करना शुरू कर दिया। उसका नाम था अल्फ्रेड नोबेल और आज उसे नोबेल पुरस्कार के लिए याद किया जाता है।

बी. एड. प्रशिक्षण का उद्देश्य भी यही है कि हम एक सजग शिक्षक के रूप में स्वयं को स्थापित करें जो बालकों के लिए, उनके जीवन के लिए एक श्रेष्ठ मार्गदर्शक बन सके और एक अच्छे विशेषण के साथ समाज में याद किया जाए।

श्रीमती मनीषा गौतम यादव
बी. एड. द्वितीय वर्ष

हम शिक्षक हैं, ऐसा हमें करना होगा...

धरा की कच्ची मिट्टी को,
कुम्हार बन गढ़ना होगा।
पथ प्रदर्शक जीवन निर्माता,
आज हमें बनना होगा।।
हम शिक्षक हैं, ऐसा हमें करना होगा...
ऊंच–नीच के भेदभाव को
अब दूर हमें करना होगा।
हम सब एक हैं, यह भाव,
बच्चों में भरना होगा।।
हम शिक्षक हैं, ऐसा हमें करना होगा...
बच्चों के सुंदर सपनों को,
साकार हमें करना होगा।
हर मुश्किल से लड़ने को,
तैयार उन्हें करना होगा।।
निश्छल भाव, अच्छे विचार,
तन–मन में जागृत करना होगा।
बच्चों को उनकी मंजिल तक,
अब हम को पहुंचाना होगा।।
हम शिक्षक हैं, ऐसा हमें करना होगा...
जीवन में शिक्षा का महत्व,
आज हमें सिखाना होगा।
बच्चों की छिपी प्रतिभा को,
हमको ही निखारना होगा।।
हम शिक्षक हैं, ऐसा हमें करना होगा...

– श्रीमती ममता साहू
बी. एड. प्रथम वर्ष

माँ की उपमा

हर वस्तु की सौ उपमा है,
पर माँ की केवल नौ उपमा है।
कुपित पिता को देख लाड़ला,
दूर कहीं भाग जाता है।
माँ मारे तो माँ से बचने,
माँ से ही लिपट जाता है।
हर नारी में माँ बनने की,
प्राकृत अभिलाषा होती है
हर बेटा राम न हो लेकिन,
हर माँ कौशिल्या होती है।

–श्रीमती ममता साहू
बी. एड. प्रथम वर्ष

प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका

श्रीमती रमाकान्ति साहू
प्राध्यापक
उ. शि. अ. संस्थान, बिलासपुर

हर क्षेत्र की तरह प्रशासन एवं राजनीति के क्षेत्र में भी महिलाओं को उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। मानव सभ्यता के हर देशकाल में यह दृष्टिगत होता है, चाहे वह प्राचीन काल हो या मध्यकाल या आधुनिक काल पश्चिमी देश हों या पूर्वी देश हों या विकासशील या गरीब देश। महिलाओं ने अपनी योग्यता को पहचान दिलाने में बहुत संघर्ष किया है और यह संघर्ष आज भी जारी है।

ऐसा भी नहीं है कि मानव इतिहास में प्रशासन व राजनीति दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की कोई भूमिका ही नहीं थी। पूर्व मध्यकाल में कश्मीर की रानी दिद्दा दिल्ली सल्तनत की रजिया सुल्तान, काकतीय रानी रूदाम्मा आदि उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। कल्याणी के चालुक्यों की राजकुमारियाँ प्रदेशों की शासिका थी। लेकिन ये नियम कम और अपवाद अधिक थे। इस स्थिति में बदलाव पश्चिमी विश्व में औद्योगिक क्रांति के साथ आया, जब महिलाओं ने बड़ी संख्या में आर्थिक गतिविधियों में योगदान दिया, इसमें विश्व युद्धों के साथ और वृद्दि हुई, जब पुरूषों की युद्धों में भागीदारी के कारण महिलाओं ने आर्थिक मोर्चे को संभाला, इसने सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका व उनके योगदान के महत्व के बारे में वैश्विक जगत का ध्यान आकर्षित किया। धीरे–धीरे महिलाएं केवल श्रमिक से कौशल युक्त श्रम जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासक, वकील, खिलाड़ी, अभिनेत्री आदि महत्वपूर्ण पदों को भी प्राप्त किया, इसी तरह प्रशासन में किरण बेदी आदि अनेक उदाहरण आज विश्वभर में देखे जा सकते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में हमारे देश में इंदिरा गांधी जर्मनी की एंजेला मार्केल, जैसे भी उदाहरण हैं जहां इन्होंने राष्ट्र का नेतृत्व संभाला।

हाल ही में सना माटिन विश्व की सबसे युवा (34 वर्ष की आयु में) सेवारत् प्रधानमंत्री बनी। वर्तमान में ऐसे अनेकों उदाहरणों के बाद भी महिलाएं आज भी अपनी स्थिति के लिए संघर्षरत हैं।

अर्न्तसंसदीय यूनियन डाटा के 2014 के आंकड़ों के अनुसार महिलाओं की राजनीति पदों में भागीदारी का वैश्विक औसत केवल 24.6% है। अमेरिका, चीन, जापान एवं रूस जैसे देशों में अब तक राष्ट्र के प्रमुख रूप में एक भी महिला नहीं चुनी गयी हैं।

भारत में भी कोई बेहतर नहीं है। 17वीं लोकसभा चुनाव में महिला प्रतिनिधि 14.39% रही, यद्यपि 1952 के 4.4% से यह बेहतर है। किंतु वैश्विक औसत जो स्वयं का है उससे भी यह काफी कम है।

भारत के विविध राज्यों में स्थिति राष्ट्रीय औसत से भी खराब है। यद्यपि स्थानीय निकायों जैसे पंचायत व नगरपालिका में महिलाओं को आरक्षण दिए जाने के कारण वहां महिला प्रतिनिधियों की व्यापक भागीदारी देखी जा सकती है, लेकिन वहॉ सबसे बड़ी चुनौती उनकी रबर स्टाम्प बनकर रह

जाने की है। भारत में महिला काम की दर केवल 26% है, जबकि चीन में 46% है। राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए भारतीय महिलाओं में यू.एन.ओ सचिव विजय लक्ष्मी पंडित, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी, जयललिता, उमा भारती, मायावती और वसुन्धरा राजे सिंधिया, राष्ट्रपति प्रतिमा देवी पाटिल, पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, वर्तमान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन शामिल हैं।

****

मैं छत्तीसगढ़ के माटी अव

मैं छत्तीसगढ़ के माटी अव, मैं महानदी के घाटी अव
मैं अरपा नदी के पानी अव, मैं छत्तीसगढ़ के बानी अव।

मैं छुए म बज्जर छाती अव, बैरी बर अंगरा आगी अव
मैं उगत सूरज के लाली अव, मैं मोरध्वज कस दानी अव।।

मैं बटकी के बोरे बासी अव, मैं फूल कॉस के थारी अव
मैं अंधरा मन के आँखी अव, मैं गाँधी बबा के लाठी अव।

मैं धान के लहरात बाली अव, मैं ये भुंइया के छाती अव
मैं घर दुवार के छान्ही अव, मैं बइला के टून-टून घाटी अव।।

मैं लइका मन के बांटी अव, मैं भाई बहिनी के राखी अव
मैं राम लीला के झांकी अव, मैं बिहाव के जोरन झाँपी अव।

मैं बिरबिट करिया बादर अव, मैं आँखी म आंजे काजर
मैं करमइता के जांगर अव, मैं दया मया के सागर अव।।

मैं लक्ष्मी अन कुंवारी अव, मैं नांगर बइला अऊ तुतारी अव
मैं सबके जेवन थारी अव मैं छत्तीसगढ़ महतारी अव।

मैं महानदी के घाटी अव, मैं छत्तीसगढ़ के माटी अव
मैं अरपा नदी के पानी अव, मैं छत्तीसगढ़ के बानी अव।।

राजेश कुमार राजगीर
बी. एड. प्रथम वर्ष

" कोई ठिकाना नहीं है "

छत उजड़ गए हैं मेरे
बस एक छोटी जमीन बाकी है
सांसें इस उम्मीद में जिंदा है
वो आँधी सब लूट कर ले गया मेरा,
केवल एक मेहनत की मशीन बाकी है।
आते हैं कई लोग
मेरे दर्द देखने को,
पर मैंने भी ठान लिया है,
जख्म दिखाना नहीं है
घर तो बहुत हैं मेरे
पर कोई ठिकाना नहीं है।।
खोजता फिरता रिश्तों के मतलब
निकले सारे मतलब के रिश्ते,
नहीं मिलते कोई इंसान यहां
समझाने आते हैं सब फरिश्ते
झूठी उम्मीद में ताउम्र गुजार दी,
समझ रहा हूं आहिस्ते–आहिस्ते
रिश्तों की अफरा–तफरी में
न जाने कौन सही है
हिम्मत से अपने जीना है
और मरना भी यहीं है
उम्मीदों ने कान में आकर
कहा है घबराना नहीं है
घर तो बहुत हैं मेरे
बस कोई ठिकाना नहीं है।।

– रेशम पटेल
बी. एड. द्वितीय वर्ष

" बेटियाँ "

प्यार से थे वो मुझे बुलाते
गोद में अपनी मुझे बैठाते
गुड़िया है तु मेरी कह कर
ये अपना प्यार वो जताते
छोटी थी जब मैं
कहते थे नन्हीं परी घर मेरे आयी है
बड़ी हुई तो ऐसा क्या हुआ
जो कह दिया बेटी तु तो परायी है
उंगली पकड़ के जिन्होंने था चलना सिखाया
मेरा हाथ आज उन्होंने
किसी और के हाथों में है थमाया
बेटियाँ नसीब वालों को हैं मिलती कह कर
क्यूँ बेटी को अपना पराया बनाया...

– रुपाली सिदार
बी. एड. द्वितीय वर्ष

भारतीय संगीत के सात स्वर

1. सा (षडज)– मोर की आवाज
2. रे (ऋषभ)– बैल .....
3. ग (गंधार)– बकरी .....
4. म (मध्यम)– सारस (पक्षी) .....
5. प (पंचम)– कोयल .....
6. ध (धैवत)– मेंढ़क .....
7. नि (निषाद)– हाथी .....

– प्रदीप कुमार कश्यप
सांस्कृतिक सचिव
बी. एड. द्वितीय वर्ष

A FATHER

Just born out from motherly arms,
I remember being handed over to you,
To sleep with utmost calm.

The sudden change of grip,
Made me lose my ease,
I cried; you stared and finally
The nurse came and said
'Silence Please'

Holding my fingers, as you
Walked along with me,
sometimes you would just stop
To watch me with glee.

As a kid played with you a lot,
Throwing away a full toss,
You stood admiring my shots.

At times while cycling, I fell and then,
You used to kiss my bruises and
Clean my solied chin.

When at night scared I got up,
Soaked in seeat and full of tears,
I took your name and you were
Aways there to chase away my fears.

As time passed you become
My only superhero,
Obsessed to the core, I even tried
To copy your style of saying
Hello. !!

Then you struggle with work started;
Not bowing down to life
You lived up to your image,
As a protector, a provider a guide,
You struggled hard, but you did manage

You were out for the work
most of the time,
I missed your company, while

Sitting alone to dine.
Your unavailability throughout
my school
Gave me a notion,
I complained to Grandma,
Who said,
Busy in grueling rase of life,

He has left all the sentimental stuff
For your Mom 'His wife'

Climbing up the ladder of Life
Today I do realize that
Your aspiration for triumph and success
were aimed at making us proud
And brining the entire World's happiness.

Crossing over to other side of 50,
You turned wiser by the day,
In Good or in Bad,
My wishes were always fulfilled
Before I could even say.

Thought time has changed
Your handsome grip,
Young at heart you still
Guided me when I was
In a state of blip.

Whatever I am today,
Dad I own it to you,
Having sacrificed your whole life,
You still think there is more to do.

Thankful to God, I am for
Being blessed with a father
Like You,
Today I promise, I will
Workhard to fulfill
Those Dreams held by You

- Akanksha Jaiswal B.Ed. 1st

MAA

Those nine month,
When I rested inside her monthly womb;
While she went through that Agonising
pain and I Took a gentle humanly form.

Wondering about those marks
Left over her body;
Caused when she got cut
To bring a young "Noddy"

Wondering amidst all the delivery pain,
How desperately she wanted to hold me;
And once in her arms,
I automatically stopped crying and
people around had no clue.

Wondering how she smiled at me and
was left in awe;
When I did my first mischief and left
marks on her face with my claw.

Wondering how her face used
to turn blue;
Each time i suffered from flu.
Wondering about the loving affection,
Wondering about

When she ran behind me
with a glassful of milk;
Running away I used to
admire her beauty,
coming out so well in that Saree of silk.

Wondering about how happy and
excited she was;
When for the first time
I went to the school,
The best day of her life it was.

Wondering at the difficulty she faced
In taking time out for me
from her daily schedule;
To play with me, to talk to me and
sometimes teach me the theory
behind those stupic modecules.

Wondering how with time,
She become my best friend;
Patiently listening to stories
ME & My FRIENDS

- Akanksha Jaiswal
B. Ed. 1st

बारिश

धड़धड़ाते मेघ ये
बह रही ये जलतरंग
बेचैन सी धरा आज
हो रही मगन
बूंदें बारिशों की ये
लह–लहा रहा चमन
प्रकृति के रूप से
हर्षित है "हर्षित" का मन
वियोग में ये नदी
सूख चली थी ये जो
आज घूंघट उठा
लग रही अधीर सी
बेचैन सी ये धरा
हो रही है मगन
बादलों के आगमन से
हर्षित।

– प्रणव कुमार तिवारी

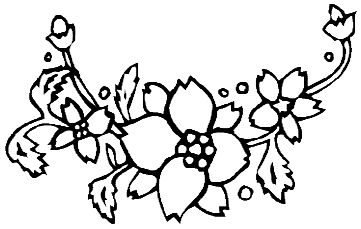

इंसानियत नामक मजहब होगा

हर इंसान में उसका रब होगा।
हमेशा मुश्किलों में घिरा रहता है वो,
जरूर, सच से उसका मतलब होगा।।
उस राह चल, जिसमें विजय सब हों,
संपूर्ण जीवन का सफर तब होगा।।
अपनी बीघा दो बीघा जमीन से बहुत लगाव है,
उसका जमीन से रहना खाना पानी सब होगा।।
चमक–धमक तो हकीकत छुपाते हैं,
कर्ज में बेटी का बाप लबालब होगा।।

– दीपक सिंह

फिर आएंगे वो अच्छे दिन...

कोरोना से जंग है जिंदगानी तंग है।
संक्रमण की जद में पूरा टाउन है
सभी जगह लॉक डाउन है।।
ये दुनियाँ ऐसी हुई, बिन माली का बाग।
सोया है जीवन यहाँ, कब्र रहे हैं जाग।।
तंत्र विफल हो रहा दुष्टों से, थामे जो जिद की राग।
खोया है जीवन यहाँ, भूख की लगी है आग।।
मधुप विलखते हैं यहाँ, तितली हुई उदास।
कलियाँ सहमी देखकर, यह भीषण संत्रास।
खुशियाँ करती खुदकुशी, रोता है आनंद।
पतझर और बहार में, छिड़ा हुआ है द्वन्द।
सिसक सिसक संध्या गई, आई भोर उदास।
आशंकाओं से घिरा, ताक रहा आकाश।
भयाकुल हो रहा जन,
संक्रमित संख्या को गिन–गिन।
घर में रहे सुरक्षित रहें,
फिर से आएंगे वो अच्छे दिन।

– प्रदीप कुमार उपाध्याय
बीएड प्रथम वर्ष

तनाव व अवसाद से ग्रसित आज का युवा

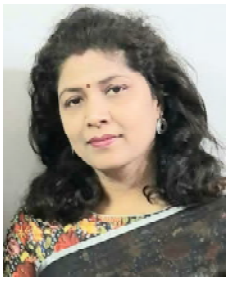

सीने में जलन आंखों में तूफान सा क्यूँ है
इस शहर में हर शख्स यूँ परेशान सा क्यूँ है।

मानसिक तनाव का तात्पर्य मन संबंधी द्वंद्व की स्थिति से है। जहाँ देखिए, जिससे बात कीजिए, एक अजीब सा तनाव दिखाई देता है। परिवार की चिंता, आजीविका की समस्या, एक–दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ और कुछ नहीं तो समाज से असंतुष्टि।

सामाजिक परंपरा आधुनिकता और प्रतिस्पर्धा के बीच फंसे हुए इंसान की स्थिति अजीब सी हो गई है साथ ही कोरोना महामारी के प्रकोप का भय व भ्रान्ति व निष्क्रियता से मनुष्य लगातार मानसिक अवसाद और तनाव का शिकार होते जा रहा है। महामारी के दुष्प्रभाव व विकरालता को तो हमने स्वीकार कर ही लिया है। लॉक डाउन, सोशल डिस्टेंसिंग व सेनेटाइजर के प्रयोग द्वारा सावधानी बरतने व बचने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। परन्तु युवा पीढ़ी में व्याप्त मानसिक अवसाद और तनाव को बीमारी मानने के लिए हम तैयार नहीं हैं। हमारा पारिवारिक और सामाजिक ढांचा ही ऐसा है कि हम युवाओं के अन्तरमन में चल रहे द्वन्द्व को समझ सकने, उसे स्वीकारने तथा उचित मार्गनिर्देशन हेतु समझ व समय की कमी महसूस करते हैं और चारों ओर अपने पाँव पसारे हुए इस अवसाद की विकरालता या दुष्परिणाम को स्वीकारने हेतु मन तैयार ही नहीं है और प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में अपने बच्चों को झोंक दे रहे हैं। युवाओं में यह समस्या आम है जिसके चलते आत्महत्या की प्रवृत्ति में अधिक वृद्धि हो रही है। लगातार तनाव व अवसाद झेल रही युवा पीढ़ी परिवार व समाज से दूर होता जा रहा है। इन सब का एक ही समाधान है कि हम अपनी संस्कृति, सभ्यता और आधुनिकता को अपने जीवन में आत्मसात करें, न कि अधिक आधुनिकता के चक्कर में एक–दूसरे से होड़ में पड़कर अंधानुकरण करने में लग जायें।

समाज व परिवार का कर्त्तव्य है कि आने वाली पीढ़ी को "कर्मण्येवाधिकारस्ते" के सिद्धांत पर चलने की सीख दें। उनकी ऊर्जा को सही दिशा दें। उनको बतायें कि जीवन में आई परेशानियां सबक हैं। गलतियों से निराश न हों बल्कि सीखें। मुश्किल परिस्थितियाँ कष्ट जरूर देती हैं लेकिन उन कठिन परिस्थितियों को झेलने के बाद ही आत्मबल विकसित होता है जो उन कष्टों की तुलना में हजारों गुना मूल्यवान होता है। सफलता से उड़ने ना लगे बल्कि सफलता से मिले उत्साह को और उससे कुछ बेहतर करने में लगाएं।

इन समस्याओं का एक ही प्रत्युत्तर है कि जिंदगी को तपस्या मानकर साधक की तरह व्यतीत करें और सकारात्मक चिंतन की ओर मोड़ने का प्रयास करें।

ऊहापोह– अटकलें– उलझनें,
अवसादों का कर अवसान।
हो बाधाएँ कितनी पथ में,
चेहरों पर बस हो मुस्कान।

सकारात्मक सोच संग
उत्साह और उल्लास लिए,
जीतेंगे हर हारी बाजी
मन में यह विश्वास लिए।

(निशांत जैन)

–डॉ. अजीता मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
आई. ए. एस. ई., बिलासपुर

देशभक्ति गीत (संकलित)

हम भारत के स्वाभिमान हैं ऋषि मुनि की संतान

हम भारत के स्वाभिमान हैं ऋषि मुनि की संतान
देश हमारा सबसे प्यारा हिन्दुस्तान।।
गौरवशाली परम्पराएँ, यह इतिहास बताता
भेदभाव है नहीं किसी से,
सबसे अपना नाता, सबसे अपना नाता
रामकृष्ण की पुण्य धरा यह,
सुन्दर स्वर्ग समान।।
देश हमारा.....
हम मेहनत से चमकाएँगे,
भारत माँ का भाल
डरते हैं हम नहीं किसी से,
खड़ा हो चाहे काल,
सकल विश्व में गूँज रहा है,
जगजननी का गान।।
देश हमारा...
नई सोच और नई दृष्टि ले,
भारत श्रेष्ठ बनाएँगे
इस तकनीकी युग में हम,
जग में सिरमौर कहाएंगे,
स्वच्छ रहेंगे स्वस्थ बनेंगे,
जन–जन का अभियान
देश हमारा.....
आज हमारी प्रतिमा का,
सारा जग लोहा मान रहा
ये भारत श्रेष्ठ सदा से है,
यह नारा फिर से गूंज रहा,
यह नारा फिर से गूंज रहा
हम भारत माँ के बच्चे हैं,
अमिट हमारी शान।।
हम भारत के स्वाभिमान हैं
ऋषि मुनि की संतान
देश हमारा सबसे न्यारा प्यारा हिंदुस्तान।।

संकलनकर्ता–
शरद जायसवाल
बी. एड. द्वितीय वर्ष

"जीवन में कभी हारना नहीं"

माना की आसान में सफर नहीं
चलना छोड़ दूं मंजूर मगर नहीं।
जीत होगी तो सभी साथ चलेंगे
हार में यहाँ कोई हमसफर नहीं।।

मन के लिए जमीर का सौदा,
न हासिल हो कभी से ओहदा,
झांकुं मैं किसी की तिजोरी में,
ऐसी फिसलती मेरी नजर नहीं।।

कमजोर पर ही रौब झाड़ना,
दूसरों के निवालों को ताड़ना
गरीब की आह पर न पसीजे,
इतना कठोर मेरा जिगर नहीं।।

आसमाँ से जो नाता जोड़कर,
जमीं से सारा रिश्ता तोड़कर,
गुरूर में उड़ते ऐसे पंछी को,
मिलता फिर कोई शजर नहीं।।

जीना होगा पड़ जाए मरना,
भरोसा बस खुद पर ही करना,
तुझमें ही वो घनश्याम रहते हैं,
तुझसे अलग तो वो ईश्वर नहीं।।
जिंदगी में कभी हारना नहीं...

– डॉ. गीता जायसवाल

पहचान

हम अपनी पहचान खो बैठे हैं
जब से चेहरे नकाब ओढ़ बैठे हैं
हमने अपनी मुस्कुराहटों से बांटी थी
खुशियां
आज वो मुस्कुराहट भी छुपा बैठे
नजरों से नजरें मिल जाने
पर हो जाती थी बातें
उन्हीं नजरों में आज अपनों को
खोने से पानी जमा बैठे।
आज हम अपनी पहचान खो बैठे हैं।
अनजानी चीजों को छूने में लगता है डर
और छू जाए तो शरीर में सिहरन
दौड़ा बैठे हैं
आज हम अपनी पहचान खो बैठे
सारी दुनिया से जुदा हम एकांत को
अपना बैठे
और हर अजीज मित्रों को
कभी गले लगा लिया करते हैं
आज दूर से हाथ जोड़ लगता है
उसके स्नेह का तिरस्कार कर बैठे हैं
आज हम अपनी पहचान खो बैठे हैं
जबसे चेहरे पर नकाब ओढ़ बैठे हैं
तो क्या हुआ सभी दिन मुश्किल है
हम तो सभी आशा व स्फूर्ति के सपने
संजोए बैठे हैं
मिलेगी नयी राहें और मंजिलें भी
हम उसी ओर अपने कदमों को बढ़ाए बैठे हैं
होगा फिर जीवन में हर्ष व उल्लास
हम तो बस उस ओर आस लगाए बैठे हैं
आज हम अपनी पहचान खो बैठे हैं
जबसे चेहरे पर नकाब ओढ़ बैठे हैं।

– श्रीमती प्रीति तिवारी

"हमारी वास्तविक पहचान" (संकलित)

नरेश कुमार कमलेश
बी. एड. द्वितीय वर्ष

" मैं कौन हूं "

जिस प्रकार एक कार को चलाने के लिए एक चालक (ड्राईवर) की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार हमारे शरीर रूपी कार को चलाने वाला एक चैतन्य शक्ति है– जिसे आत्मा कहा जाता है। यह आत्मा ज्योर्तिबिन्दी रूप में भृकुटी मध्य स्थित होता है। जिसे तीसरा नेत्र कहा जाता है

* यही आत्मा इस शरीर के आँखों से देखता है। कानों से सुनता है, और मुंह से बोलता है।
* यही आत्मा कर्मेन्द्रियों से कार्य कराता है।
* इस आत्मा के तीन भाग हैं–

(1) मन (2) बुद्धि (3) संस्कार

मन सोचने का, बुद्धि निर्णय करने का और संस्कार हमारे अच्छे–बुरे कर्मों को संचित करने का कार्य करता है।

* हमारे पुराने संस्कार ही हमारे भाग्य/ प्रारब्ध का निर्माण करते हैं।
* मृत्यु शरीर की होती है। आत्मा की नहीं। आत्मा अजर–अमर अविनाशी है।
* श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नया वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर त्यागकर नया शरीर धारण कर माता के गर्भ से जन्म लेता है।
* जिस प्रकार एक छोटे से मेमोरी कार्ड (चिप) में अनेक फिल्म, गाने लोड करके रखा जाता है उसी प्रकार इस बिन्दी रूप आत्मा के संस्कार में जन्म–जन्मांतर 84 जन्मों का अच्छे–बुरे कर्मों का हिसाब रिकार्ड रहता है।
* शरीर के मृत्यु होने पर धन–संपत्ति, शरीर, रिश्ते–नाते, परिवार, मित्र, पद आदि सब यहीं छूट जाते हैं, लेकिन हमारे अच्छे–बुरे कर्म के संस्कार साथ जरूर जाते हैं और यही संस्कार अगले जन्म में हमारा भाग्य का निर्माण कर हमें सुख या दुख प्रदान करते हैं।
* हमारा भाग्य भगवान नहीं लिखते बल्कि हमारे अच्छे–बुरे कर्म ही हमारे भाग्य का निर्धारण करते हैं। यदि भगवान को हमारा भाग्य लिखना होता तो वह हमारा भाग्य श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम लिखता क्योंकि वह हमारा रचयिता है, और हम उसकी रचना हैं वह हमारा परमपिता परमात्मा है। जिस प्रकार संसार में हर माता–पिता अपने संतान को डॉक्टर, इंजीनियर, कलेक्टर, नेता आदि बनाना चाहते हैं उसी प्रकार हमारा परमपिता परमात्मा हमारा श्रेष्ठ भाग्य देखना चाहते हैं। लेकिन हमारा अच्छे–बुरे कर्मों का संस्कार हमारा पीछा नहीं छोड़ते जो कि हमारे भाग्य निर्माण हेतु आवश्यक एवं जवाबदेह है।
* आत्मा के सात गुण या सात मित्र या सात लक्षण हैं। (1) ज्ञान (2) प्रेम (3) शांति (4) शक्ति (5) सुख (6) आनंद (7) पवित्रता
* आत्मा के छह शत्रु/ विकार/ अवगुण/ दोष हैं। (1) काम (2) क्रोध (3) लोभ (मोह) (5) अहंकार (6) ईर्ष्या
* आत्मा के पिता परमपिता परमात्मा हैं, जो कि ज्योर्तिबिन्दी रूप, प्रकाश स्वरूप निराकार सुप्रीम आत्मा परमधाम/ शिवधाम/ शांतिधाम/ निर्वाणधाम में रहते हैं। उन्हें भगवान/ ईश्वर/ खुदा/ अल्लाह/ मसीह/ गॉड/ प्रभु/ वाहेगुरु आदि नामों से पुकारते हैं। उनका एक नाम 'शिव' है। शिव अर्थात् कल्याणकारी।

(सन्दर्भ/ स्त्रोत– श्रीमद्भगवद्गीता)

कोरोना एक वैश्विक महामारी

मंगोलियाई देश चीन के वुहान से शुरू हुआ कोरोना नामक वाइरस ने बड़ी जल्दी ही महामारी का रूप ले लिया। साधारण लक्षण जैसे सर्दी, खांसी, सांस लेने में तकलीफ, बुखार आदि दिखाने वाला यह वाइरस वैश्विक महामारी बन गया। वैज्ञानिकों ने इसे कोविड- 19 (कोरोना वाइरस डीसीज- 19) नाम दिया जो दरअसल इस वाइरस से होने वाली बीमारी का नाम है। वैज्ञानिकों का माना जाय तो इस वाइरस से "सारस" नामक एक लाइलाज बीमारी होती है जिससे फेफड़ों में सूजन आती है और सिन्ड्रोम होने पर फेफड़े काम करना बंद कर देते हैं। चीन से होते हुए भारत में भी इस बीमारी ने पैर पसारे।

वैज्ञानिकों की मानें तो इस बीमारी का संक्रमण, संक्रमित व्यक्ति के असंक्रमित वातावरणमें खांसने, छींकने, सांस छोड़ने तथा संक्रमित व्यक्ति द्वारा उपयोग की गई वस्तुओं को छूने व उपयोग करने से फैलता है। WHO ने इस बीमारी को महामारी घोषित किया है तथा सुरक्षा संबंधी निर्देश भी दिए हैं। जैसे मास्क लगाना, सार्वजनिक स्थानों पर न जाना, बार-बार हाथ धोना तथा स्वच्छता का ध्यान रखना।

भारत को छोड़कर यूरोपीय देशों में इस बीमारी का घातक असर देखने को मिला। छ. ग. राज्य की बात करें तो छ. ग. का प्रथम केस लंदन से आई युवती में पाया गया एवं राज्य में बाहरी राज्यों तथा विदेशों से आए नागरिकों में संक्रमण पाया गया जिससे कम्यूनिटी ट्रांसफर हुआ।

– निधि शर्मा, शिक्षक
आई. ए. एस. ई.

तनाव

हमारा समाज और परिवार ऐसा है कि वह मानसिक अवसाद या तनाव को बीमारी नहीं मानता, जबकि इसे स्वीकार करना और उसका हल खोजना अति आवश्यक है। लोग इसे छिपाते हैं और चिकित्सक के पास जाने में हिचकिचाते हैं। WHO की रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में 36% लोग गंभीर अवसाद से ग्रस्त हैं। इसमें बड़ा प्रतिशत युवाओं का होता है। आज जिस आयु वर्ग के युवा तनाव झेल रहे हैं उनका लम्बा समय घर से दूर पढ़ाई में व्यतीत होता है। एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़, भौतिक स्तर पर सब कुछ पा लेने का सुख कुछ छूट जाने की टीस, यही अवसाद असहनीय हो जाता है और युवा गलत कदम उठाते हैं। अगर स्थिति ऐसी ही रही तो वह दिन दूर नहीं जब तनाव हमारे देश की प्रगति रोक देगा। इसके लिए आवश्यक है कि यदि हम ऐसी स्थिति में किसी को देखते हैं, चाहे वह हमारे बच्चे हों, चाहे पड़ोसी हों या रिश्तेदार हों तो हम उनका मार्गदर्शन करें, उन्हें सही राह दिखाएं, उनका साथ दें ताकि वे अपने तनाव को कम कर सकें और एक नई दिशा की ओर आगे बढ़ें।

– निधि शर्मा
आई. ए. एस. ई.

जीवन मूल्य– विवेक का आनंद

किसी मकसद के लिए खड़े हो तो एक पेड़ की तरह।

ताकि दुबारा उगकर उसी मकसद के लिए जंग कर सको।

– स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानन्द का चरित्र सभी युवाओं के साथ–साथ पूरे भारतीयों के लिये एक आदर्श है। स्वामी जी मंच पर जहाँ कहीं भी खड़े हुये, वहीं उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा हुई। प्रत्येक अवसर पर कई अनुकरणीय प्रसंग सामने आये। स्वामी जी अक्सर कहते थे– उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब तक तुम्हें मंजिल ना मिल जाए।

उनके जीवन की कुछ घटनाओं का यहां उल्लेख है, जो उनके प्रेरणात्मक जीवन मूल्यों का बोध कराती हैं।

स्वयं को पहचानो

स्वामीजी ने हिंदुत्व और हिन्दु धर्म का प्रचार–प्रसार किया, लेकिन हिन्दुओं की गलत नीतियों की आलोचना का कोई मौका नहीं छोड़ा। अंधविश्वास, बाल–विवाह, जातिगत भेदभाव और छुआछूत की खुलकर आलोचना की।

"स्वयं की कमजोरी जाने बगैर सफलता नहीं मिलेगी?"

कुएं से बाहर निकलो

स्वामीजी ने कहा था "मेरी यह इच्छा है कि प्रतिवर्ष यथेष्ट संख्या में हमारे नवयुवकों को चीन, जापान जाना चाहिये। जीवन भर केवल बेकार की बातें किया करते हो, तुम लोग आखिर क्यूं? तुम्हारी तो देश से बाहर निकलते ही जाति चली जायेगी। सैकड़ों वर्षों से आहार की छुआछूत के विवादमें अपनी सारी शक्ति नष्ट करने वाले, भला बताओ तो सही, तुम कौन हो? और तुम इस समय कर ही क्या रहे हो?"

"विस्तार से सोच रखो, सीमित धारणा संकीर्णता लाती है।"

दृढ़ निश्चय

एक बार हिमालय की राह पर स्वामी जी को एक वृद्ध व्यक्ति मिला, उसने स्वामीजी से कहा कि मैं इस पहाड़ पर आगे कैसे बढ़ूं? मैं थक गया हूँ। इस पर स्वामी जी ने कहा, जो सड़क दिखाई दे रही है, वह भी यही सड़क है, जो कुछ समय पश्चात् तुम्हारे कदमों के नीचे होगी। स्वामी जी की बात सुनकर वह व्यक्ति आगे बढ़ने लगा।

"दृढ़ निश्चय से कठिन डगर भी आसान हो जाती है।"

हाजिर जवाबी

विदेश में एक बार स्वामीजी सड़क पर चल रहे थे। उन पर एक व्यक्ति ने चिल्लाकर अंग्रेजी में कहा– "देखो उस आदमी को उसके पास पहनने के लिए अच्छे कपड़े भी नहीं हैं," उस आदमी को लगा, स्वामीजी अंग्रेजी नहीं समझ पाएंगे, लेकिन स्वामीजी ने उत्तर देते हुए कहा– "तुम्हारे देश में टेलर इंसान को जेण्टलमैन बनाता हैष मेरे भारत में चरित्र इंसान को जेंटलमेन बनाता है।" उनका उत्तर सुनकर उस व्यक्ति को अपने कहे पर पश्चाताप हुआ।

सकारात्मक सोच

एक बार ब्रिटिश सरकार के एक अधिकारी ने स्वामीजी से चर्चा की। उन्होंने कहा मेरी नौकरी बहुत आकर्षक है, परन्तु मैं एक दिन भी खुश नहीं रहा। मैं अपने सीनियर्स से पीड़ित हूं। इस पर स्वामी जी ने कहा, तुम नौकरी क्यों करते हो? क्या, उस वेतन के लिए नहीं जो तुम्हें मिलता है? जब तुम्हें जिस काम के लिए वेतन मिलता है, उसके सिवा तुमने उनके लिए किया ही क्या है? तुमने कुछ किया ही नहीं है, तो इस बात पर नाराज क्यों हो कि वे तुमसे असंतुष्ट हैं।

"आज से दूसरों की खामियां ढूंढ़ना बंद करो, जैसे ही तुम्हें काम में सफलता मिलेगी, लोगों की प्रतिक्रिया भी बदलती जाएगी।"

नए रास्तों पर चलना सीखो

विवेकानन्द जी एक वकील थे, चाहते तो वकील बन अच्छे पैसे कमा सकते थे, परन्तु उन्होंने गीता के सिद्धान्त पर अमल किया। कर्तव्यनिष्ठा से काम किया, फल या पुरस्कार की चाहत नहीं थी। और अमर हो गए।

स्वामी जी कहते थे– "जीवन में कुछ नया करने का साहस रखो, अगर सफल हो गए तो तुम नेतृत्व कर सकते हो। अगर विफल हो गए तो दूसरों के लिए मार्गदर्शक बन सकते हो। लेकिन कर्म करने से पीछे मत हटो।"

परिवार को मत छोड़ो

पिता के मौत के बाद परिवार विपत्ति में था। सन्यासी होने के बाद भी विवेकानन्द परिवार को नहीं भूले। माँ की चिंता करते थे। अपनी मौत के बाद भी उन्हें पैसा मिलता रहे, इसकी भी चिंता करते थे। आज के समय में बहुत से लोग अपने घरों के बाहर रहकर काम कर रहे हैं।

हमें अपने कार्य के साथ–साथ परिवार को भी समय देना चाहिये। नौकरी में कल हमारी जगह कोई भी ले सकता है, परन्तु हमारे परिवार में हमारी जगह कोई और नहीं ले सकता।

संकलन
श्रीमती नीला चौधरी
IASE, बिलासपुर (छ. ग.)

शिक्षा की पाँचवीं क्रांति?

नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा में सबसे बड़ी बाधा : शिक्षा की पाँचवी क्रान्ति है, आओ देखते हैं क्यों, काहे और कैसे? इसका उत्तर है प्रतिदिन विश्व का सिकुड़ना। जबकि जीवन का आधार विस्तार है। मेरे विचार से शिक्षा की विषय वस्तु, पाठ्यक्रम आदि स्थानीय न हो, वैश्विक हो गये हैं। कुछ को विलुप्त कर दिया गया है और शेष न जानने के अभाव में विलुप्त हो रहे हैं। अतः प्रधानमंत्री जी का नारा "लोकल से वोकल" को अपना प्रतियोगिता से सहकारिता की ओर लौटना ही शिक्षा का मूल आधार हो सकता है।

शिक्षा की पाँच क्रान्तियाँ निम्न हैं :-

1. मौखिक शिक्षा- गुरूकुल पद्धति।
2. लिखित शब्द- शिक्षा उपकरण बने और इसने मौखिक के साथ लिखित शिक्षा का स्थान लिया।
3. मुद्रण का आविष्कार- से शिक्षा में क्रान्ति तेजी से दिखाई दी। (पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि)
4. सूचना क्रान्ति- रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल आदि शिक्षा के माध्यम बने।
5. डिजिटल क्रान्ति- कम्प्यूटर ई-मेल, वीडियो कान्फ्रेंसिंग, इंटरनेट आदि ने तो शिक्षा में नई क्रान्ति का प्रादुर्भाव कर अतीत की अवधारणाओं को ताक में रख, मानो शिक्षा में विस्फोट कर दिया।

अतीत की अवधारणाएँ नवीन स्वरुप में सामने आने लगी और हम दिवास्वप्न में ऐसे उलझ गये कि गणित की सभी सरल सरल संक्रियाओं को भी यंत्रों के माध्यम से कर रहे हैं। फलस्वरूप मस्तिष्क का उपयोग कम से कम होने लगा और हम तर्क करना, लगभग भूल सा गये हैं। कुतर्क करने में माहिर हो गये हैं चकाचौंध की दुनिया में ऐसे बहते चले गये हैं कि हमने अपनी भावनात्मक सीमाएँ भी ध्यान में नहीं रखी और आज पुनः इन आधुनिकताओं के वशीभूत अपनी जीवन की मर्यादाओं को नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा से बचाने की बात कर रहे हैं।

अब हमें पुनः शून्य से अपनी शिक्षा व्यवस्था को ठीक करने की आवश्यकता है। अभी भी समय है क्योंकि हम जागृत हो गये हैं, तो चले पुनः चाणक्य...। मानव जीवन पर पर्यावरण, संस्कृति और स्थानीय भाषा, अपने अनुभवों को प्रकट करने हेतु सशक्त माध्यम/ उपकरण होते हैं। लेकिन सिकुड़ती शिक्षा ने जीवन की आवश्यकता में सबसे अधिक नुकसान पहुंचाया है।

डिजिटल युग ने शरीर की आवश्यकताओं को इतना अधिक साधन सम्पन्न बना दिया है कि व्यक्ति को अपने चार दीवारी से बाहर निकलने की भी आवश्यकता नहीं है। हमने कोरोना वायरस के प्रकोप को देख लिया है। शरीर की आवश्यकता केवल रोटी, कपड़ा और मकान ही प्रमुख रह गया है। सभी सुख सुविधाएँ गौण हो गयी। सबने सुख–सुविधाओं के अभाव में जीवन ज्यादा सुखमय अनुभव किया। लेकिन आत्म निर्भरता में हमें अभी भी विकसित होना शेष है। इस विकास में भारतीय परम्परायें, आस्थाएं, श्रद्धा, विश्वास और व्यक्तिगत प्रकृति (वात, पित्त, कफ) को एक ही तकनीकी से न आंका जावे। यही हम सबसे बड़ी भूल कर रहे हैं।

विकासशील देश में कोरोना ने ऐसा कहर बरपाया कि सब अपनी–अपनी जीवन की रक्षा हेतु किंकर्त्तव्य विमूढ़ से रह गये हैं? भारतीय परम्परा ने सबके जीवन रक्षार्थ एक दूरी आवश्यक बताया और अभिवादन हाथ न मिलाकर नमस्कार की मुद्रा बताया।

शिक्षा की पांचवी क्रांति से डिजिटल शिक्षा तो दे सकते हैं, नैतिक और मूल्य शिक्षा नहीं। इसके अभाव में एक वर्ग जो अपने को पिछड़ा कहता है, वही सबसे ज्यादा उपद्रव मचा रहा है। यद्यपि उनके पास आधुनिक तकनीक और जीवन को नष्ट करने के लिए कई विकल्प हैं। वास्तव में वह समुदाय (कट्टर पंथी लोग) Exclusive Educaton के दावेदार हैं और हम Inclusive Educaton देने की बात करते हैं और पाठ्यक्रम भी वैसा ही तैयार करते हैं। अतः संविधान में कुछ संशोधन भी आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में जो परंपराएँ बहुतायत में प्रचलित हैं उसे नैतिक शिक्षा मूल्य शिक्षा से पृथक न किया जावे। पुनः बलपूर्वक यही कहना चाहता है कि शिक्षा की पाँचवीं क्रांति सीखने की प्रक्रिया पर बल देती है न कि शिक्षण प्रणाली पर। शिक्षा ऐसी हो जो हमें "मुक्त कर सके"। इसमें सन्देह नहीं कि डिजिटल शिक्षा ने मनोरंजन, विज्ञान चिकित्सा, रक्षा आदि में तो अत्यधिक प्रगति की है लेकिन हमारी नैतिकता और मूल्यों पर कुठाराघात भी किया है। इस प्रकार मानव की मानवता स्वार्थी ज्यादा हो, सहकारिता को छोड़ती जा रही है फलस्वरूप वह समष्टि (ब्रह्माण्ड) में योगदान नहीं कर पा रही है। डिजीटल से केवल सृष्टि (विश्व) का विकास हो रहा है। सृष्टि से समष्टि का विस्तार भी शिक्षा का आधार हो। छोटी इकाई का बड़ी इकाई में समर्पण की भावना ही समस्त बाधाओं को दूर कर सकती है।

डॉ. उल्हास व्ही. वारे
सहायक प्राध्यापक

सोशल मीडिया एजुकेशन

श्रीमती रमाकान्ति साहू
प्राध्यापक
उ. शि. अ. संस्थान, बिलासपुर

सोशल मीडिया क्या है? वेबसाइट एवं एप्लीकेशन का एक समूह जो उपयोगकर्ता को सोशल नेटवर्किंग में भाग लेने के लिए कोई सूचना/ विचार या अन्य के साथ साझा करने का प्लेटफार्म प्रदान करती है उसे सोशल मीडिया कहते हैं।

इंटरनेट प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ सोशल मीडिया हर छात्र के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। सोशल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जहाँ छात्र अपने कैरियर के लिए लाभकारी संपर्क स्थापित कर सकते हैं। एक शैक्षिक संस्थान के रूप में सामाजिक प्लेटफार्मों में सक्रिय होना महत्वपूर्ण है, फैकल्टी सोशल मीडिया का उपयोग करके समूह बना सकती है जहाँ उपयोगी जानकारी सभी तक पहुंचाई जा सकती है। यह विचारों को साझा करने के लिए अच्छा मंच है। कक्षाओं के अंदर और बाहर सोशल मीडिया में प्रवेश करने वाले प्रोफेसर निजी मीडिया का उपयोग करके व्यक्तिगत ब्रांडिंग कर सकते हैं। फेसबुक, ट्विटर, विभिन्न ब्लॉगिंग साइट और यू ट्यूब कुछ ऐसे सामाजिक चैनल हैं जहां प्रोफेसर अपनी विशेषज्ञता का विपणन कर सकते हैं। इंटरनेट व स्मार्ट फोन प्रौद्योगिकियों के अस्तित्व में आने के बाद से शिक्षा की दुनिया पूरी तरह से बदल गई है। शैक्षिक संस्थानों ने सहयोग और सक्रिय शिक्षण में सुधार के लिए सोशल मीडिया की क्षमता का एहसास किया है। तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में पेशेवर नेटवर्क और कनेक्शन किसी की सफलता व भविष्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण हो गए हैं।

प्रयोजनाओं का प्रबंधन कैसे करें और क्रॉस कल्चरल सेंसिटिविटिज के साथ विश्व स्तर पर बैठी टीमों के साथ सोशल मीडिया के उपयोग ने कक्षा से संबंधित विषयों के बारे में साथियों या शिक्षकों के साथ बातचीत करना आसान और तेज कर दिया है। ब्लॉगिंग और स्लाइड शेयर के माध्यम से शिक्षक जल्द ही विशेष क्षेत्रों और विषयों में विशेषज्ञ के रूप में खुद को स्थापित कर रहे हैं। छात्र इन विशेषज्ञों का ऑनलाइन अनुसरण करके उपयोगी सामग्री प्राप्त करते हैं। यह संस्थानों को सशक्त बनाता है और अकादमिक दुनिया में अपनी ब्रांड इक्विटी स्थापित करता है। सोशल मीडिया अकादमिक शोधकर्ताओं पर काम करके उपयोगी सामग्री को संकलित करने में और बनाने में मदद कर सकता है। प्राध्यापक कक्षा से परे शिक्षण घंटे का विस्तार करने के लिए सोशल मीडिया प्रौद्योगिकी का लाभ उठा सकते हैं। ऑनलाइन चर्चा के लिए समर्पित समय स्लॉट आवंटित कर सकते हैं। फेसबुक सत्र के माध्यम से, संकाय एक बार में बड़े दर्शकों से जुड़ सकता है। किसी भी कक्षाओं के रद्द होने से बचने के लिए व्याख्यान को भी स्ट्रीम कर सकते हैं। स्वयंप्रभा– 32 राष्ट्रीय चैनलों के द्वारा शैक्षणिक ई–सामग्री के विस्तार/ प्रसारण के लिए सैटेलाइट तकनीक का उपयोग इस योजना के अंतर्गत किया जा रहा है।

National institute of open schooling माध्यमिक व उच्चतर स्तर की शिक्षकों के

लिए 5 चैनल चल रहा है। व sign language में भी प्रसारण हो रहा है। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी के तहत 153 लाख से अधिक किताबें उपलब्ध करायी गई हैं। सोशल मीडिया की सहायता से वंचित वर्ग जैसे बालिकाएँ, अनुसूचित जाति, जनजाति, निम्न आय समूह वर्ग, ग्रामीण क्षेत्र इत्यादि को शिक्षा तक आसान पहुंच प्राप्त हो सकती है। जो बच्चे बड़े शहरों में जाकर महंगी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते, उन्हें भी यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उपयुक्त साधन है। सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए शिक्षक अध्ययन और शिक्षा में अपने छात्रों की भागीदारी में, तकनीकी क्षमता में सुधार एवं अच्छे संचार कौशल का निर्माण कर सकते हैं।

नारी को नारी ही रहने दो

नारी सशक्तीकरण के नारों से गूंज उठी है
वसुंधरा
संगोष्ठी परिचर्चाएँ सुन–सुन अंतर्मन ये पूछ पड़ा।
वेद पुराण ग्रंथ सभी नारी की महिमा दोहराते
कोख में कन्या आ जाए
क्यूँ उसकी हत्या करवाते?
कूड़े करकट के ढेरों में कुत्तों के मुँह नुचवाते
बेटे की आस में प्रतिवर्ष बेटियाँ घरों में जनवाते।
कोख जो सूनी रह जाए अनाथ आश्रमों
की फेरी लगाते
गोद में बालक ले ले तो बालिका को हैं ठुकराते।
गुरुद्वारे मंदिर गिरजे मस्जिद जा जा नित
शीश नवाते
पुत्र रत्न को पाने की चाहत
ईश्वर को भी भेंट चढ़ाते।
चांदी के सिक्कों के प्रलोभी
दहेज की बलि चढ़ा देते
पदोन्नति की खातिर सीढ़ी इसे बना लेते।
मनचले वाणी के तीरों से
सीना छलनी कर देते।
वहशी दरिंदे पशु असुर
क्यूँ हवस अपनी बुझा लेते।
सरस्वती लक्ष्मी शीतला नारी दुर्गा भी बन जाए
मनमोहिनी गणगौर सी काली का रूप भी दिखलाए।
शक्ति को ना ललकारो इसको नारी ही रहने दो
करुणा ममता की सरिता ये कलकल
शीतल ही बहने दो।
नारी सिर्फ उपभोग की वस्तु है
ऐसे विचार कभी कबूल मत करना
नारी को अबला समझने की कभी भूल मत करना।
नारी अम्बर है कोई शीशे की दीवार नहीं
नारी खुद में शक्ति है किसी की मोहताज नहीं।
संघर्षों से टकराना उसे भी आता है
हर मुश्किल से गुजर जाना उसे भी आता है...।।

– श्रीमति श्रुति अग्रवाल
एम. एड.– द्वितीय सेमेस्टर

महिला सशक्तीकरण के अवरोध के रूप में परिवार एवं लिंगवाद

नहीं सहना है अब किसी का अत्याचार,
महिला सशक्तिकरण का यही है मुख्य विचार।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं में अंतर्निहित शक्ति उसकी प्रतिमा एवं उसमें बुद्धिमत्ता के बल पर उसे समर्थवान एवं सशक्त करने से है। अर्थात् महिला सशक्तिकरण का संबंध महिलाओं के तरक्की और पुरुष प्रधान समाज में उसे बराबरी का स्थान दिलाने में है।

महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना और सामाजिक सम्मान जैसे प्रमुख मुद्दे आते हैं। जिन पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

महिलाओं ने पिछले कुछ सालों में हर क्षेत्र में तरक्की हासिल की है और खुद को साबित कर दिखाया है, लेकिन आज भी महिलाओं को समाज में अपेक्षित स्थान नहीं मिला।

आज भी सोचा जाता है–

ये है बालिका, वो है बालक
ऐसा सभी सोचते पालक
बेटी तो है पराया धन
जाके करें औरों का जतन
बेटा तो है अपना रतन
करेगा कुल को रोशन।

उन्हें शिक्षा का अधिकार नहीं दिया जाता है, उनकी जिन्दगी से जुड़े महत्वपूर्ण फैसलों का निर्णय आज भी उनके पिता, भाई या फिर उनके पति करते हैं, इसलिये आज महिला सशक्तिकरण की जरूरत पड़ी है।

महिलाओं का न करो तुम सब निरादर,
देश की तरक्की के लिए जरूरी है इनका आदर।

महिला सशक्तिकरण के तहत इन सभी मुद्दों के साथ महिलाओं की शिक्षा और सुरक्षा से जुड़े मामले उठाए जाते हैं ताकि महिला की स्थिति में सुधार आ सके और महिलाओं को लेकर समाज की संकीर्ण सोच में बदलाव आ सके।

सशक्त नारी से ही बनेगा, सशक्त समाज महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा और उन्हें आत्मनिर्भर

बनाने के लिए भारत सरकार बेटी बचाव, बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, महिला शक्ति केंद्र योजना समेत तमाम योजनाएँ भी चल रही हैं लेकिन इसके बावजूद महिलाओं की स्थिति में कुछ खास सुधार देखने को नहीं मिल रहा है।

महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और उन पर हो रहे अत्याचार और शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद करने के लिए और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए हर साल 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का भी आयोजन किया जाता है, ताकि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिले, साथ ही महिलाओं के प्रति सम्मान की दकियानूसी मानसिकता में परिवर्तन लाया जा सके।

प्रस्तुतकर्ता– श्रीमती संध्या अग्रवाल

M.Ed. I

****

कविता

"स्कूल आ पढ़े बर, जिनगी ला गढ़े बर"

सुन लेवा संगवारी हो
स्कूल आ पढ़े बर जिनगी ला गढ़े बर
(1) ये शिक्षा के पूंजी कभू नई सिरावय
जतके तैं पढ़बे लिखबे
ओतके मान बढ़ावय
ये जिनगी म आगु बढ़े बर
सुन लेवा संगवारी हो
स्कूल आ पढ़े बर
जिनगी ला गढ़े बर
(2) सुख–दुख हवय ये जिनगी के आधार
जेन ह पढ़ही लिखही ओकरे हो ही उद्धार
ये दुनिया म अपन पहचान बनाये बर
सुन लेवा संगवारी हो
स्कूल आ पढ़े बर
जिनगी ला गढ़े बर
(3) कोई साथ नई देवय
नई आवय कोई काम
वहू कोई आदमी ये, जौउन ल नई आवय
लिखे ला अपन नाम
अज्ञानता के अंधेरा ला छटाये बर
सुन लेवा संगवारी हो
स्कूल आ पढ़े बर
जिनगी ला गढ़े बर

–अनारकली भास्कर
एम.एड. (प्रथम वर्ष)

COVID-19 & Online Classes

The nationwide COVID-19 lockdown has forced schools, colleges and universities to close and send their students home which, in turn, has impacted over 95% of the world's student population. The closure has placed unprecedented challenges on governments, institutions, teachers, parents and care givers around the world. Covid-19 has forced universities across India, and the world indeed, to suspend physical classrooms and shift to online classes. In India, while this transition has been smooth for most private universities, the public ones are still adapting.

Reaction of education sector

Many countries are continuing to handle this disruption by deploying differentmodes of learning through a mix of technologies. In almost all countries, teachers and school administrators are encouraged to continue the communication with learners by delivering virtual live lessons or Massive Open Online Course (MOOC)- styled ones.

Online education, a result of the digital world has brought a lot to the learning table at all levels of education, beginning from preschool up to higher level institutions. The move to remote learning has been enabled by several online tech stack such as Google Classroom, Blackboard, Zoom and Microsoft Teams, all of which play an important role in this transformation. With the development of ICT in education, online video-based micro-courses, e-books, simulations, models, graphics, animations, quizzes, games, and e-notes are making learning more accessible, engaging, and contextualized. Online education is conducted in two ways. The first is through the use of recorded classes, which, when opened out to public, are referred to as Massive Open Online Course (MOOCs). The second one is via live online classes conducted as webinars, or zoom sessions.

Challenges of online learning

Students from remote districts and those belonging to poor communities lack the infrastructure and the means to reap the benefits of online learning. India is going to witness a 50% increase in students over the next 15 years and although it has many universities and colleges, only few have the facilities to match this surge of students in

the future. Online education could be a logical solution to accommodate this problem.

Steps taken by Government of India

The government of India, for the first time, is allowing Indian universities to offer online degrees which previously was limited to foreign universities. Now, to encourage and widen the access to higher education, this restriction has been lifted from 20% to offer 100% courses online. The National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL), a project of MHRD initiated by seven Indian Institutes of Technology (IIT), along with the Indian Institute of Science Bangalore, was created in 2003 to provide online education.

The challenges of online learning

Not every student has a computer or fast-streaming internet at home. This leads to issues with attendance and participation in online sessions. Students must have the facility of required hardware — computer, router, and printer — at home to attend online classes.

Many feel that online education is not as easy as speaking into the microphone at one end, and connecting a laptop or phone and listening in on the other. There are other challenges with this form of education which are faced at both ends of the spectrum — students as well as faculty.

Going forward

Most educators across institutions agree that there is a need to invest in creating standardized online education platforms, and not using apps and Google hangouts only; and to train both students and teachers. There is also the need to understand all this across academic disciplines and institutions.

The Covid-19 outbreak makes us realize that no matter where the learning process takes place, schools should be ready to make the most of it. Investing to technology is very crucial and important for educational institutions. However, the functionality of the system is not limited to this period only. Automation benefits for school would extend for a longer period. Education is going to be digital in the foreseeable future.

MRS. TARANJEET KAUR
M.ED. 2nd SEMESTER 2019-2020
IASE BILASPUR (C.G.)

स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा का विकास, क्रियान्वयन एवं चुनौतियां

भारतीय जनगणना के इतिहास में ऐसा देखने को मिला है कि गांवों की तुलना में शहरों की जनसंख्या अधिक बढ़ी है। आंकड़ों को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन तेजी से बढ़ रहा है। इसके प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, बेरोजगारी, कुटीर उद्योगों का पतन, भूमिहीन कृषक, ऋणग्रस्तता, मौलिक सुविधाओं का अभाव, परंपरागत जाति व्यवस्था आदि अनेक कारण हैं। अतः पलायन के कारण उनकी शिक्षा–दीक्षा बाधित होती है। ऐसे में 3 ग्रुप/ समूहों को देखें– पहला ग्रुप पलायन प्रभावित बच्चे बीच में ही माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 व 10) पर छोड़ने वालों की तादात स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी चुनौती है। दूसरा छात्र श्रम बाजार में दाखिल होने के लिए स्कूल छोड़ देते हैं क्योंकि उन्हें शिक्षा का ज्यादा फायदा नहीं दिखता है। तीसरा ऐसा ग्रुप है, जो बच गया उनमें से अगर हम आकड़ों की ओर जाएं तो 2014–17 के बीच 3 वर्षों में कक्षा 11 व 12 में प्रवेश लेने वाले 40 प्रतिशत से अधिक छात्रों ने विज्ञान विषय चुना। व्यावसायिक विषयों चुनने वाले छात्रों की संख्या 2 प्रतिशत से भी कम रही।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता– (1) भारत की कामकाजी उम्र वाली आबादी में 2021–2031 के बीच हर वर्ष 97 लाख और उसके बाद के दशक (2021–2041) हर वर्ष 42 लाख का इजाफा होगा। इस प्रकार अनुभवजन्य शिक्षा पर लगातार जोर दे रही दुनिया में व्यावसायिक शिक्षा को सार्वजनिक नीति के केन्द्र में लाने की आवश्यकता है। वर्तमान संदर्भ यह और भी आवश्यक है, क्योंकि अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्रों से जुड़ा है। (2) व्यावसायिक शिक्षा का अर्थ ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम से है जो व्यक्ति को खास व्यवसायों के लिए तैयार करने के लिए बनाए जाते हैं। इसमें ज्ञान, नजरिए और व्यवहारिक अनुभव को मिलाकर अर्थव्यवस्था के निश्चित कार्यक्षेत्रों में महारथ के साथ खास तरह के कौशल प्रदान किए जाते हैं। भारत के स्कूलों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर औपचारिक व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। (3) व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कामगारों को प्रशिक्षित कामगारों के मुकाबले अधिक औसत दिहाड़ी काम में अधिक भागीदारी और कम बेरोजगारी जैसा बेहतर प्रतिफल हासिल होता है। इसके अलावा व्यवसायिक शिक्षा रोजगार के नए मौके सृजित कर उद्यमशीलता को भी बढ़ावा दे सकती है। (4) 12वीं पंचवर्षीय योजना में अनुमान लगाया गया है कि भारत में 19 से 24 वर्ष की उम्र वाली श्रम शक्ति में 5 प्रतिशत से भी कम को व्यवसायिक शिक्षा मिलती है, जबकि अमेरिका में यह आंकड़ा 52 प्रतिशत, ब्रिटेन में 70 प्रतिशत, जर्मनी में 75 प्रतिशत, जापान में 80 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में 96 प्रतिशत है।

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों का हल व्यावसायिक शिक्षाः–

इन चुनौतियों के अलावा व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में उद्योग से कम जुड़ाव, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी समस्याएं भी हैं। मजबूत कौशलों की बुनियाद स्कूल के स्तर पर ही डाल दी जानी चाहिए। स्कूलों में उच्च गुणवत्ता वाली व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार करने और सामान्य शिक्षण विषयों में

व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करने से स्कूल छोड़ने की ऊंची दर को कम किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् का घटक पंडित सुंदरलाल शर्मा सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ वोकेशनल एजुकेशन पाठ्यक्रम विकास की नोडल एजेंसी है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड भी माध्यमिक स्तर पर 17 कौशल विषय तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 42 कौशल विषयों पर शिक्षा प्रदान करता है। इसके अलावा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान भी 2016 से मुक्त व दूरस्थ शिक्षा के जरिए 100 से अधिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम चला रहा है, और इस समय देश के 15 से अधिक राज्यों में यह पाठ्यक्रम चल रहे हैं।

भविष्य की राह में चुनौतियांः–

* मानव संसाधन विकास मंत्रालय राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा योग्यता ढांचा बना रहा है। राज्य सरकारों के साथ गहन चर्चा द्वारा तैयार किए जा रहे इस ढांचे का आधार स्तंभ पाठ्यक्रम चिन्हित करने, सामाग्री विकास, प्रशिक्षण संसाधन वाले व्यक्ति उपलब्ध कराने, मूल्यांकन, मान्यता, प्रमाणन एवं नौकरी समेत विभिन्न चरणों में उद्योग एवं संभावित नियोक्ताओं के साथ मिलकर काम करना होगा।
* 2019 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य सभी स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण करना एवं 2015 तक कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसके लिए वर्तमान व्यवस्था को बदलना होगा, जो उदार हो और जिसमें छात्रों के लिए कक्षा 9 से 12 तक विभिन्न विषय अथवा पाठ्यक्रम चुनने हेतु सेमेस्टर प्रणाली हो। कक्षा 6 से 8 में ही व्यवसायों की जानकारी एवं अनुभव प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे छात्र माध्यमिक स्तर पर बेहतर चयन करने में सक्षम हो सकें।
* उच्च गुणवत्ता वाली व्यावसायिक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम में नियमित संशोधन करने तथा उचित प्रशिक्षण भागीदारों के साथ हाथ मिलाने की जरूरत होती है। सामाग्री एवं पाठ्यक्रम में बदलाव किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि भारत के युवाओं के पास चौथी औद्योगिक क्रांति की जरूरतों के अनुसार पर्याप्त कौशल हों।
* शैक्षिक सहायता देने वाले संस्थानों को मजबूत करने की तथा प्रशिक्षण मॉड्यूलों को विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि पर्याप्त संख्या में शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। इस कल्पना को यथार्थ बनाने के लिए नीति एवं क्रियान्वयन के सभी स्तरों– स्थानीय, राज्य एवं केंद्र के स्तरों पर मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।
* विश्व बैंक की चेंजिंग नेचर ऑफ वर्क शीर्षक वाली विश्व विकास रिपोर्ट– 2019 में व्यावसायिक शिक्षा की बेहतर उपलब्धता के लिए तकनीकी का सहारा लेने की आवश्यकता बताई गई है। भारत में नीति एवं उपायों को भावी व्यावसायिक सुधारों के लिए इन पहलुओं को ध्यान में रखना होगा, तभी सतत विकास का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

आकांक्षा अग्रहरि
M.Ed. 2nd Sem. (2019-20)
IASE Bilaspur (C. G.)

सनातन धर्म भारतीय मूल्य व कोरोना महामारी

श्रीमती प्रीति तिवारी
सहायक प्राध्यापक
IASE, बिलासपुर

जब से कोरोना वायरस Covid- 19 महामारी ने भारत में दस्तक दी है, तबसे हम सभी भारतीयों के मन में कई तरह के प्रश्न तथा दहशत ने जन्म भी लिया है हम, अपने व अपनों के लिए फिक्रमंद हुए हैं, एक अजीब सा माहौल हमारे चारों तरफ का हो गया जो न कभी पहले देखा न सुना। यह जिंदगी जो शोर के साथ शुरू होती थी अब आसपास देखो तो सन्नाटा ही नजर आता है जो कभी–कभी हम सबको डराता ही और कभी–कभी नई राहें सुझाता भी है।

अभी हम सबका ध्यान वैश्विक समाचारों तथा से जुड़ी विभिन्न प्रकार की सूचनाओं से रुबरु हो रहा है लेकिन क्या कभी यह भी विचार यह समाचार तनाव और अवसाद की ओर तो आता है कि नहीं ले जा रहे, क्या यह हमें अपने ही अंर्तमन को संघर्ष करने के लिए ही तो नहीं कह रहे।

कभी यह अपनों से दूरियां बनाने की या संदेह करने की बात तो नहीं कर रहे।

हम भारतीय बहुत ही सामाजिक तथा समुदाय के साथ मिल–जुल कर रहने वाले व काम हमारे आसपास करने वाले प्राणी है, शुरू से ही हमारी भारतीय परम्परा संस्कृति में एक–दूसरे से भावनात्मक रूप, सहयोगात्मक रूप से जुड़े रहने की शिक्षा का संचार करता है, तो क्या करें, इन बातों को अभी छोड़ दे या भुला दें।

ऐसा हम कैसे करेंगे हमारे दर्शन के ही इन सभी बातों को नकारा है। दर्शन जो हमें नजरिया प्रदान करता है, तो आज भी इस वैश्विक महामारी में नये नजरिया से देखने की आवश्यकता है, मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। देश तथा मददगारों को मदद देने की आवश्यकता है, क्योंकि परिस्थितियां आज बिगड़ी हैं तो कल सुधर भी जाएंगी, भारतीय दर्शन ही हमें आशावादी सोच की ओर अग्रसर करता है या कहें वसुधैव कुटुम्बकम की सोच का संचार करता है।

अब प्रश्न उठता है कि कैसे लड़ा जाए इस महामारी से, कैसे संघर्ष किया जाए, अभी तक बेपरवाह जीवन जी रहे थे, उसे कैसे संयमित किया जाए।

इस महामारी में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना है–

* तनाव को दूर करने के लिए कुछ योग, प्राणायाम जो मन को शांत करते हैं उन्हें विशेष रूप से अपने जीवन का अंग बनाएं।
* हमारे घर में ही कई घरेलू चिकित्सा के लिए औषधि मौजूद है जैसे हल्दी, मुलेठी, अदरक, आंवला, अश्वगंधा, गिलोय, एलोवेरा यह सभी प्राकृतिक औषधियां हैं जिनका हमारे आयुर्वेद में बहुत प्रयोग होता है। इनका प्रयोग करें, जैसे हल्दी का पानी या दूध पियें। आंवला–एलोवेरा का जूस पियें, गिलोय की डंडी का काढ़ा बना कर पियें, अदरक–शहद का रस बनाकर पियें। यह सभी प्राकृतिक चीजें हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं।
* वैश्विक समाचार में भी यह बात सामने आ रही है कि भारतीयों में Covid-19 के संक्रमण के केस कम हो रहे हैं। यह हम भारतीयों को रोग प्रतिरोधक क्षमता उच्च होने का ही परिणाम है। सुपाच्य

भोजन को ही ग्रहण करें यह हमारी पाचन क्षमता को बढ़ाते हैं, और रोगों से दूर करते हैं।

* हमारे आसपास लोगों से जुड़े रहें, उनसे अपने मोबाइल से बातचीत करते हैं, आप उनसे दूर रहकर भी अपनापन दिखा सकते हैं। खासकर अपने बुजुर्गों को विशेष रूप से देखभाल करते रहें। उन्हें घर पर ही रखकर उनके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ें, कुछ पुराने किस्से, यादें, संस्मरण आदि साझा करें, उनके अनुभवों को अपने जीवन में शामिल करें। देखिये ऐसा करके घर का माहौल आप कैसे उर्जा से भरपूर कर लेते हैं। हमारे आसपास के बुजुर्गों को भी अगर कोई मदद की आवश्यकता, उन्हें आगे बढ़कर मदद करें। बाहर से कोई सामान लाना है, या दवाईयां मंगानी है, सब्जी राशन की बात हो, प्राथमिकता से करें, हमें मदद के लिए बढ़े हाथों तक वह सब कुछ देना है, उन्हें चाहिए देखिए आपको आनंद की अनुभूति जरूर होगी। दूर रहने को कहा है, छोड़ने को नहीं, यही तो वसुधैव कुटुम्बकम है।
* इस महामारी के दौर में हम देख रहे हैं कि सभी श्रमिक अपने–अपने घरों की ओर भाग रहे हैं चाहें तो पैदल, बैलगाड़ी, मोटर साइकिल या साइकिल चले जा रहे हैं। कोरबा में भूखे–प्यासे बूढ़े, बच्चे, जवान, महिलाएं, बिना पके, बिना रुके केवल एक ही आस में हम सुरक्षित अपने घरों तक पहुंच जाएं, जिस भी रास्ते या पथ से यह कारवां गुजर रहा है वहां की जनता उन्हें खाना, दाना, पानी, चरण पादुकाएं, वस्त्र आदि प्रदान कर रही है, यह हमारा भारत का ही दर्शन है जो अतिथि देवो भव, में विश्वास करता है और सहयोग करके चैन की नींद सोता है।
* इस वैश्विक महामारी में हमारे ईश्वर, भगवान, जो भारत और भारत की जनता को संभालने में लगे हैं, वह हमारे डाक्टर्स, जो अपनों से दूर रह कर बेगानों के लिए मसीहा बने हैं, और उन्हें रोगों से मुक्त कर अपनों के पास भेज रहे हैं, इनके जज्बों को तो दिल से दुआएं हर भारतीय के मुंह से निकल रहा है।

इनके अलावा हमारे पुलिस कर्मचारी, अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, सफाई कर्मचारी, सभी शिक्षक बंधु, मीडिया बंधु इन सभी ने अपने दायित्वों को पूरी तरह से निर्वाह किया है और अभी भी कर रहे हैं। सभी साधुवाद हैं।

हमारे सनातन धर्म व संस्कृति में पहले से ही यह बात थी कि जिस व्यक्ति का चरित्र नहीं जानते उसके हाथ का जल व अन्न नहीं ग्रहण करना है क्योंकि अगर हम जानते नहीं कि कोई व्यक्ति किस विचार का है, क्या शुद्धता रखता है, कौन से गुण प्रधान का है, कौन सा कर्म करके धन कमा रहा है, शुचिता या शौच का कितना ज्ञान है, किस विधा से भोजन बना रहा है। शुद्धता के मानदंड क्या हैं।

कहा जाता है कि जैसा खाए अन्न वैसा रहे मन।

इस करोना महामारी ने हमें आज 1 मीटर की दूरी रखने को कहा, जिसके चरित्र का पता नहीं उसे स्पर्श करने को भी मना है।

हर जगह का पानी व भोजन करने के लिए भी मना किया है, यह सारी बातें हमारे पूर्वज बताते थे और करते भी थे तब हम Discrimination करने का मजाक बनाते हैं लेकिन आज वही बातें सत्य प्रतीत हो रही हैं। प्राचीन समय में गाँवों के बाहर, कुछ कच्चे मकान होते थे परदेशियों को ठहराने के लिये।

हमारे शास्त्रों में जल को ही शुद्धिकरण का माध्यम माना गया है कि अगर घर में कोई भी बाहर

से आए तो उसे अपने चप्पल बाहर ही उतारनी है, पैरों व हाथों को धोकर ही घर में प्रवेश करना है, पहले तांबे की बड़ी नांद में पानी भरकर रखा जाता है। आज यही बात सामने आ रही है कि तांबे पर वायरस ज्यादा देर तक नहीं टिकता, हमारे सनातन धर्म में हर पूजा में यज्ञ, हवन में कई पुजारी हाथ प्रक्षालन करके ही आगे के कार्य संपन्न करने का निर्देश देता। बार–बार पवित्र करने के लिए मंत्रोच्चार करता है। आज हम दैनिक जीवन में अपना कर वायरस से दूर रहने का प्रयास कर रहे हैं। जन्म हो या मृत्यु हर क्रिया में Isolation व क्वारंटाइन 13 दिनों तक किया जाता है। माँ और बच्चे को संक्रमण से बचाने के लिए गोरसी या सिगड़ी में नीम, अजवाइन का धुआं किया जाता है। गर्म पानी दवाई डाल कर पीने को दिया जाता है जिससे किसी भी प्रकार का संक्रमण न हो सके है।

इसी तरह मृत्यु में दाग देने वाले व्यक्ति को 13 दिन तक स्पर्श करने को मना किया जाता है, तथा हवन, पूजन के शुद्धिकरण के बाद ही वह समाज में आने–जाने लायक माना जाता है। यह सभी हमारी परम्पराओं में है। इस वैश्विक महामारी में लॉक डाउन के चलते हम सभी अपने घरों में बंद हैं और सभी मिलकर संक्रमण से दूर रहने का प्रयास कर रहे हैं।

हमारी सरकार अपनी तरफ से विशेष प्रयास कर रही, संक्रमण को रोकने की थोड़ी जिम्मेदारी हमारी भी बनती है, इस वैश्विक महामारी में अपना अमूल्य सहयोग देने की फिर वह चाहे किसी भी रूप में हो।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु भां कबूचित दुखभाग भवेत्।

बेटियाँ

बेटियाँ फूल की तरह होती हैं
जो सुगन्ध फैलाती हैं।
बेटियाँ जांबाज होती हैं
जो सब कामों में हाथ बटाती हैं।
बेटियाँ सहृदय होती हैं
जो सुख–दुःख बाँटती हैं।
बेटियाँ सक्रिय होती हैं
जो सब काम कर लेती हैं।
उन्हें कभी थकान नहीं होती
माता–पिता परिवार के लिए।
वे नहीं कहना नहीं जानती

बेटी है तो घर–आँगन–बाहर
में खुशहाली है।
प्यार है, सम्मान है
आराम है, विराम है।
एक से एक व्यंजन बनाकर
खिलाती है बेटियाँ।
जी हां में ही उत्तर देती हैं बेटियाँ
प्यार की नदियाँ होती है बेटियाँ।
आओ इन्हें जीवन में निरन्तर
बहते रहने दें।

रमाकान्ति साहू

नन्ही कली

– श्वेता झा

आज सरिता का मन बहुत उदास था। घर से निकलते हुए सूरज ने कुछ ऐसा कह दिया कि काम में मन नहीं लग रहा था, सारा दिन वह उदास चुपचाप बैठी रही। बस बार–बार घड़ी की सुइयों की ओर देखती और कांप उठती जैसे–जैसे घड़ी के काँटे आगे बढ़ रहे थे, उसकी धड़कन मानो दुगुनी तेजी से बढ़ रही थी। घड़ी की सुईयां उसके मन को झिंझोड़ रही थी। जी चाहता था कि इन्हें रोक दे, मगर घड़ी की सुइयों को रोकने से क्या? क्या, वक्त ठहर जाएगा? धीरे–धीरे ऑफिस बंद होने का वक्त हो गया, सरिता ने बोझिल मन से बैग उठाया और चल पड़ी। सामने से कितने खाली ऑटो निकले पर उसने रोका नहीं। शायद वह घर जाना ही नहीं चाहती थी। तभी एक ऑटो वाले ने रुक कर पूछा बहन जी कहां जाना है। शायद वह घर जाना नहीं चाहती थी। तभी तो उसने ऑटो वाले से धीरे चलने को कहा उसे लग रहा था जैसे समय तेजी से भाग रहा है। अरे घर इतनी जल्दी आ गया! सरिता ने कांपते हाथों से दरवाजा खोला अंदर कदम रखा तो देखा, जिस डर से वह बचना चाह रही थी वह उसके सामने था... उसका पति सूरज। आज सूरज इतनी जल्दी घर आ गया! आज उसे कैसे वक्त मिल गया? हाँ आज तो उसे अपनी मान–प्रतिष्ठा बचानी है ना। आज उसकी मर्जी है, लेकिन मेरी मर्जी? मेरी इच्छाओं का क्या? इसी उधेड़बुन में फीकी मुस्कान के साथ उसने सूरज से पूछा आज जल्दी घर आ गए? हाँ डाक्टर के पास जाना है ना, सूरज ने कहा। सरिता की जैसे सांसें रुक गईं। भीगी आंखों से चुपचाप वह चाय बनाने चली गई। तभी सूरज ने जोर से आवाज देकर कहा जल्दी करो, देर नहीं करना है। मगर सविता को तो लग रहा था कि कैसे वह समय को रोक ले। कैसे वह सूरज की इस बात पर राजी हो गई। उसे इतना बुरा लग रहा है, तो सूरज को बुरा क्यों नहीं लग रहा? क्या उसे कोई लगाव नहीं उस बीज से जिसका अंश उसन सरिता की कोख में बोया था। आज वह उस नन्हे पौधे को उखाड़ फेंकना चाहता है। बस इसलिए क्योंकि वह एक लड़की है। सब सोचते–सोचते कब ऑटो में बैठ सरिता हॉस्पिटल की ओर निकल गई पता ही नहीं चला। उसका ध्यान अचानक तब टूटा जब ऑटो रुका, देखा तो वीरान रास्ते में ऑटो चालक सूरज की गर्दन पर चाकू अड़ाए खड़ा था और उनसे पैसे और जेवर मांग रहा था। दोनों अचानक हुए इस हमले से घबरा गए। तभी देखा कहीं से एक लड़की आई और ऑटो चालक पर टूट पड़ी। उससे दो चार हाथ किए और अगले ही पल चाकू की नोक ऑटो वाले के गर्दन पर थी। इतनी देर में कुछ और लोग जमा हो गए। ऑटो चालक को पुलिस थाने भेज दिया गया। लोगों की बातों से पता चला कि वह लड़की एक ठेले वाले की बेटी है, जो बच्चों को कराते सिखाती है। लड़की ने सूरज से पूछा आप लोग ठीक तो हैं ना? कहां जाना है? ऑटो बुला देती हूं। तब सरिता ने हॉस्पिटल और सूरज ने घर कहा। सरिता सूरज को अवाक देखती रह गई। घर पहुंचते ही सूरज सरिता के घुटनों पर गिर पड़ा और रोने लगा। उसने सरिता से माफी मांगते हुए कहा कि आज उस लड़की ने मुझे बहुत बड़े अपराध से बचा लिया। उसने मेरी आंखें खोल दी। मैं अपनी बिटिया को इस दुनिया में जरूर लाऊंगा। जब एक गरीब ठेलेवाला अपनी बेटी की ऐसी परवरिश कर सकता है, कि वह मुझ जैसे पुरुष की रक्षा कर सकती है तो, मैं क्यों नहीं? सरिता की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। यह आंसू उसके डर के खत्म होने और उसकी नन्हीं कली को नई जिंदगी मिलने की खुशी में बह रहे थे।

डिजिटल साक्षरता

सूर्य प्रकाश सोनी
एम. एड. प्रशिक्षार्थी
आई.ए.एस.ई. बिलासपुर
sunlight.soni541@gmail.com

प्रस्तावना (Introduction):– आज के डिजिटल युग में सभी को डिजिटल रूप से साक्षर होना आवश्यक हो गया है। साधारण व्यक्ति, किसान को लेकर शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापार एवं शासन–प्रशासन सभी को डिजिटल साक्षर होना आज की आवश्यकता हो गई है।

डिजिटल साक्षरता का तात्पर्य तकनीकी और इंटरनेट के माध्यम से चीजों का पढ़ना, लिखना, समझना। डिजिटल साक्षरता एक व्यक्ति की विभिन्न प्लेटफार्म पर लेखन और अन्य माध्यमों के माध्यम से स्पष्ट जानकारी खोजने, मूल्यांकन करने और बनाने की क्षमता को संदर्भित करता है।

डिजिटल साक्षरता का तात्पर्य तकनीकी और इंटरनेट के माध्यम से चीजों का पढ़ना, लिखना, समझना। डिजिटल साक्षरता एक व्यक्ति की विभिन्न प्लेटफार्म पर लेखन और अन्य माध्यमों के माध्यम से स्पष्ट जानकारी खोजने, मूल्यांकन करने और बनाने की क्षमता को संदर्भित करता है।

डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy):–

डिजिटल साक्षरता से तात्पर्य है कि डिजिटल उपकरणों जैसे कम्प्यूटर, मोबाइल/ स्मार्टफोन, टेबलेट आदि की सामान्य जानकारी एवं उसका प्रचालन आता हो। साथ डिजिटल उपकरणों के हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर की सामान्य जानकारी और मोबाईल एप्स की सामान्य जानकारी होना चाहिए।

मोबाइल फोन विज्ञान का एक अद्भुत आविष्कार है– जिसने पूरी दुनिया का नक्शा ही बदल दिया है। इसके कारण लोगों को सोचने–समझने का तरीका ही बदल गया है। शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं है। परंपरागत शिक्षण के बाद ई–लर्निंग एवं आज एम.–लर्निंग (Mobile Learning) का युग है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को भी इन सभी का ज्ञान अति आवश्यक है।

सामान की खरीदी (Shoping) रुपयों का लेनदेन (Online Banking/ Mobile Banking/ e wallets) शासकीय योजनाओं का लाभ (DBFT/online payment/Jan Dhan Yojna/Bima), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (Online Learning/e learning/Digital learning/use of educational Apps/Audio vedio lecture) भी डिजिटल होता जा रहा है। विद्यार्थी, शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षार्थी सभी के लिए डिजिटल साक्षरता अनिवार्य प्रतीत होता है। वर्तमान समय में जब कोरोना वायरस के संक्रमण से बचना आवश्यक है तब डिजिटल माध्यम से अध्ययन अध्यापन ज्यादा प्रभावशाली एवं श्रेष्ठ है।

शैक्षिक मोबाइल एप्स (Educational Mobile Apps)

आज हम महत्वपूर्ण जानकारी या संदेश को बहुत कम समय में हर व्यक्ति पहुंचाने के लिए मोबाइल

का उपयोग करते हैं। मोबाइल (स्मार्ट फोन) में अनेक शैक्षिक ऐप्स भी उपलब्ध होते हैं, जिनकी सहायता से शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन संभव है। आज शिक्षा को रुचिकर, आसान एवं प्रभावशाली बनाने में शैक्षिक ऐप्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे सॉफ्टवेयर प्रोग्राम जिनमें शिक्षा से जुड़ी विभिन्न जानकारियाँ उपलब्ध रहती है जिनका उपयोग अध्ययन अध्यापन में किया जा सकता है, उन्हें शैक्षिक एप्स कहते हैं। इन एप्स में शिक्षा संबंधी जानकारियाँ ऑनलाईन एवं ऑफलाईन दोनों प्रकार से प्राप्त की जा सकती है। ऑनलाईन मोड के लिए इन्टरनेट की आवश्यकता होती है जबकि ऑफलाईन के लिए इन्टरनेट की आवश्यकता नहीं होती है।

कुछ महत्वपूर्ण शैक्षिक एप्स निम्नानुसार हैः- DIKSHA APP, CG-MMTB App, The Teacher App, ePathshala, Topper- Learning app etc.

ई-वालेट्स (E-wallets):-

ई-वालेट या डिजिटल वालेट का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक ट्रांजेक्शन करने के लिए किया जाता है, जिसमें ऑनलाईन खरीददारी, बिल भुगतान, रिचार्ज, टिकट बुकिंग, मनी ट्रांसफर शामिल है। का पूरा नाम है। कुछ महत्वपूर्ण ई-वालेट्स निम्नानुसार हैः- BHIM, payTM, Google Pay, phonePe, Amazon Pay, Yono by SBI, Citi MasterPass, ICICI Pockets, HDFC payZapp, BHIM Axis pay, Mobikwik etc.

निष्कर्ष (Conclusion):- अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान डिजिटल युग में विद्यार्थी, शिक्षक, प्रशिक्षार्थी सभी को डिजिटल रूप से साक्षर होना आवश्यक एवं अनिवार्य प्रतीत होता है। डिजिटल रूप से साक्षर होने पर शिक्षक विद्यार्थियों को विद्यालयीन समय के अतिरिक्त अन्य समय में भी अधिगम में सहायता प्रदान कर सकते हैं। आने वाला समय डिजिटल युग होगा जिसमें विद्यार्थी, शिक्षक एवं पाठ्यक्रम सब कुछ ऑनलाईन/डिजिटल होगा। विद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रवेश से लेकर परीक्षा एवं मूल्यांकन तक सभी प्रक्रिया ऑनलाईन/ डिजिटल होगा। डिजिटल सामग्री से समय एवं श्रम की बचत होगी। डिजिटल रूप से साक्षर होकर शिक्षक डिजिटल भारत के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

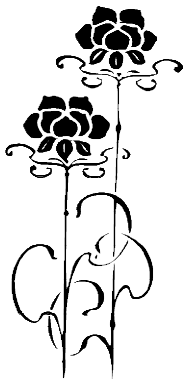

"मन के हारे हार है मन के जीते जीत" (मनोभाव)

नमन और अमन दोनों दोस्त साधारण परिवारों से हैं। घर की दिक्कतों की वजह से उनकी पढ़ाई सामान्य हिन्दी मीडियम स्कूल में हुई। दोनों का एडमिशन एक इंजीनियरिंग कॉलेज में हुआ। दोनों की दिक्कत यह थी कि पूरा सिलेबस और पुस्तकें इंग्लिश में थी। इंग्लिश अच्छी न होने की वजह से दोनों क्लास में अपनी बात नहीं रख पाते थे। उनके पास अधिकांश इंग्लिश मीडियम से पढ़े हुए छात्र थे। नमन और अमन अन्य छात्रों को धारा प्रवाह अंग्रेजी में बातचीत करते देखते थे तो उन्हें हीनता महसूस होती थी।

कुछ दिन बाद प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं हुईं और दोनों ही अनेक विषयों में फेल हो गए। दोनों बहुत चिंतित थे क्योंकि दोनों के घर वालों ने उनसे बड़ी उम्मीदें पाल रखी थीं। दोनों ने अपने–अपने तरीके से समाधान सोचना शुरू किया।

अमन ने शांति से बैठकर सोचा कि सिलेबस, पुस्तकें, परीक्षा सब इंग्लिश में है और यदि इंजीनियरिंग करना है तो इंग्लिश सीखना ही पड़ेगा। इस सोच में उसने एक्शन का पावर डाला। उसने हिम्मत जुटाई और एक शिक्षक के पास जाकर अपनी समस्या बताई। शिक्षक ने सहानुभूति दिखाते हुए उसे इंग्लिश के टिप्स दिये। शिक्षक ने अन्य छात्रों को भी उसकी मदद को कहा। अमन ने चैलेंज हाथ लिया और जमकर मेहनत की। गलतियाँ होने के बावजूद इंग्लिश में बातचीत शुरू की। इंग्लिश अखबार एवं पुस्तकें पढ़ना शुरू किया। हर बढ़ते दिन के साथ उसकी इंग्लिश बेहतर होने लगी।

इधर नमन ने सोचा सारा कोर्स, पुस्तकें परीक्षाएं पुस्तकें सब इंग्लिश में हैं और मैं इंग्लिश में बेहद कमजोर हूं। यह घबराहट उसके मन में हावी होती चली गई। वह सोचने लगा मैं अंग्रेजी नहीं सीख पाऊंगा। वह पीछे होता चला गया। ऐसी ही हीन भावना वाले अन्य लोगों के साथ धीरे–धीरे उसका मेल बढ़ गया। चुनौती हाथ में लेने के बजाय उसने अपने जीवन में हीनता को स्थान दे दिया।

अगले सेमेस्टर में अमन ने मेहनत के दम पर एग्जाम पास किया। उसका आत्मविश्वास चरम पर पहुंच गया और वह अच्छे छात्रों की सूची में आ गया। उसके उलट नमन इस बार पहले से ज्यादा विषयों में फेल हो गया। दो साल बाद नमन ने इंजीनियरिंग छोड़ दी। सकारात्मक सोच एवं मेहनत के दम पर अमन सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया।

दोस्तों, जीवन में सारे कामों की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम उसके जीत के ख्याल से कितने भरे हुए हैं और हार के ख्याल से कितने डरे हुए हैं। कुछ लोगों के पास सामर्थ्य और साधन कम होता है। परन्तु वे जीतने के विश्वास से इतने भरे होते हैं कि वे जरूर जीतते हैं। सामर्थ्य और साधन मूल्यवान नहीं है, मूल्यवान तो है हमारी जीत के प्रति आशा, हमारी जीत के प्रति विश्वास।

किसी ने सही कहा है, जब दुनिया यह कहती है कि हार मान लो तब आशा धीरे से कान में कहती है कि फिर से प्रयास करो।

– श्रीमती विभा पैकरा
बी. एड. द्वितीय वर्ष

MOOCs and Global Teacher

Surya Prakash Soni
M. Ed. Scholar
I.A.S.E. Bilaspur (C.G.)
Sunlight.soni541@gmail.com

Massive Open Online Course (MOOC) एक वेब–आधारित प्लेटफार्म है जो दुनिया भर में असंख्य छात्रों को सबसे अच्छे संस्थानों के साथ दूरस्थ शिक्षा का मौका देता है। यह 2008 में वापस स्थापित किया गया था और 2012 में एक लोकप्रिय शिक्षण उपकरण के रूप में गति प्राप्त की। कई MOOC में ऐसे समुदाय होते हैं जिनके पास अध्ययन/ पाठ्यक्रम सामग्री और वीडियो व्याख्यान के साथ–साथ छात्र, प्रोफेसर और टीचिंग असिस्टेंट के बीच इंटरैक्टिव सत्र और फोरम होते हैं।

यह कैसे कार्य करता है?

इसे एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की तरह समझें जहाँ छात्र और शिक्षक एक साथ आते हैं और संसाधनों का एक ऑनलाइन पुल बनाते हैं, जो आपके उपयोग के लिए आसानी से उपलब्ध है। आपके पास व्याख्यान सुनने नोट्स डाउनलोड करने, अपना योगदान देने और सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने साथियों के साथ संवाद करके अपनी बात साझा करने का विकल्प है। नेटवर्किंग एक अभाषी ऑनलाइन कक्षा की तरह प्रतीत होती है।

भारत में MOOCs कार्यक्रमः–

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) के साथ मिलकर उच्च माध्यमिक, स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री के लिए भारत में MOOC कार्यक्रम शुरू किया गया है। यह उन विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कव्हर करेगा, जो नियमित कैंपस अध्ययन में पढ़ाया जा सकता है या नहीं पढ़ाया जा सकता है।

संक्षेप में, SWAYAM के स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव–लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स नाम के MOOCs लिए एक नया पोर्टल, छात्रों को 2000 पाठ्यक्रमों की सूची से कुछ भी अध्ययन करने के अवसर के साथ प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है, जिसमें से 200 वर्तमान में पंजीकरण के लिए उपलब्ध है। स्व–मूल्यांकन के साथ आडियो–विजुअल माध्यम, चित्र, शोध और केश स्टडी इन पाठ्यक्रमों के अध्ययन के लिए चुने गए कुछ माध्यम हैं।

सामान्य रूप से SWAYAM और MOOCs के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करने के लिए ई–लर्निंग सेंटर के अध्यक्ष प्रोफेसर ए. के. बक्शी ने कहा– ये ऑनलाइन पाठ्यक्रम वरिष्ठ शिक्षाविदों की एक टीम द्वारा विकसित किए गए हैं और उच्च नामांकन अनुपात से वृद्धि की उम्मीद है गुणवत्ता के साथ समझौता किए बिना शिक्षा। ये पाठ्यक्रम देश में डिजिटल विभाजन को कम करने में भी मदद करेंगे।

MOOC का भविष्य एवं सीमाएँः–

जैसा कि बताया जा रहा है, MOOC कक्षा शिक्षण के पारंपरिक दृष्टिकोण को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है, लेकिन इसका उपयोग वैकल्पिक तरीकों के रूप में सीखने के विभिन्न स्कूलों के बीच की खाई को पाटने के लिए किया जा सकता है। हालांकि यह कहा गया है कि MOOC की कुछ सीमाएँ हैं जो नीचे सूचीबद्ध हैं–

* हालांकि डिजिटलाइजेशन अब बहुत जरूरी है, ऐसे कई राष्ट्र हैं जो MOOC के लिए नामांकन करने के लिए बुनियादी आवश्यकताएं प्रदान करने में असमर्थ हैं इसलिए का प्रसार सीमित है।
* यह हमेशा निश्चित नहीं है कि सभी MOOC डिग्री. प्रमाण पत्र और/ या डिप्लोमा प्रदान करते हैं जो उन उम्मीदवारों की संख्या को सीमित करता है जो इन पाठ्यक्रमों के लिए नामांकन करते हैं क्योंकि कई कंपनियां प्राप्त शिक्षा के स्तर के रिकार्ड के लिए पूछती हैं और उम्मीदवार उन्हें प्रदान करने में असमर्थ होते हैं।
* एक छात्र का जीवन एक कमरे तक सीमित है जिसमें इंटरनेट का उपयोग और एक लैपटॉप या एक कम्प्यूटर है जो बाहरी दुनिया के साथ बहुत कम या कोई बातचीत की अनुमति देता है।
* चूंकि MOOCs वेब आधारित है, इसलिए उम्मीदवारों/ छात्रों की निगरानी नहीं होती है, जो साहित्यिक चोरी या धोखा देने का जोखिम उठाते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा में रोजगार के अवसरः–

ऑनलाइन शिक्षा की नई दुनिया अध्ययन के कई क्षेत्रों में कालेज स्तर के पाठ्यक्रमों की सस्ती शिक्षा प्रदान करती है। हालांकि यह कहा जाता है कि नियोक्ता MOOC द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा और शोध के स्तर से पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं, जब तक कि उम्मीदवार प्रौद्योगिकी या कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में नौकरियों की तलाश में नहीं है।

आमतौर पर, यह कहा जाता है कि MOOC शिक्षा प्रदान करने पर केन्द्रित है जो अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों में कौशल में सुधार करेगा, जो ज्यादातर प्रौद्योगिकी, विज्ञान और गणित पर केन्द्रित है। हालांकि कुछ ऑनलाइन पाठ्यक्रम पाठ्यक्रमों के पूरा होने का रिकार्ड प्रदान करते हैं, ऑनलाइन शिक्षा अवधारणा अपेक्षाकृत नई है। यह पाया गया है कि छात्र इस नई अवधारणा के लिए तैयार हैं लेकिन कई नियोक्ता अभी भी इसके बारे में संकोच और संदेह कर रहे हैं।

संक्षेप में, MOOCs केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में उच्च शिक्षा के लिए एक बेहतरीन मंच है लेकिन जब MOOC से सफल छात्रों की भविष्य की संभावनाओं के बारे में बात की जाये, तब इसके अपने लाभ और हानि हैं। चूंकि अवधारणा नई है और हाल ही में प्रशंसा मिली है, यह भविष्य में सबसे अच्छी अवधारणाओं में से एक साबित हो सकता है।

Global Teacher (वैश्विक शिक्षक)

एक वैश्विक शिक्षक एक ऐसा शिक्षक है जो विभिन्न वैश्विक मुद्दों को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करता है जिसमें बहुसंस्कृतिवाद, आर्थिक, पर्यावरण और सामाजिक मुद्दे शामिल हैं। शिक्षक स्थानीय

कक्षा की सामान्य सीमाओं से परे अपने दृष्टिकोण के दायरे का विस्तार करता है, क्योंकि छात्र विविधता के बारे में सीखते हैं और कैसे वैश्विक समाज में फिट होते हैं। जैसे–जैसे दुनिया अधिक परस्पर जुड़ती जाती है, शिक्षक शिक्षा के प्रति अपने दृष्टिकोण में विविधता ला रहे हैं। आज, वैश्विक शिक्षण न केवल लागू किया जाता है, अपितु सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी जो छात्रों को विशाल और विविध तरह के विचारों और संस्कृतियों के बोध कराता है।

शिक्षक एक बच्चे का, दूसरा माता–पिता तुल्य होता है। एक बच्चे के भविष्य में एक शिक्षक की भूमिका होती है। एक छात्र के जीवन में ज्यादातर समय वह स्कूल में होता है। उन्होंने घर से ज्यादा स्कूल से अपनी जिंदगी सीखी। इसलिए यह एक शिक्षक का कर्तव्य है कि उसे बेहतर सबक सिखाएं जो न केवल पाठ्य पुस्तक में है बल्कि सामान्य चीजों के बारे में भी है।

एक बच्चा अपने माता–पिता की अवज्ञा कर सकता है लेकिन जब उसके शिक्षक ने उसे करने के लिए कहा तो वह उसे अवश्य करेगा। इसलिए शिक्षक को सावधान रहना चाहिए कि वे छात्रों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

शिक्षकों को छात्रों को अपनी अच्छी क्षमताओं को बाहर लाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें अच्छा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

संदर्भ सूचीः–

1. https://www.indiaeducation.net/online-education-about-moocs-assive-open-online-courses-india-abroad.html.
2. https:// www.quora.com/what-is-a-Global-Teacher.

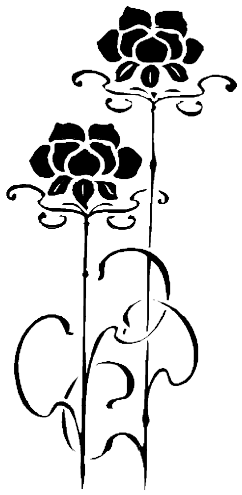

प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका

– श्रीमति रमाकान्ति साहू
प्राध्यापक
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान
बिलासपुर (छ.ग.)

हर क्षेत्र की तरह प्रशासन एवं राजनीति के क्षेत्र में भी महिलाओं को उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। मानव सभ्यता के हर देशकाल में यह दृष्टिगत होता है, चाहे वह प्राचीन काल हो मध्यकाल या आधुनिक काल पश्चिमी देश हों या पूर्वी देश, हो या विकासशील या गरीब देश। महिलाओं ने अपनी योग्यता को पहचान दिलाने में बहुत संघर्ष किया है और यह संघर्ष आज भी जारी है।

ऐसा भी नहीं है कि मानव इतिहास में प्रशासन व राजनीति दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की कोई भूमिका ही नहीं थी पूर्व मध्यकाल में कश्मीर की रानी दिद्दा दिल्ली सल्तनत की रजिया सुल्तान, काकतीय रानी रूद्राम्मा आदि उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। कल्याणी के चालुक्यों की राजकुमारियाँ प्रदेशों की शासिका थीं। लेकिन ये नियम कम और अपवाद अधिक थे। इस स्थिति में बदलाव पश्चिमी विश्व में औद्योगिक क्रांति के साथ आया, जब महिलाओं ने बड़ी संख्या में आर्थिक गतिविधियों में योगदान दिया, इसमें विश्व युद्धों के साथ और वृद्धि हुई, जब पुरूषों में युद्धों की भागीदारी के कारण महिलाओं ने आर्थिक मोर्चे को संभाला, इसने सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका व उनके योगदान के महत्व के बारे में आकर्षित किया। धीरे–धीरे महिलाएँ केवल श्रमिक से कौशल युक्त श्रम जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासक, वकील, खिलाड़ी, अभिनेत्री आदि महत्वपूर्ण पदों को भी प्राप्त किया, इसी तरह प्रशासन में किरण बेदी आदि अनेक उदारण आज विश्वभर में देखे जा सकते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में हमारे देश में इंदिरा गांधी जर्मनी की एंजेला मार्केल, जैसे भी उदाहरण है जहॉ इन्होंने राष्ट्र का नेतृत्व संभाला।

हाल ही में सना माटिन विश्व की सबसे युवा (34 वर्ष की आयु में) सेवारत् प्रधानमंत्री बनी। वर्तमान में ऐसे अनेकों उदाहरणों के बाद भी महिलाएँ आज भी अपनी स्थिति के लिए संघर्षरत हैं।

अर्न्तसंसदीय यूनियन डाटा के 2014 के आंकड़ों के अनुसार महिलाओं की राजनीति पदों में भागीदारी का वैश्विक औसत केवल 24.6 है। अमेरिका, चीन, जापान एवं रूस जैसे देशों में अब तक राष्ट्र प्रमुख के रूप में एक भी महिला नहीं चुनी गयी हैं।

भारत में भी स्थिति सोचनीय है। 17वीं लोकसभा चुनाव में महिला प्रतिनिधि 14.39% रही, यद्यपि 1952 के 4.4% से यह बेहतर है। किंतु वैश्विक औसत जो स्वयं कम है उससे भी यह काफी कम है।

भारत के विविध राज्यों में स्थिति राष्ट्रीय औसत से भी खराब है। यद्यपि स्थानीय निकायों जैसे पंचायत व नगरपालिका में महिलाओं को आरक्षण दिए जाने के कारण वहॉ महिला प्रतिनिधियों की व्यापक भागीदारी देखी जा सकती है, लेकिन वहाँ सबसे बड़ी चुनौती उनकी रबर स्टाम्प बनकर रह

जाने की है।

भारत में महिला का काम की दर केवल 26% है, जबकि चीन में 46% है। राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए भारतीय महिलाओं में यू. एन. ओ. सचिव विजय लक्ष्मी पंडित, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी, जयललिता, उमा भारती, मायावती और वसुन्धरा राजे सिंधिया, राष्ट्रपति प्रतिमा देवी पीटिल, पूर्व विदेश मात्री सुषमा स्वराज, वर्तमान वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन शामिल हैं।

प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका का आशय है कि वर्तमान विकास के युग में प्रशासन एवं राजनीति के क्षेत्र में पुरुषों के सापेक्ष इनकी संख्या को पुरुषों के बराबर लाने से है जो कि अभी–अभी अत्यंत कम है। यह तभी संभव होगा जब महिलाओं के विकास हेतु परिवार, समाज एवं राष्ट्रीय संरक्षण तथा सहयोग इन्हें प्राप्त हो सकेगा। महिला सशक्तीकरण को हमें ही दिल से स्वीकारना होगा।

तू भी तो सशक्त है

तू भी चल, तुझमें भी तो रक्त है।
तू भी बदल, तेरा भी तो वक्त है।
शौर्य की चाह में, स्वाभिमान की राह पर।
कुछ कर गुजर, तू भी तो सशक्त है।
सदियों से फंसी है तू, क्यों रूढ़ियों के जाल में?
न जी किसी के खौफ में, निडर है तू अविभक्त है।
उठ जरा सम्हल जा तू, क्यों तू इतनी त्रस्त है?
खुद को जरा निहार ले, तू भी तो सशक्त है।

अपने में सिमट के तू, इतनी क्यों विरक्त है?
जिन्दगी हसीन है, ले जरा तू फैसले।
जहान के सवालों से, क्यों तू इतनी पस्त है?
जी ले अपनी शर्तों पे, तू भी तो सशक्त है।
बन के आदिशक्ति तू, कर सकती राह प्रशस्त है।
छीन ले तू अपना हक, ना मिले जो माँग के।
इतना क्यों तू सोचती? तेरा भी तो तख्त है।
दिखा अपना सामर्थ्य, कि तू भी तो सशक्त है।

–शैलेन्द्री सिंह गौड़
एम. एड. द्वितीय सेमेस्टर

"मूर्ख बालक से महान् विद्वान कालिदास बनने तक का सफर" (संकलित)

नरेश कुमार कमलेश
बी. एड. द्वितीय वर्ष

जनसामान्य में यह धारणा है कि हर महान हस्ती के सफलता के पीछे उनके किसी नजदीकी महिला जैसे कि माता, पत्नी, बहन तथा मित्र का हाथ होता है। कालिदास के सफलता के पीछे उनकी पत्नी विद्योत्तमा का हाथ रहा है।

सन् 150 ईसवी पूर्व से 450 ई. के मध्य उज्जैन में राजकुमारी विद्योत्तमा का जन्म हुआ। वह बचपन से होनहार, बुद्धिमान थी तथा आगे चलकर विदूषी बनी। उसे सैकड़ों शास्त्र, ग्रंथ कंठस्थ याद थे। उनके पिता ने उसे किसी योग्य राजकुमार से विवाह कर वैवाहिक जीवन के बंधन में बंधने का सलाह दिया। तब विद्योत्तमा ने शर्त रखी कि जो उसे शास्त्रार्थ में पराजित करेगा, वह उसी राजकुमार से विवाह करेगी। विद्योत्तमा के पिता ने पूरे राज्य में इस बात की घोषणा करा दी तथा स्वयंवर एवं शास्त्रार्थ का आयोजन किया। इसमें पूरे भारत के राजाओं, राजकुमारों एवं विद्वानों को आमंत्रित किया। समस्त राजाओं, राजकुमारों एवं विद्वानों ने राजकुमारी के साथ शास्त्रार्थ किया, लेकिन कोई उसे पराजित नहीं कर सका। इससे उनके अहम को बहुत ठेस लगी। उज्जैन एवं दूर-दूर से आये विद्वानों, राजाओं, राजकुमारों ने राजकुमारी विद्योत्तमा को नीचा दिखाने के लिए किसी मूर्ख व्यक्ति से उसका विवाह करने का ठान लिया। सभी मूर्ख व्यक्ति की तलाश में एक जंगल से गुजर रहे थे। तभी उनकी नजर एक बालक पर पड़ी, जो पेड़ के उसी शाखा को काट रहा था, जिस पर वह बैठा था। सब समझ गये कि इससे मूर्ख व्यक्ति संसार में नहीं हो सकता। अतः राजकुमारी का विवाह इसी व्यक्ति से कराना ज्यादा उपयुक्त होगा।

समस्त विद्वानों ने उस मूर्ख किशोर (बालक) को समझाया कि तुम्हें मौन रहना है। ईशारों में राजकुमारी के प्रश्नों का जवाब देना है। बाकी हम संभाल लेंगे। तब राजकुमारी से तुम्हारा विवाह करा देंगे।

सभी विद्वानों ने राजकुमारी विद्योत्तमा को बताया कि उक्त किशोर बहुत विद्वान है, उन्हें हजारों शास्त्रों, ग्रंथों का ज्ञान है। लेकिन वे हमेशा मौन रहते हैं। इसलिए इशारों में आपके प्रश्नों का जवाब देंगे। राजकुमारी तैयार हो गयी, शास्त्रार्थ शुरू हुआ।

राजकुमारी ने एक उंगली ऊपर उठाई, तब मूर्ख किशोर ने समझा कि ये राजकुमारी मेरा

एक आंख फोड़ देना चाहती है। ऐसा सोचकर उसने दो उंगली ऊपर उठा लिया। विद्वानों ने स्पष्टीकरण करके राजकुमारी को समझाया कि आप एक उंगली द्वारा कहती हैं कि 'ईश्वर एक है'। लेकिन ये बालक दो उंगली से बताना चाहता है कि 'ईश्वर और उसकी माया' से ही सृष्टि चलता है। बात राजकुमारी को जंच गयी।

फिर राजकुमारी ने अगले प्रश्न के रूप में पांच ऊंगली सहित 'पंजा' दिखायी तो मूर्ख बालक समझा कि ये राजकुमारी मुझे थप्पड़ मारना चाहती है, मैं भी इससे कम नहीं, इसलिए मैं इन्हें घूंसा मारुंगा। यह सोचकर अपना घूंसा दिखाया।` तब विद्वानों ने स्पष्टीकरण करके राजकुमारी को समझाया कि आप 5 उंगलियों के इशारे से 5 ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान प्राप्ति का साधन बताया लेकिन ये विद्वान बालक ने बताया है कि इन 5 ज्ञानेन्द्रियों को सिकोड़ने (नियंत्रित) करके ईश्वर की प्राप्ति होती है। बात राजकुमारी को पुनः जँच गयी।

अगले प्रश्न के रूप में राजकुमारी ने अपनी जीभ दिखाई, तो मूर्ख बालक ने समझा कि राजकुमारी मुझे चिढ़ा रही है, इसलिए उसने उसके दोनों होठों को पकड़कर मुंह बंद कर दिया। तब विद्वानों ने स्पष्टीकरण दिया कि राजकुमारी जी आप बताना चाहती हैं कि जीभ से स्वाद का आनंद लिया जाता है लेकिन विद्वान बालक बता रहा है कि इस जीभ के (स्वाद) नियंत्रण से आत्मा का विकास होता है। बात पुनः राजकुमारी को जंच गयी। इस प्रकार काफी समय तक दोनों के बीच इशारों के द्वारा शास्त्रार्थ चलता रहा, अंत में राजकुमारी को मानना पड़ा कि वास्तव में यह बालक विद्वान है, और उसे उस बालक से विवाह करना पड़ा। लेकिन मन ही मन उसे संशय भी था कि कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है, इसलिए रात को पुनः उस मूर्ख बालक से बाहर खड़े ऊँट के बारे में संस्कृत में प्रश्न किया। बालक बोल पड़ा, उसकी पोल खुल गयी। तब राजकुमारी ने उस मूर्ख व्यक्ति को धिक्कारते/ दुत्कारते हुए बोली कि अभी तुरंत घर से निकल जाओ और दुबारा मुंह तभी दिखाना जब विद्वान पंडित बनकर लौटोगे।

उस व्यक्ति को पत्नी की दुत्कार बहुत असहनीय लगी, इसलिए उसने मन ही मन प्रतिज्ञा किया कि जब मैं पूर्ण विद्वान बन जाऊँगा तभी तुम्हें दुबारा मुंह दिखाउंगा। यह सोचकर बाहर निकल गया। पूरा भारत घूम–घूमकर भ्रमण किया, अध्ययन किया और महान् विद्वान एवं संस्कृत का प्रकाण्ड ज्ञाता, महाकवि, नाटककार बनकर लौटा। वही मूर्ख बालक महान् कवि विद्वान कालिदास कहलाया। जिसने रघुवंश, कुमारसंभवम्, मेघदूत, ऋतुसंहार, अभिज्ञान–शाकुंतलम् आदि महाकाव्य एवं नाटक की रचना भी की।

संविधान समीक्षा

दिनांक 27 एवं 28 फरवरी 2020 को महाविद्यालय में संविधान को सहज, सरल एवं सुबोध बनाने के लिए महाविद्यालय ने संविधान विशेषज्ञ श्री ब्रिजेन्द्र शुक्ला, संचालक गुरुकुल कोचिंग सेन्टर बिलासपुर एवं श्री पुर्णेन्दु कुमार भट्ट, संचालक भट्ट कोचिंग सेंटर इन्स्टीट्यूट शेपर ने चार मुख्य बिन्दुओं पर जिसे एम. एड. प्रथम वर्ष के छात्रों ने नुक्कड़ नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया था, कि समीक्षा बहुत ही सरलीकृत कर सबका मन मोह लिया।

बिन्दु निम्नानुसार थे–

1. संविधान की प्रस्तावना– लीडर श्री जीवन लाल एम. एड. प्रथम वर्ष
2. नागरिकों के मौलिक अधिकार– श्रीमती श्रुति अग्रवाल ,,
3. राज्य के नीति निदेशक तत्व– श्री भूखन लाल कर्ष ,,
4. नागरिक के मूल कर्त्तव्य– श्री रघुवर प्रसाद पटेल ,,

संविधान पर चर्चा के प्रतिभागी महाविद्यालय के संकाय सदस्यों का फेकल्टी डेवलपमेंट किया गया। प्रभारी ने उपरोक्तानुसार चार समूह में बांटकर आवश्यक दिशा–निर्देश देकर मंचन कराया।

नागरिकों के मौलिक अधिकार पर श्रीमती श्रुति अग्रवाल ने अपने टीम के साथ प्रस्तुति दी। मूल अधिकार क्या है? व्यक्ति के संदर्भ में, राज्य के संदर्भ में एवं उनकी सीमाओं को भी अच्छे से अवगत कराया। जिन बातों को छात्रों में प्रस्तुतिकरण में छोड़ दिया था, पर विशेषज्ञों ने बताया कि प्रत्येक को **संविधान की प्रस्तावना** :–

हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व–सम्पन्न, समाजवादी, पंथ–निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को;

* सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
* विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,
* प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता, अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्पित होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छः विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

कंठस्थ करना होगा। इसे आत्मसात करना होगा। तभी हमारे द्वारा तैयार किये गये समाज के नागरिकों का विकास होगा। यह जिम्मेदारी शिक्षकों की है, इसलिए हमें अपने जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटना होगा।

नीति निदेशक तत्वों एवं मूल कर्तव्यों के विषय में बताया कि जैसे– स्त्री, पुरुष को समान वेतन का अधिकार, समावेशी शिक्षा, राष्ट्रीय स्मारक की रक्षा, चक्र ध्वज का सम्मान (सामान्य तौर पर हम

इसे तिरंगा कहते हैं लेकिन इसमें चार रंग हैं, इसलिए इस तिरंगे के स्थान पर चक्रध्वज पढ़ा जावे, जिसे सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली– द्वारा (CCRT) अपने प्रशिक्षणों में बताया जाता है), पद का सम्मान आदि मूल कर्तव्यों की व्याख्या की गई। गौरक्षा की अनिवार्यता को बताया गया जिसे धर्म से जोड़कर मूर्खतापूर्ण व्यवहार करना अनुचित है, को उदाहरणों से व्यक्त किया।

संविधान समीक्षा

"कर्तव्यों के बंधन बांधते नहीं हैं, पूर्णतः स्वतंत्र करने की क्षमता रखते हैं।"

सरदार वल्लभ भाई पटेल "हम भारतीयों को अब भूल जाना चाहिए कि वह राजपूत है, एक सिक्ख है, एक जाट है, उन्हें याद रखना चाहिए वह एक भारतीय है। उसके पास अपने देश में हर अधिकार है, लेकिन कुछ कर्तव्यों के साथ।"

यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने अधिकार का ही ध्यान रखे एवं दूसरों के प्रति कर्तव्यों का पालन न करें तो शीघ्र ही किसी के लिए भी अधिकार नहीं रहेंगे। हमारे देश भारत ने इसे करीब से देखा है।

उपरोक्त बिन्दुओं का प्रस्तुतिकरण PPT के माध्यम से भी हुआ। जिसमें सभी अनुच्छेदों पर प्रकाश डालते हुए विस्तृत चर्चा भी की गई। विशेषज्ञों ने समापन सत्र में अपने उद्‌बोधन में कहा कि संविधान को ड्रामा के माध्यम से इतना रुचिकर बनाकर जो नवाचार प्रस्तुत किया गया, यह विधा हमारे लिए भी प्रेरणादायक है। हमें नहीं मालूम था कि संविधान को इस तरह भी बताया जा सकता है।

अंत में प्रभारी प्राचार्य श्रीमती रमाकांति साहू (प्राध्यापक) एवं श्रीमती नलिनी पाण्डेय (प्राध्यापक) ने अपने आर्शीवचन के साथ–साथ अपनी ओर से करणीय बिन्दुओं पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे संस्था के आचार्य डॉ. यू. व्ही. वारे ने आभार प्रदर्शन करते हुए पुनः महाविद्यालय को आवश्यकतानुसार सहयोग देने की अपील की गई।

मौलिक अधिकारों से पहले कर्तव्य का,
जिसे ख्याल नहीं आता।
कैसे चुकाएं कर्ज इस मातृभूमि का,
मन में सवाल नहीं आता।
उसका लहू तो किसी गंदे नाले के पानी से बदतर है
स्व–राष्ट्र का अपमान देखकर जिसके,
खून में उबाल नहीं आता।

डॉ. उल्हास व्ही. वारे
सहायक प्राध्यापक
IASE, बिलासपुर

प्रधानमंत्री

संसदीय शासन प्रणाली में प्रधानमंत्री का पद बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रधानमंत्री संघ कार्यपालिका का प्रमुख होता है। चूंकि भारत में ब्रिटेन के समान संसदीय शासन व्यवस्था को अंगीकार किया गया है, इसलिए प्रधानमंत्री पद का महत्व और अधिक हो गया है। वस्तुतः संसदीय शासन प्रणाली में प्रधानमंत्री शासन की धुरी होता है।

भारत का प्रधानमंत्री भी सिद्धांततः इसी अवधारणा के अनुरूप दिखाई पड़ता है, किन्तु व्यवहारिक तौर पर देखें तो कुछ विशेष स्थितियों में अन्य मंत्रियों से अधिक ताकतवर है। "प्रधानमंत्री की असाधारण शक्तियों को दृष्टि में रखते संविधान सभा के सदस्य प्रो. के. टी. शाह ने संविधान सभा में कहा है कि– प्रधानमंत्री की शक्तियों को देखकर मुझे ऐसा भय होता है कि यदि वह चाहे तो किसी भी समय देश का अधिनायक बन सकता है।"

दूसरा, भारत में व्यक्तित्व आधारित राजनीति के कारण प्रधानमंत्री और शक्तिशाली है। वह चुनाव में मतदाताओं में आकर्षण का केन्द्र होता है। जैसे– जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी, राजीव गांधी, नरेन्द्र मोदी। इसके अलावा प्रधानमंत्री अपने दल का भी अध्यक्ष होता है। अतः वह सरकार व दल दोनों पर नियंत्रण स्थापित कर लेता है। संविधान के सभी मार्ग प्रधानमंत्री की ओर ही जाते हैं। इस प्रकार प्रधानमंत्री देश के प्रभावी रूप से दिशा एवं दशा तय कर सकता है। अब तक के प्रधानमंत्री के कार्यों का विश्लेषण प्रस्तुत कर रहा हूं।

पं. जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे और स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व भी थे। यह प्रधानमंत्री ही नहीं अपितु मंत्रिमण्डल, संसद, दल व राष्ट्र के नेता एवं निर्माता भी थे। वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र राज्य–एक संप्रभु, समाजवादी धर्म निरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणतंत्र के वास्तुकार माने जाते हैं। नेहरू जी के प्रधानमंत्रित्व काल (1947–1964) के दौरान भारत में निर्णयों के समस्त पहलुओं पर नेहरू के प्रभाव के कारण प्रायः 'नेहरु युग' कहा जाता है।

लालबहादुर शास्त्री ने भारत के दूसरे प्रधानमंत्री की शपथ ली। उन्होंने प्रथम प्रधानमंत्री के द्वारा तैयार आम नीतियों को जारी रखा, लेकिन नेहरू जी का अंधानुकरण नहीं किया। वे स्वयं एक दूरदर्शी व्यक्ति थे और तेजी से कठोर निर्णय लेने में भी सक्षम थे। तीन बड़े संकट– मद्रास राज्य में व्यापक हिंसात्मक हिन्दी भाषा विरोधी प्रदर्शन, व्यापक खाद्यान्न कमी, पाकिस्तान के साथ दूसरा युद्ध का सामना सरकार को करना पड़ा। इसके लिए उन्होंने सप्ताह में एक वक्त का भोजन भी त्याग दिया। लोगों से भी इसका आव्हान किया। आश्चर्यजनक रूप से काफी संख्या में लोगों ने इसमें बढ़–चढ़कर योगदान किया।

इंदिरा गाँधी 1966 में देश की पहली महिला प्रधानमंत्री (विश्व की दूसरी) की शपथ ली। इंदिरा गांधी लम्बे समय तक सत्ता में थीं। आर्थिक कार्यक्रमों और शिक्षा के विस्तार के परिणामस्वरूप, मध्य एवं निचली सामाजिक जातियाँ/ वर्ग स्वयं को अंगीकृत कर रही थीं और शहरी भारत में मध्य वर्गों में विकास हुआ था। इंदिरा गांधी का बाह्य आक्रमण के सम्मुख धैर्य एवं आत्मबल और स्पष्टवादिता प्रशंसनीय थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत डरने वाला नहीं है और विश्व मानचित्र पर भारत को सम्मान एवं महत्व दिलाया। इसके बावजूद उनके समय में लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास हुआ था।

1977 तक प्रधानमंत्री पद शक्तिशाली बना रहा किन्तु गठबंधन सरकारों के दौर में प्रधानमंत्री

पद की गरिमा और शक्ति दोनों का अवमूल्यन होती गयी। 1979, 1989, 1991, 1998, 2004, 2009 में गठबंधन सरकारें बनीं। इन गठबंधन सरकारों में प्रधानमंत्री शक्तिहीन हो गया। क्योंकि विभिन्न विरोधी हितों पर आधारित बहुत से दलों की आकांक्षाओं को संतुष्ट करते हुए सरकार को स्थायित्व देना कठिन हो गया।

मोरारजी देसाई की जनता पार्टी सरकार का कार्यक्रम छोटा रहा और पार्टी आंतरिक गुटबाजी और मतभेदों से जूझती रही, लेकिन भारतीय राजव्यवस्था में अपना अमूल्य योगदान दिया। लोकतंत्र का गला घोंटने वाले 42वें संविधान संशोधन को शून्य घोषित कर 43वाँ एवं 44वाँ संविधान संशोधन भारत के राजनीतिक इतिहास में युगांतकारी घटना थी। चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बने जिन्होंने कभी भी संसद का सामना नहीं किया।

राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री का पद संभाला, भारत के पहले युवा प्रधानमंत्री बने। उन्होंने कार्यशैली में परिवर्तन किया। अपनी पार्टी के भीतर उन्होंने संकेत दिया कि अक्षमता, भ्रष्टाचार या चापलूसी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने आधुनिक प्रबंधकीय तकनीकियों की शुरुआत की एवं निर्णयन प्रक्रिया में युवा एवं बहुआयामी लोगों को लेकर आए। उन्होंने लालफीताशाही में कमी करने का प्रयास किया एवं प्रशासन को जन–हितैषी बनाया।

वी. पी. सिंह एवं चंद्रशेखर के समय आर्थिक हालात बुरी दशा में थे और विदेशी विनिमय दर खतरनाक स्तर तक कम हो गया था, जिससे देश में आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया था। नरसिम्हाराव को उनकी सरकार द्वारा उठाये गये आर्थिक सुधारों संबंधी कदमों के लिए सर्वाधिक स्मरण किया जाता है। हालांकि उनकी सरकार की अन्य उपलब्धियां भी थीं।

वाजपेयी जी का पहला कार्यकाल अल्प समय ही रहा। इसके उपरान्त राष्ट्रीय मोर्चा सरकार में एच. डी. देवगौड़ा और इंद्रकुमार गुजराल अपने छोटे शासनकाल में चीन के साथ विश्वास बढ़ाने हेतु कदम उठाए एवं बांग्लादेश के साथ 'गंगा जल समझौता' किया। सरकार सीटी बीटी पर हस्ताक्षर न करने के निर्णय पर कायम रही।

अटल बिहारी वाजपेयी एक योग्य नेता के रूप में उभरकर सामने आए जिन्होंने गठबंधन सरकार की जटिल राजनीति को कुशलतापूर्वक प्रबंधित एवं अनुशासित किया। अपना कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा करने के साथ वह राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के विश्वसनीय विकल्प के रूप में प्रकट हुई और वह सच्चे लोकतांत्रिक राज्य में आवश्यक था। इसने अर्थव्यवस्था को और अधिक उदार बनाया जिसने आगे भारत की प्रगति में सहायता की।

मनमोहन सिंह की सरकार नीतियों के दिशा–निर्देशन के लिए साझा न्यूनतम कार्यक्रम तैयार किया गया। मनमोहन सिंह की अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सुधारवादी प्रवृत्ति को संभवतः सोनिया गांधी द्वारा नियंत्रित किया गया था। एक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् का गठन किया गया था, जिसकी अध्यक्ष सोनिया गांधी थी। सरकार भारत–अमेरिका परमाणु सौदे को लेकर दृढ़ थी और चीन के मध्य भी संबंध बेहतर करने का प्रयास किया। 'मंगलयान मिशन' महत्वपूर्ण सफलता थी।

26 मई 2014 को नरेन्द्र मोदी सार्क देशों को आमंत्रित कर अपने मंत्रिमण्डल के कुछ सदस्यों के साथ प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। मोदी सरकार ने एक विकास परक एजेण्डा– 'सबका साथ, सबका विकास' अपनाकर अपनी इच्छा जाहिर कर दी। व्यापक समावेश, सामाजिक एवं वित्तीय और सरकार के कार्य में बेहतर जिम्मेदारी और पारदर्शिता की बात कही गई। सरकार ने कहा कि वह सहयोगी, संधवाद,

आर्थिक समृद्धि एवं विश्व में भारत की छवि में सुधार करने हेतु कार्य करेगी। इनके शासनकाल में डिजिटल युग की शुरुआत, अनेक कल्याणकारी योजनाएं, योग हेतु वैश्विक पहल, विदेश संबंध, आतंकवाद के विरुद्ध प्रहार, असंवैधानिक अनुच्छेद की समाप्ति जैसे साहसिक कार्य किये। मोदी जी के द्वितीय कार्यकाल के शुरुआती वर्षों में ही वैश्विक महामारी कोरोना के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा। लेकिन प्रधानमंत्री जी के कार्यकुशलता एवं दूरदर्शिता के प्रभाव से स्थिति को नियंत्रित किया गया, जिसकी विश्व स्तर पर प्रशंसा की गई। वर्तमान में पड़ोसी देशों से बढ़ते तनाव एवं महामारी के बढ़ते प्रभाव से निपटने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है एवं अर्थव्यवस्था की स्थिति में उसे जनता का सहयोग चाहिए।

–विजय कौशिक

लिपिक IASE बिलासपुर

Achieving Goals

The will to win, the desire to succeed, the urge to reach your full potential- these are the keys that will unlock the door to the personal excellence.

Goals determine the future of a man. They are literally the stepping stones to succeed in life. Look at the biographies of the great personalities; we will observe that most of them have attained success not just wakening overnight but through well planned devotion and dedication to their determined goals.

As we all have tremendous desire and aspiration in life. Everything will be futile or reduced to ashes if it's devoid of any fixed aim in life. So it is the foremost necessity that we should evaluate our goal from the very beginning. Then add up the positive efforts to reach towards the direction. Enthusiasm, hard work, devotion and self-determination are the essential ingredients in the pursuit of the success. If you possess these qualities, nobody can deter you from the path. It should beremembered that if failures and misfortunes come in our way, don 't complain for your bad luck. We should analyze our shortcoming and weakness at moments. Then next time with more energy and determination, we should combat all of them.

To conclude, we can say that set the right goals, at right time, in a right manner in your life. Remember, a rickshaw puller is also toiling hard to survive in this world nobody calls him "the successful man."Thus last but not the least, utilize your energy with devotion, dedication and hard work to achieve your goals.

-ARCHANA JADHAV
M.ED. IV SEM.

श्रद्धांजलि

स्व. मुकेश पटेल

व्याख्याता– शा.उ.मा.शा. बदरा (ठा)
वि. खं.– पथरिया, जिला– मुंगेली (छ.ग.)

जन्म– 01-09-1975 ❊ निर्वाण– 05-01-2020

माता धनमती के आँखों का तारा
इकलौता व पिता कुंभज प्रसाद का दुलारा
01.09.1975 को अवतरित धरा पर
नाम (मुकेश) भी मिला कुछ न्यारा

बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और मेधावी
मित्र मण्डली पर रहा व्यक्तित्व तुम्हारा हावी
देकर सबको, प्रेरणा और सहयोग
संवारे निज संग उनके भी सपने भावी

संगिनी बन 'विमला' आई जीवन में
दिव्येश रूपी पुष्प खिला इस उपवन में
छोटा परिवार सुखी परिवार को कर चरितार्थ
भर दी खुशियाँ माता–पिता के तन–मन में

मिले हम एम. एड. में ये है किस्मत की बात
बना परिवार जुड़े 49 अजनबियों के जज्बात
विदुषी प्राचार्य, ममतामई प्रभावी, कुशल प्राध्यापक
इनका मार्गदर्शन मिलता रहा हमें दिन और रात

स्थिर मन, गंभीर चिंतन और तुम्हारा कम बोलना
बोलने से पहले शब्दों के वजन को तौलना
गुरूओं के प्रति श्रद्धा, बड़ों का सम्मान
सहपाठियों के बीच सफलता के राज खोलना

पर काल को जाने क्यों न हुआ ये मंजूर
कि चल सकें हम साथ–साथ और बहुत दूर
चार जनवरी सन् बीस की वह गमगीन रात
छिन लिया हमसे हमारी कक्षा का गरूर

समय तो चलता रहा पर सताता रहा दुख विशेष
निःशब्द स्तब्ध गमगीन और बोझिल परिवेश
ढूंढ़ती आँखें तुमको हरदम, स्वीकारता नहीं ये मन
कि बाकी रहा अब, भाई मुकेश का केवल स्मृति शेष

एम. एड. परिवार की ओर से तुम्हें श्रद्धांजलि अशेष
श्रद्धांजलि अशेष...श्रद्धांजलि अशेष...।

नारायण प्रसाद पटेल
एम. एड. IV सेमेस्टर
IASE बिलासपुर